ISSN 2394-8485

 ੧ੳ सतिगुर प्रसादि ॥ 

*गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥*
*अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥*

मासिक

# गुरमति ज्ञान

ज्येष्ठ-आषाढ़, संवत् नानकशाही ५४८
वर्ष ९ अंक १० जून 2016

*संपादक* : सतविंदर सिंघ फूलपुर
*सहायक संपादक* : जगजीत सिंघ
गुरप्रीत सिंघ भोमा

**चंदा**

| | |
|---|---|
| सालाना (देश) | १० रुपये |
| आजीवन (देश) | १०० रुपये |
| सालाना (विदेश) | २५० रुपये |
| प्रति कापी | ३ रुपये |



*चंदा भेजने का पता*
**सचिव, धर्म प्रचार कमेटी**
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

## विषय-सूची

# गुरबाणी विचार

*बारह बरस बालपन बीते बीस बरस कछु तपु न कीओ ॥*
*तीस बरस कछु देव न पूजा फिरि पछुताना बिरधि भइओ ॥१॥*
*मेरी मेरी करते जनमु गइओ ॥ साइरु सोखि भुजं बलइओ ॥१॥ रहाउ ॥*
*सूके सरवरि पालि बंधावै लूणै खेति हथ वारि करै ॥*
*आइओ चोरु तुरंतह ले गइओ मेरी राखत मुगधु फिरै ॥२॥*
*चरन सीसु कर कंपन लागे नैनी नीरु असार बहै ॥*
*जिहवा बचनु सुधु नही निकसै तब रे धरम की आस करै ॥३॥*
*हरि जीउ क्रिपा करै लिव लावै लाहा हरि हरि नामु लीओ ॥*
*गुर परसादी हरि धनु पाइओ अंते चलदिआ नालि चलिओ ॥४॥*
*कहत कबीर सुनहु रे संतहु अनु धनु कछूऐ लै न गइओ ॥*
*आई तलब गोपाल राइ की माइआ मंदर छोडि चलिओ ॥५॥* *(पन्ना ४७९)*

आसा राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में भक्त कबीर जी मानव जीवन की आयु का ज़िक्र करते हुए फरमान कर रहे हैं कि मनुष्य के जीवन की आयु के आरंभिक बारह वर्ष बालपन (बचपन) में बीत गए। तत्पश्चात बीस वर्ष और आयु बढ़ी तब भी मनुष्य सांसारिक मोह-माया में ही ग्रस्त रहा, कोई बंदगी नहीं की। और तीस वर्ष आयु बिना नाम-सिमरन आदि के बीत गई। अब आयु (६० के ऊपर) के इस पड़ाव पर मनुष्य बूढ़ा हो गया है। वो बीते समय के व्यर्थ चले जाने पर पश्चाताप कर रहा है। मनुष्य की सारी आयु मैं-मेरी में बीत गई है। उसका समुद्र रूपी शरीर सूख गया है और उसका बाहुबल भी खत्म हो गया है।

भक्त कबीर जी शरीर को समुद्र/ताल रूपी बयान करते हुए फरमान कर रहे हैं कि मनुष्य अब शरीर रूपी ताल में मेढ़ बांध रहा है ताकि पानी बाहर न चला जाए अर्थात् शरीर से प्राण न निकल जाएं इसके लिए यत्न कर रहा है। जैसे फसल वाले खेत के चारों तरफ सुरक्षा के लिए बाड़ लगाई जाती है, इसी प्रकार मनुष्य अपने शरीर की सुरक्षा करने में लगा रहता है। इन सबके बावजूद जब यम रूपी चोर आता है तो वो प्राण रूपी फसल को ले जाता है।

भक्त कबीर जी बुजुर्ग अवस्था का वर्णन करते हुए फरमान कर रहे हैं कि इस अवस्था में पांव, सिर, हाथ कांपने लगते हैं; आंखों में से नीर बहने लगता है, जिहवा से कुछ बोला नहीं जाता। उस समय मनुष्य प्रभु-आराधना करने की आशा लगाए रहता है। जिस मनुष्य पर परमात्मा कृपा करते हैं, उसका ध्यान अपने में लगा लेते हैं। ऐसा मनुष्य ही परमात्मा का नाम जप सकता है; मानव जीवन का वास्तविक लाभ ले सकता है। गुरु-कृपा से ही प्रभु-नाम-धन प्राप्त होता है जो अंतिम समय मनुष्य के साथ जाता है। भक्त कबीर जी शबद की अंतिम पंक्तियों में फरमान कर रहे हैं कि प्रभु-नाम-धन के बिना अन्य कोई सांसारिक धन मनुष्य के साथ नहीं जाता। जब मनुष्य को परमात्मा के घर से बुलावा आता है तब मनुष्य सांसारिक धन, पदार्थ, घर सब कुछ यहीं छोड़ जाता है।

इस शबद में भक्त कबीर जी ने मनुष्य को जहां असली कमाई (प्रभु-नाम-धन की) करने की प्रेरणा दी है वहीं समझाया है कि मनुष्य का सारा जीवन ही प्रभु-नाम-धन की कमाई करने के लिए होता है। बचपन, जवानी, बुढ़ेपा सब अवस्थाओं में प्रभु-बंदगी करनी चाहिए।




# मैं बंदा बै खरीदु सचु साहिबु मेरा ॥

इतिहास में घटित हुई बहुत-सारी घटनाएं समय गुज़र जाने के बाद वो चमक नहीं रख पातीं जो सिक्ख इतिहास में गुरमति सिद्धांतों की तर्ज़मानी में से उत्पन्न हुई घटनाएं बरक़रार रखती हैं। अकाल पुरख के मिशन को साकार करने के लिए गुरु इस धरती को निवाजता है और इस दैवी मिशन की पूर्ति हेतु गुरु का आशीर्वाद महान गुरसिक्ख योद्धाओं को शहीदियां देने के लिए अथाह शक्ति, टेक तथा साहस बख़्शिश करता है। सिक्ख इतिहास की दास्तां में जून का महीना शूरवीर योद्धाओं द्वारा अन्याय, अत्याचार तथा ज़ब्र-ज़ुल्म के विरुद्ध न्याय, मानवीय हकों, कौमी मांगों तथा सच-धर्म की स्थापित के लिए जूझते हुए दी गई कुर्बानियों को अपने भीतर समेटे बैठा है, जिसको रहती दुनिया तक याद किया जाता रहेगा। अत्यंत गर्मी के इस महीने में शहीदों के सिरताज पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने तपती गर्म तवी पर बैठ, गर्म रेत शीश पर डलवा, खौलते पानी की देग में बैठ शांतमयी शहीदी प्राप्त कर मानवता के सामने अत्याचारी ज़ालिम हकूमत का परदा फाश किया। श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के बाद जुल्म, अन्याय के विरुद्ध भक्ति में से उपजी शक्ति के प्रयोग की जुल्म के विरुद्ध बेअंत जंगों, मोर्चों, साकों घल्लूघारों की लंबी दास्तां शुरू होती है। जून महीने में असंख्य सिंघ-सिंघनियों, बच्चों, बुज़ुर्गों की शहादत सिक्ख इतिहास के रक्त-रंजित पृष्ठों में समोई हुई है।

जून, १७१६ तथा जून, १९८४ के शहीद नायकों की बात करें तो इनमें सिर्फ समय, स्थान तथा शख़्सियत बदली है, शहादत की मंशा, शहादत का जज़्बा तथा दोनों के पीछे कलगीधर पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के खंडे-बाटे के अमृत की शक्ति एक ही रही है।

ज़ालिम हकूमत द्वारा लताड़े जा रहे मज़लूमों को उनका हक दिलाने एवं न्यायकारी शासन स्थापित करने के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा बाबा बंदा सिंघ बहादुर का चयन उनकी दिव्य दृष्टि ही थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कृपा-दृष्टि करते हुए बाबा जी को खंडे-बाटे की पाहुल छका उनमें जो रूहानी परिवर्तन लाए ऐसा परिवर्तन नाम-रूपी अमृत के हृदय में बस जाने पर ही आता है :

*भए क्रिपाल दइआल गोबिंदा अंम्रित रिदै सिंचाई ॥*
*नव निधि रिधि सिधि हरि लागि रही जन पाई ॥* *(पन्ना ६७९)*

यह कलगीधर पिता के आशीर्वाद की रूहानी शक्ति ही थी कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने खालसायी राज्य स्थापित कर *'हम राखत पातशाही दावा'* के शब्दों को सच कर दिखाया तथा दुनिया के इतिहास में पहली बार भारत में ज़मींदारी प्रथा को खत्म कर किसानों को उनकी ज़मीनें सौंपी गईं। इस तरह बाबा बंदा सिंघ बहादुर का यह लोग हितैषी तथा न्यायकारी प्रशासन में लोकतंत्र का आगाज़ था।

समय बीत जाने के साथ समय की हकूमतों द्वारा खालसा पंथ की कुर्बानियों को भुला दिया गया। खालसा पंथ की जायज़ मांगों को भी ठुकराया गया। कौमी हकों के लिए सिंघ शूरवीरों को पुनः संघर्ष करके शहादतें प्राप्त करनी पड़ीं।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बारे में बात करें तो साधारण बुद्धि पढ़-सुनकर आश्चर्यचकित हो जाती है कि वो कौन-सी शक्ति थी, कौन-सा जज़्बा था कि आंखों के सामने चार वर्ष के बच्चे के टुकड़े-टुकड़े कर उसका तड़पता हुआ दिल बाबा जी के मुंह में ठूंसा जाए और वो इंसान अडोल बैठा रहे?

गर्म सलाखों से आंखें भींद दी जाएं परंतु अडोलता भंग न हो? नाम-रंग में रंगी इस रूह के सिदक को गुरबाणी की रौशनी में ही समझा जा सकता है। मन से पैदा हुई ममता पुत्र को कत्ल होता देखकर डोल सकती है किंतु बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने तो शबद की कमाई द्वारा *'हउमै ममता शबदि जलाए'* वाली अवस्था प्राप्त कर ली थी। तभी तो वो अपनी आंखों के सामने पुत्र कत्ल होता देख परमात्मा की रज़ा जानकर सहन कर गए। जल्लाद समझ रहा था कि बच्चे की बोटियां करके उसकी आंतों का हार बाबा बंदा सिंघ बहादुर के गले में डालने से शायद वो डोल जाएंगे। उसको क्या मालूम था कि बाबा जी तो अपनी सुरति को शबद में लीन कर पहले ही निर्भयता का आभूषण गले में पहने हुए हैं :

*सबदु सुरति लिव लीणु होइ अनभउ अघड़ घड़ाए गहणा।* *(वार १८:२२)*

बाबा बंदा सिंघ बहादुर वो रूह थी जो प्रभु-मिलाप के लिए *"तनु मनु काटि काटि सभु अरपी"* की अर्ज़ करती है। जल्लाद द्वारा गर्म सलाखों से आंखें निकालना साधारण जन के लिए तो बड़ी दुखदाई बात है, मगर बाबा जी तो उस मुकाम पर पहुंचे हुए थे जहां प्रभु-मिलाप के लिए *"अखी काढि धरी चरणा तलि"* की अर्ज़ की जाती है। कुछ समय बाद ही तो सदैवकालीन प्रभु-मिलन की घड़ी आने वाली थीं। अगर पिता की गोद में बैठाकर पुत्र को बोटी-बोटी किया जा रहा था तो कुछ समय बाद दोनों पिता-पुत्र ने गुरु-पिता की गोद में जाकर विराजमान होना था। ज़ालिमों को गुरु तथा सिक्ख की प्रीति की कद्र नहीं थी। वे अनजान लोग कह रहे थे कि इस्लाम कबूल कर लो तो जान बख़्श दी जाएगी। परंतु 'शूरवीर बचन के बली' बाबा बंदा सिंघ बहादुर के अंदर तो शबद चल रहा था :

*मैं बंदा बै खरीदु सचु साहिबु मेरा ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा सभु किछु है तेरा ॥१॥*
*माण निमाणे तूं धणी तेरा भरवासा ॥ बिनु साचे अन टेक है सो जाणहु काचा ॥* *(पन्ना ३९६)*

ज़ालिम प्रभु-चरणों में लीन सुरति को तन की यातनाओं द्वारा डराने की असफल कोशिश कर रहा था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर गुरबाणी में सुरति जोड़कर उच्चारण कर रहे थे :

*मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ ॥ चरन कमल चितु रहिओ समाइ ॥* *(पन्ना ११६२)*

कर्म-वीरता तथा धर्म-वीरता में निपुण बाबा बंदा सिंघ बहादुर की आध्यात्मिक अवस्था तो *"तिथै जोध महाबल सूर ॥"* वाले मंडलों तक पहुंची हुई थी। परमात्मा का नाम उनके हृदय में समाया होने के कारण वे *"ना ओहि मरहि न ठागै जाहि ॥"* वाले मुकाम पर पहुंच कर मृत्यु के भय को खत्म कर चुके थे। इसलिएए वे बेखौफ़ होकर अपने के मिशन *"जो सूरा तिस ही होइ मरणा ॥"* को प्रभु-रज़ा में रहते हुए साकार कर गए।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर गुरु जी के हुक्म से नांदेड़ की धरती से पंजाब की ओर आए। गुरु के हुक्म में रहकर जुल्म का खातिमा किया तथा प्रभु-हुक्म में ही सिदक, सब्र तथा शुक्राने में रहकर शहादत प्राप्त कर गुरसिक्खी कमा गए :

*--हुकमी बंदा होइ कै खसमै दा भाणा तिसु भावै। . .*
*गुरु सिखी गुरुसिखु कमावै ॥* *(वार २८:१६)*

बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा उनके साथी शहीद सिंघों का ३०० वर्षीय शहीदी दिवस मनाते हुए यह प्रण लेने की आवश्यकता है कि प्रत्येक नानक-नाम-लेवा सिक्ख श्री अकाल तख़्त साहिब की छत्र-छाया तले श्री गुरु ग्रंथ साहिब की अगुआई में एकजुट होकर कौमी जज़्बे का सबूत दे। एकजुट होकर हम खालसा पंथ के दरपेश अंदरूनी तथा बाहरी चुनौतियों का सामना करने के समर्थ होंगे तभी खालसा पंथ की चढ़दी कला होगी। यही हमारी शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।



# पंचम पातशाह का मानवता-प्रेम

-डॉ. राजेंद्र सिंह 'साहिल'*

पंचम पातशाह साहिब श्री गुरु अरजन देव जी के विराट व्यक्तित्व के अनेक पक्ष सम्मुख आकर मनुष्य को इस महान् विभूति के सामने नत्मस्तक होने के लिए विवश करते हैं। गुरु जी महान् आध्यात्मिक चिंतक, उत्कृष्ट बाणी-कार, श्रेष्ठ संगठनकर्त्ता और मानवतावाद के उद्भट पक्षधर थे। गुरु जी ने अपने जीवन-काल में जो अद्वितीय कार्य सम्पन्न किए वे रहती दुनिया तक मानवता का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

*पंचम पातशाह की जन-सेवा :* श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना, अमृत सरोवर के मध्य श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना और मानवीय अधिकारों की रक्षा हेतु दिया आत्म-बलिदान गुरु जी के बेमिसाल व्यक्तित्व की विशिष्ट झांकियां हैं। यहीं नहीं, गुरु साहिब के व्यक्तित्व का एक पहलू ऐसा भी है जिसकी चर्चा अपेक्षाकृत कम होती है, वो है गुरु जी की 'जन-सेवा'।

गुरु जी के हृदय में इतनी नम्रता, दया और संवेदना विद्यमान थी कि आप दुखी और पीड़ित मनुष्यों को देखकर तुरंत द्रवित हो जाते और यथासंभव तरीके से उनकी सेवा और सहायता करके उनके कष्ट दूर करने के प्रयासों में जुट जाते।

*श्री तरन तारन साहिब की स्थापना :* जब श्री गुरु अरजन देव जी ने एक नया नगर बसाने की योजना बनाई तो सिक्खों ने सलाह दी कि श्री अमृतसर साहिब के दक्षिण में दिल्ली-लाहौर शाह राह पर गांव पलासौर के निकट एक ढाब है, आप उसके निकट नया नगर बसायें। गुरु साहिब ने गांव पलासौर, मुरादपुरा, खानेवाल और ठठ्ठी खारा के मध्य स्थित इस 'ढाब' पर नया नगर स्थापित करने का निर्णय लिया। १७ वैसाख, संवत् १६४७ वि. मुताबिक सन् १५९० ई में गुरु जी ने इस ढाब पर सरोवर खुदवाना आरंभ किया जो सन् १५९६ ई में सम्पूर्ण हुआ। सरोवर एवं नगर 'श्री तरनतारन' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। १५९६ ई में ही श्री दरबार साहिब की नींव रखी गई जो सरोवर के पूर्वी किनारे पर सुशोभित है।

*मुरादपुरा के चौधरी का कुष्ठ-निवारण :* श्री गुरु अरजन देव जी अपने दिन का अधिकांश समय कुष्ठ रोगियों की सेवा में बिताते। गुरु जी सरोवर के निकट विराजते और अपने हाथों से कोढ़ियों की मरहम-पट्टी, दवा-दारू और देखभाल करते।

एक बार गुरु जी समीपवर्ती गांव मुरादपुरा गये तो आपको पता चला कि गांव का चौधरी कुष्ठ रोग से ग्रस्त है और उसे उसके संबंधी ब्यास दरिया में ज़िंदा प्रवाहित करने के लिए ले जा रहे हैं। गुरु जी ने उन्हें ऐसा करने से रोका और चौधरी को श्री तरनतारन साहिब के पवित्र सरोवर के जल से स्नान करवाया और सतत् सेवा करके रोग-मुक्त कर दिया।

*कोहड़गढ़ का निर्माण :* इसके बाद तो मुरादपुरा की जूह में एक कुष्ठ रोगी आश्रम ही स्थापित हो गया। अनेक कुष्ठ रोगी यहां आते और पंचम पातशाह की सेवा रूपी कृपा से स्वस्थ होकर लौट जाते। कालांतर में यह स्थान 'कोहड़गढ़' के नाम से विख्यात हो गया। लंबे समय तक पंचम पातशाह द्वारा स्थापित यह शिफ़ाखाना रोगियों को सेवा में जुटा रहा।

महाराजा रणजीत सिंह के जीवन-काल में

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१

इस शिफ़ाखाना के नाम एक जागीर लगवा दी गई, जिससे यहां का खर्चा-गुज़ारा चल सके। १८४९ ई में अंग्रेजों का राज्य हो जाने के बाद यह कुष्ठ रोगी आश्रम ईसाई मिशनरियों के पास चला गया। यह अब भी ईसाई मिशनरियों के कब्ज़े में है। अब यहां एक अस्पताल बना हुआ है जिसे कोढ़-हाता कहा जाता है।

इस प्रकार पंचम पातशाह द्वारा आरंभ की गई जन-सेवा की परंपरा आज भी श्री तरनतारन साहिब में कायम है।

वैसे तो महापुरुषों का सारा जीवन, उनका एक-एक कार्य समाज पर बहुत दूरगामी और स्थायी प्रभाव डालता है परंतु उनके कुछ सुकृत्य ऐसे भी होते हैं जो समाज की व्यवस्था और समाज की चेतना को ही परिवर्तित करके रख देते हैं। गुरु-परंपरा के पंचम गुरु साहिब श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन भी ऐसा ही है जो न सिर्फ समाज के सम्मुख उच्च आदर्श की स्थापना करता है वरन् मानवीय समानता और मानवीय प्रेम के प्रति विशेष जागरूकता भी उत्पन्न करता है।

पंचम पातशाह का सारा जीवन ही अपने आप में एक मिसाल है। उनके जीवन के दो कार्य ऐसे हैं, जिन्होंने समाज की गति को ही बदलकर रख दिया। गुरु जी का पहला अति श्रेष्ठ कार्य है अमृत सरोवर के मध्य श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना। गुरु जी ने श्री हरिमंदर साहिब के रूप में एक ऐसे आध्यात्मिक केंद्र की स्थापना की जहां समाज के किसी भी वर्ग, वर्ण, श्रेणी के स्त्री-पुरुष निर्भय होकर आ सकते हैं और अकाल पुरख की उपासना में हिस्सा ले सकते हैं। श्री हरिमंदर साहिब के चार दिशाओं में चार द्वार रखने का अर्थ भी यही है कि यहां चारों दिशाओं से, चारों वर्णों के लोग आराधना हेतु आ सकते हैं। यहां कोई भेदभाव नहीं है। पंचम पातशाह ने श्री हरिमंदर साहिब की नींव मुस्लिम सूफी फकीर साईं मीआं मीर जी से रखवाकर धर्म-निरपेक्षता की एक और अद्‌भुत मिसाल कायम की।

गुरु जी का दूसरा अति महत्त्वपूर्ण कार्य है-- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का संपादन। पंचम पातशाह ने पूर्व गुरु साहिबान की बाणी के साथ-साथ भारत के भिन्न-भिन्न इलाकों के १५ भक्त साहिबान, ११ भट्ट साहिबान और गुरु-घर के निकटवर्ती चार गुरसिक्खों की बाणी को एकत्र किया और भाई गुरदास जी से लिखवा कर एक अभूतपूर्व ग्रंथ की रचना की। इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पहला संस्करण सन् १६०४ ई में सम्पूर्ण हुआ, जिसे श्री हरिमंदर साहिब में सुशोभित किया गया। यहां ज्ञातव्य है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का दूसरा संस्करण दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सन् १७०६ में भाई मनी सिंघ जी से लिखवाया था, जिसमें नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी शामिल की गई।

इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ६ गुरु साहिबान-- श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी एवं श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी; १५ भक्त साहिबान-- भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त शेख फरीद जी, भक्त नामदेव जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त धंना जी, भक्त भीखण जी, भक्त सैण जी, भक्त पीपा जी, भक्त जैदेव जी, भक्त सूरदास जी, भक्त रामानंद जी, भक्त सधना जी, भक्त बेणी जी और भक्त परमानंद जी; ११ भट्ट साहिबान-- भट्ट कल्हसार जी, भट्ट जालप जी, भट्ट कीरत जी, भट्ट भिखा जी, भट्ट सल्ह जी, भट्ट भल्ह जी, भट्ट नल्ह जी, भट्ट गयंद जी, भट्ट मथरा जी, भट्ट बल्ह जी, भट्ट हरिबंस जी और गुरु-घर के निकटवर्ती चार गुरसिक्खों-- बाबा सुंदर जी, भाई सत्ता जी, भाई बलवंड जी और भाई मरदाना जी की

बाणी शामिल है।

आध्यात्मिक बाणियों का यह विशाल संग्रह भारत के समस्त क्षेत्रों एवं भाषाओं का प्रतिनिधित्व करता है। वास्तव में श्री गुरु ग्रंथ साहिब एक बहुभाषी ग्रंथ है जो यह साबित करता है कि इस के संपादक पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी अनेक भाषाओं के विद्वान् थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की भाषायी विलक्षणता पर दृष्टि डाली जाये तो पायेंगे कि गुरु साहिबान ने पूर्वी पंजाबी, लहिंदी पंजाबी, अरबी-फारसी मिश्रित पंजाबी, सधुक्कड़ी भाषा एवं सहसक्रिती भाषा का प्रयोग किया है, वहीं भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त सधना जी, भक्त रामानंद जी, भक्त सैण जी, भक्त सूरदास जी, भक्त परमानंद जी, भक्त भीखण जी और भक्त बेणी जी ने सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब और भट्ट साहिबान की भाषा ब्रज है। भक्त नामदेव जी, भक्त त्रिलोचन जी की भाषा मराठी, भक्त पीपा जी एवं भक्त धंना जी की भाषा राजस्थानी तथा भक्त जैदेव जी की भाषा संस्कृत है। पंचम पातशाह निश्चित रूप से इन सभी भाषाओं के विद्वान रहे होंगे।

पंचम पातशाह की अपनी बाणी भी उन्हें बहुभाषी विद्वान् साबित करती है। आकार पक्ष से गुरु जी की सबसे अधिक बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है।

गुरु जी की मातृ-भाषा पंजाबी थी, इसलिए आपकी बाणी का काफी बड़ा भाग पंजाबी में रचा गया है :

*संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥*
*धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंम्रित जलु छाइआ राम ॥* (पन्ना ७८३)

गुरु जी की बाणी पर अरबी-फारसी का भी गहरा प्रभाव है :

*रंग तुंग गरीब मसत सभु लोकु सिधासी ॥*
*काजी सेख मसाइका सभे उठि जासी ॥*
*पीर पैकाबर अउलीए को थिरु न रहासी ॥*
*रोजा बाग निवाज कतेब विणु बुझे सभ जासी ॥* (पन्ना ११००)

पंचम पातशाह के समय में पंजाब में लहिंदी और हिंदी प्रदेशों में ब्रज काव्य भाषा के रूप में प्रचलित थी। गुरु जी दोनों भाषाओं में बाणी उच्चारण करने में सिद्ध-हस्त थे :

*लहिंदी : जे तू मित्रु असाडड़ा हिक भोरी ना वेछोड़ि ॥*
*जीउ महिंजा तउ मोहिआ कदि पसी जानी तोहि ॥* (पन्ना १०९४)

*ब्रज : अंम्रिता प्रिअ बचन तुहारे ॥*
*अति सुंदर मनमोहन पिआरे सभहू मधि निरारे ॥१॥ रहाउ ॥*
*राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥* (पन्ना ५३४)

इसी प्रकार श्री गुरु अरजन देव जी ने एक अन्य भाषा 'सहसक्रिती' का प्रयोग भी किया है :

*सुभ बचन रमणं गवणं साध संगेण उधरणह ॥*
*संसार सागरं नानक पुनरपि जनम न लभ्यते ॥* (पन्ना १३६१)

इस प्रकार पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी मध्य काल में उत्तर-मध्य भारत में प्रचलित समस्त भाषाओं के उत्कृष्ट विद्वान साबित होते हैं।

वास्तव में पंचम पातशाह ने 'भाषा' को मानव-मानव के बीच की दीवार बनने ही नहीं दिया। उन्होंने मनुष्य को भाषायी संकीर्णता में से बाहर निकालकर मानवीय प्रेम के उच्च धरातल पर स्थापित किया। आज जो भाषा के आधार पर मानव-मानव में भेदभाव-विभाजन की बात करते हैं उन्हें सद्‌बुद्धि प्राप्त करने हेतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण में जाना चाहिए और पंचम पातशाह के बहुभाषाई व्यक्तित्व से सीख लेनी चाहिए।



# श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब

*-स. गुरदीप सिंघ**

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की शान दुनिया के बादशाहों से कहीं अधिक थी। भाई गुरदास जी ने आपको दीन-दुनी का पातशाह, पातशाहों के भी पातशाह कहकर महानता प्रदान की है :

*दसतगीर हुइ पंज पीर हरि गुरु हरि गोबिंदु अतोला।*
*दीन दुनी दा पातिसाहु पातिसाहां पातिसाहु अडोला।*
*छिअ दरसणु छिअ पीढ़ीआं इकसु दरसणु अंदरि गोला।. . .*
*अंतरजामी बाला भोला ॥ (वार ३९:३)*

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की कथा अकथनीय है। यह अक्षरों के दायरे में नहीं आ सकती। यह अपरंपर है, बेअंत है :

*पंजि पिआले पंजि पीर छठमु पीरु बैठा गुरु भारी।*
*अरजन काइआ पलटि कै मूरति हरिगोबिंद सवारी।*
*चली पीड़ी सोढीआ रूपु दिखावणि वारो वारी।*
*दलि भंजन गुरु सूरमा वड जोधा बहु परउपकारी ॥*
*(वार १:४८)*

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म श्री गुरु अरजन देव जी के गृह में माता गंगा जी की पावन कोख से २१ आषाढ़, संवत् १६५२ तद्नुसार १९ जून, १५९५ ई को ज़िला श्री अमृतसर के गांव वडाली में हुआ। इसी कारण इस गांव को अब 'गुरु की वडाली' कहा जाता है। आप जी के पांच सुपुत्र-- बाबा गुरदित्ता जी, बाबा सूरज मल जी, बाबा अणी राय जी, बाबा अटल राय जी, श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब थे तथा एक सुपुत्री-- बीबी वीरो जी थी। श्री गुरु अरजन देव जी चाहते थे कि लोग अत्याचार के सामने झुकने वाला अपना स्वभाव बदल लें, इसलिए उन्होंने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ शस्त्र विद्या का प्रशिक्षण भाई गुरदास जी तथा बाबा बुड्ढा जी के नेतृत्व में दिया। बाबा बुड्ढा जी ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को शस्त्र-विद्या में निपुण कर दिया।

श्री गुरु अरजन देव जी ने लाहौर जाने के समय संगत में गुरिआई का उत्तरदायित्व श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को सौंप दिया था। उस समय श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की आयु मात्र ११ वर्ष थी। उन्होंने दो कृपाणें धारण की। एक मीरी (सांसारिक प्रभुता) और दूसरी पीरी (आध्यात्मिक प्रभुता) की। इसका वर्णन ढाडी अब्दुल्ला ने इस प्रकार किया है :

*दो तलवारीं बद्धीआं*
*इक मीरी दी इक पीरी दी।*
*इक अज़मत दी इक राज दी,*
*इक राखी करे वजीर दी।*

गुरु-घर में आध्यात्मिक बल एवं राजनीतिक बल इकट्ठे ही कार्य करेंगे। संत के साथ-साथ सिपाही वाले गुण भी होने चाहिए सिक्खों में। गुरु साहिब ने फरमाया कि अब सिक्ख शस्त्र भी पहनेंगे। सिमरन के साथ-साथ शस्त्र-अभ्यास भी होगा। आगे से धर्म एवं राजनीति एक साथ

***३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; फोन : ९८८८१२६६९०*

चलेंगे, लेकिन राजनीति धर्म के अधीन होकर चलेगी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब शस्त्र पहनकर, शीश पर कलगी सजाकर गुरगद्दी पर बैठते थे। सिक्खों को सिमरन के साथ-साथ शारीरिक शक्ति उत्पन्न करने की भी प्रेरणा दी जाती।

श्री गुरु अरजन देव जी के बारे में ब-सयासत व बा-यासा-रसानंद का हुक्म जारी करते समय जहांगीर ने बख़्शी फरीद (मुरतजा ख़ान) को यह आदेश दिया कि वो सतिगुरु जी के परिवार के ऊपर कड़ी दृष्टि रखे। इसी हुक्म और नीति के अधीन श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को ग्वालियर के किले में कैद करके रखा गया था। जब गुरु जी को रिहा करने का समय आया तो गुरु जी ने कैद में साथ रह रहे ५२ बंदी राजाओं को भी रिहा करवाया। इस प्रकार गुरु जी 'बंदी छोड़ दाता' कहलाए।

भक्ति के स्रोत श्री हरिमंदर साहिब की दर्शनी ड्योढ़ी के सामने शक्ति के स्रोत श्री अकाल तख़्त साहिब का निर्माण करवाया गया। भले ही श्री हरिमंदर साहिब और श्री अकाल तख़्त साहिब देखने में एक नहीं मगर मीरी-पीरी के सिद्धांत के अनुसार दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। वर्तमान समय में श्री अकाल तख़्त साहिब के प्रांगण में सुशोभित दो निशान साहिब मीरी-पीरी सिद्धांत के सुचेत पहरेदार हैं। गुरु साहिब प्रात: काल एवं सांय काल दरबार लगाते जहां धार्मिक प्रवचनों के साथ-साथ वीर-रस भरपूर वारों का गायन भी होता।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने ५२ चुने हुए वीर सैनिक अपने पास रखे हुए थे जो सिक्खों को शस्त्र-विद्या सिखाते थे। एक मत के अनुसार गुरु जी के पास ८०० घोड़े, ३००० घुड़सवार और ६० तोपधारियों का दस्ता था। कीरतपुर साहिब की पहाड़ियां सैनिक सिखलाई के लिए अत्यंत उपयुक्त स्थान थीं। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने मुगल सेनाओं के साथ चार युद्ध-- श्री अमृतसर के निकट पिपली साहिब, श्री हरिगोबिंदपुर (ज़िला गुरदासपुर), गुरूसर महिराज (ज़िला बठिंडा) तथा करतारपुर (ज़िला जलंधर) में लड़े तथा चारों में विजय प्राप्त की। आपने किसी भी इलाके की एक इंच तक की जगह पर अपना कब्ज़ा नहीं किया। ये युद्ध धर्म की सलामती, आत्म-रक्षा, कायदे-कानून और न्याय के हित के लिए किए।

दबिसत-ए-मजाहब में लिखा है-- "उस (गुरु साहिब) पर कई बार भारी लश्कर चढ़कर आए पर वह अल्लाह की कृपा से हर समय कामयाब ही निकलता रहा।"

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने गुरिआई अपने पोते (बाबा गुरदित्ता जी के सुपुत्र) श्री (गुरु) हरिराय साहिब को सौंप दी। आप ६ चेत, संवत् १७०१ तद्नुसार ३ मार्च, १६४४ ई को कीरतपुर साहिब (ज़िला रोपड़) में ज्योति-जोत समा गए।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब आध्यात्मिक गुरु एवं योद्धा थे। गुरु साहिब जी ऐसी शख़्सियत थे जिन्होंने उस कठिन समय में कौम को हौसला देकर अपने पांव पर खड़ा किया, जब विरोधियों को पूर्ण भ्रम था कि सिक्ख कौम की हस्ती मिट जायेगी। गुरु साहिब के सुयोग्य नेतृत्व में सिक्ख कौम मात्र शक्तिशाली ही नहीं हुई, बल्कि उसने युद्धों में विजय भी प्राप्त की। गुरु जी आम लोगों के दिलों में से शासकों तथा उनकी सेनाओं का भय पूरी तरह से समाप्त करने में भी सफल हुए। आप जी के नेतृत्व ने सिक्ख इतिहास को नई दिशा दी। सिक्खों को यह बात समझ आ गई कि राज्य-शक्ति, सैन्य-शक्ति एवं धन-पदार्थों के अभिमानी लोग केवल शस्त्रबद्ध संघर्ष से ही सही मार्ग पर लाए जा सकते हैं। इस प्रकार संघर्ष की भावना सिक्ख जीवन-जाच का अभिन्न अंग बन गई।

# जन-चेतना के संदर्भ में भक्त कबीर जी की बाणी

-डॉ. परमजीत कौर*

परंपरागत रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों के प्रति जागरूक करने वाले, मध्यकालीन भक्ति लहर के प्रवर्त्तक, समाज सुधारक भक्त कबीर जी का जन्म बनारस (काशी) में हुआ था। प्रसिद्ध विद्वान् मैकालिफ़ के अनुसार आप जी का जन्म मई, सन् १३९८ ई. में तथा देहांत नवंबर, सन् १५१८ में हुआ। आयु के अंतिम पड़ाव पर भक्त जी मगहर जाकर बस गये थे। भक्त कबीर जी ने अपनी बाणी में स्वयं इसका उल्लेख किया है :

*सगल जनमु सिव पुरी गवाइआ ॥*
*मरती बार मगहरि उठि आइआ ॥२॥*
*बहुतु बरस तपु कीआ कासी ॥*
*मरनु भइआ मगहर की बासी ॥ (पन्ना ३२६)*

आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत आप जी की बाणी में सद्गुणों का बोध करवाते हुए नैतिक मूल्यों का प्रतिपादन ही नहीं किया गया बल्कि प्रेम तथा सद्भावना का संदेश देते हुए, सामाजिक जीवन की समस्याओं का समाधान करते हुए, कोरे कर्मकांड, खोखले रीति-रिवाज़, अंधविश्वास तथा वहम-भ्रम के जाल से मुक्त करवाने का यत्न भी किया गया है। आप जी के अनुसार सामाजिक सम्बंधों में धर्म तथा जाति का कोई महत्त्व नहीं है। सभी प्राणी परमात्मा का अंश हैं :

*कहु कबीर इहु राम की अंसु ॥*
*जस कागद पर मिटै न मंसु ॥ (पन्ना ८७१)*

यह सारा संसार परमात्मा के नूर से ही पैदा हुआ है :

*अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥*
*एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥१॥*
*लोगा भरमि न भूलहु भाई ॥*
*खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ स्रब ठांई ॥ (पन्ना १३४९)*

अपने मूल परमात्मा के साथ जुड़ना ही मनुष्य के जीवन का उद्देश्य है। भक्त कबीर जी समझा रहे हैं कि यह जन्म बार-बार प्राप्त नहीं होता :

*कबीर मानस जनमु दुलंभु है होइ न बारै बार ॥*
*जिउ बन फल पाके भुइ गिरहि बहुरि न लागहि डार ॥ (पन्ना १३६६)*

यदि मनुष्य अपना सारा जीवन खाने-पीने, विषयों का भोग करने तथा धन अर्जित करने में बिता देता है तो उसमें तथा पशु में कोई अंतर नहीं है :

*दीनु बिसारिओ रे दिवाने दीनु बिसारिओ रे ॥*
*पेटु भरिओ पसूआ जिउ सोइओ मनुखु जनमु है हारिओ ॥ (पन्ना ११०५)*

मानव शरीर को प्राप्त करके नाम-सिमरन करते हुए जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति तथा परमात्मा में लीन होने का यत्न करना चाहिए। भक्त कबीर जी का कथन है :

*गुर सेवा ते भगति कमाई ॥*
*तब इह मानस देही पाई ॥*
*इस देही कउ सिमरहि देव ॥*
*सो देही भजु हरि की सेव ॥१॥*
*भजहु गुोबिंद भूलि मत जाहु ॥*
*मानस जनम का एही लाहु ॥ . .*

**६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर-- १३५००१ (हरियाणा); फोन : ९८१२३-५८१८६*

*इही तेरा अउसरु इह तेरी बार ॥*
*घट भीतरि तू देखु बिचारि ॥ (पन्ना ११५९)*

सर्वव्यापक, समस्त जीवों के हृदय की भावनाओं को जानने वाला परमात्मा ही सब का आश्रय है। उसके बराबर कोई अन्य नहीं है। परमात्मा की ही आराधना करनी चाहिए। अन्य देवी-देवता, मढ़ी-मसाण आदि की पूजा करने से ज़िंदगी का समय व्यर्थ चला जाता है। भक्त कबीर जी समझा रहे हैं :

*कहतु कबीरु सुनहु नर नरवै परहु एक की सरना ॥*
*केवल नामु जपहु रे प्रानी तब ही निहचै तरना ॥ (पन्ना १३४९)*

जो हृदय में परमात्मा के प्रति डर, सत्कार, भरोसा रखकर सारे आश्रय त्याग कर परमात्मा का आश्रय लेता है, वह कठिन परिस्थितियों में भी स्थिर रहता है :

*तूं मेरो मेरु परबतु सुआमी ओट गही मै तेरी ॥*
*ना तुम डोलहु ना हम गिरते रखि लीनी हरि मेरी ॥ (पन्ना ९६९)*

परमात्मा का नाम-सिमरन करना ही सुखी जीवन का आधार है। नाम-सिमरन के बिना किसी का दुख दूर नहीं होता। मनुष्य जन्म लेता है और निरुद्देश्य मर जाता है :

*--कहि कबीर जीवन पद कारनि हरि की भगति करीजै ॥*
*एकु आधारु नामु नाराइन रसना रामु रवीजै ॥ (पन्ना ३३८)*

*--जउ पै रसना रामु न कहिबो ॥*
*उपजत बिनसत रोवत रहिबो ॥ (पन्ना ३२५)*

जो मनुष्य परमात्मा का सिमरन छोड़कर फोकट कर्मकांड के चक्कर में पड़े रहते हैं, वे जीवन के वास्तविक उद्देश्य को नहीं समझते। बाहरी वेश-भूषा का सहारा लेकर व्रत रखना, तीर्थ-स्नान, देव-पूजा, जंगल में निवास करना आदि आडंबरों के करने से मन की तृष्णा समाप्त नहीं होती और न ही कामादि पांच शत्रुओं को जीता जा सकता है, केवल अहंकार ही बढ़ता है। भक्त कबीर जी समझा रहे हैं :

*जेते जतन करत ते डूबे भव सागरु नही तारिओ रे ॥*
*करम धरम करते बहु संजम अहंबुधि मनु जारिओ रे ॥ (पन्ना ३३५)*

भक्त कबीर जी के अनुसार जीवन का सीधा-सरल मार्ग परमात्मा को सदैव याद रखना है :

*--बिपल बसत्र केते है पहिरे किआ बन मधे बासा ॥*
*कहा भइआ नर देवा धोखे किआ जलि बोरिओ गिआता ॥१॥*
*जीअरे जाहिगा मै जानां ॥*
*अबिगत समझु इआना ॥ (पन्ना ३३८)*

*--माथे तिलकु हथि माला बानां ॥*
*लोगन रामु खिलउना जानां ॥१॥*
*जउ हउ बउरा तउ राम तोरा ॥*
*लोगु मरमु कह जानै मोरा ॥१॥ रहाउ ॥*
*तोरउ न पाती पूजउ न देवा ॥*
*राम भगति बिनु निहफल सेवा ॥ (पन्ना ११५८)*

भक्त कबीर जी सुचेत कर रहे हैं कि जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा के बिना किसी अन्य का प्रेम है उसका जप-तप आदि सब व्यर्थ है :

*किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥*
*जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥१॥*
*रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥*
*चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ (पन्ना ३२४)*

मन को परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए माया के मोह, माया के स्वाद, सम्मान की चाह आदि का त्याग आवश्यक है। जब तक मन नाशवान शरीर के साथ एकरूप होकर रहता

है तब तक इसकी प्रीति माया से टूटकर प्रभु के साथ नहीं जुड़ सकती। भक्त कबीर जी का कथन है :

*-प्रीति बिना कैसे बधै सनेहु ॥*
*जब लगु रसु तब लगु नही नेहु ॥ (पन्ना ३२८)*
*-रे नर नाव चउड़ि कत बोड़ी ॥*
*हरि सिउ तोड़ि बिखिआ संगि जोड़ी ॥*
*(पन्ना ३२८)*

जैसे सोना आदि धातु आग में डालने से शुद्ध हो जाती है वैसे ही परमात्मा का भय मनुष्य की दुर्मति की मैल को काट देता है और मन निर्मल हो जाता है। मनुष्य अपने आप को परखता रहता है तथा मन को विकारों के प्रति दौड़ने से हटाने का यत्न करता है :

*-रिदै इखलासु निरखि ले मीरा ॥*
*आपु खोजि खोजि मिले कबीरा ॥ (पन्ना ११५८)*
*-सो बउरा जो आपु न पछानै ॥*
*आपु पछानै त एकै जानै ॥ (पन्ना ८५५)*

मनुष्य के आत्मिक जीवन में अहंकार (हउमै) का घना अंधकार है। इस अंधकार में आत्मिक जीवन का सही रास्ता नहीं समझा जा सकता। अहंकार का परमात्मा के नाम के साथ विरोध है। जब तक मनुष्य स्वयं को कर्त्ता समझता है, परमात्मा से अपने अलग अस्तित्व के भ्रम में है तब तक वह यह नहीं समझता कि उसका अपना कुछ भी नहीं है। उसके पास जो भी धन-पदार्थ, महल या सुख के साधन हैं वे सब परमात्मा की कृपा से प्राप्त हुए हैं। उसका शरीर, जिसका वह गर्व करता है केवल हड्डियों तथा मास का समूह है जो नाशवान है। भक्त कबीर जी व्यंग्य कर रहे हैं कि हे बेसमझ जीव! क्यों अकड़-अकड़ कर चलता है? तू हड्डियों, चमड़ी तथा विष्टा से भरा हुआ दुर्गंध से लिप्त जीव है :

*चलत कत टेढे टेढे टेढे ॥*
*असति चरम बिसटा के मूंदे दुरगंध ही के बेढे ॥*
*(पन्ना ११२४)*

इस वास्तविकता को समझे बिना अहंकार के अधीन होकर नाम जपने तथा भक्ति करने का कोई फल प्राप्त नहीं होता :

*जब लगु मेरी मेरी करै ॥*
*तब लगु काजु एकु नही सरै ॥ (पन्ना ११६१)*

जो मनुष्य मन, वचन तथा कर्म से दूसरों को अपने से छोटा तथा स्वयं को अहंकार के कारण महान समझते हैं उनका कभी कल्याण नहीं होता :

*आपस कउ दीरघु करि जानै अउरन कउ लग मात ॥*
*मनसा बाचा करमना मै देखे दोजक जात ॥*
*(पन्ना ११०५)*

भक्ति तभी फलदायक होती है जब जाति, कुल, वर्ग, धन-पदार्थ आदि का अहंकार छोड़कर की जाये। भक्त कबीर जी समझाते हैं कि जब तक इस हृदय रूपी वन में अहंकार रूपी शेर रहता है तब तक हृदय रूपी वन में फूल नहीं खिलते अर्थात् कोमल गुण नहीं पनपते। जब विनम्रता आ जाती है तब ही गुण रूपी फूल उगते हैं :

*जब लगु सिंघु रहै बन माहि ॥*
*तब लगु बनु फूलै ही नाहि ॥*
*जब ही सिआरु सिंघ कउ खाइ ॥*
*फूलि रही सगली बनराइ ॥ (पन्ना ११६१)*

मनुष्य यत्न करके शरीर का अहंकार तो छोड़ देता है परंतु अपने गुणों तथा विद्या आदि के अहंकार को छोड़ना उसके लिए कठिन हो जाता है। भक्त कबीर जी का कथन है :

*कबीर माइआ तजी त किआ भइआ जउ मानु तजिआ नही जाइ ॥*
*मान मुनी मुनिवर गले मानु सभै कउ खाइ ॥*
*(पन्ना १३७२)*

भक्त कबीर जी सुचेत कर रहे हैं कि कभी भी किसी बात का अहंकार नहीं करना चाहिए। क्या मालूम ज़िंदगी में किस समय क्या हो जाये :

*कबीर गरबु न कीजीऐ रंकु न हसीऐ कोइ ॥*
*अजहु सु नाउ समुंद्र महि किआ जानउ किआ होइ ॥* (पन्ना १३६६)

जब मनुष्य का अहंकार समाप्त हो जाता है तभी नाम-सिमरन किया जा सकता है :

*कबीर जा दिन हउ मूआ पाछै भइआ अनंदु ॥*
*मोहि मिलिओ प्रभु आपना संगी भजहि गुोबिंदु ॥* (पन्ना १३६४)

प्रभु-नाम को हृदय में बसाने के लिए पहले मन को खोजना पड़ता है। मन को दसों दिशाओं में दौड़ने से रोकना पड़ता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकार मन का आश्रय लेकर दौड़-भाग करते हैं। मन मंद कर्मों की ओर जल्दी दौड़ता है। मन की वृत्तियों को वश में करने का यत्न ही मनुष्य को बुरे कर्मों से हटाकर शुभ कर्मों की ओर प्रेरित करता है। यदि मन (हाथी) वश में हो जाये तो कामादि वैरी हार जाते हैं :

*थाके पंच दूत सभ तसकर आप आपणै भ्रमते ॥*
*थाका मनु कुंचर उरु थाका तेजु सूतु धरि रमते ॥* (पन्ना ४८०)

जैसे मस्त हाथी को महावत अपने अंकुश से वश में कर लेता है वैसे ही माया के मोह में मस्त हुए भटकते हुए मन को गुरु वश में कर लेता है। जब मन वश में हो जाता है तब मनुष्य पूर्ण आहलाद की अवस्था में टिककर सारे संसार में व्यापक प्रभु की बातें ही करता है :

*इहु मनु सकती इहु मनु सीउ ॥*
*इहु मनु पंच तत को जीउ ॥*
*इहु मनु ले जउ उनमनि रहै ॥*
*तउ तीनि लोक की बातै कहै ॥*

प्रभु की कृपा से जब मन वश में हो जाता है तो चंचलता समाप्त हो जाती है, मोह के तार टूट जाते हैं, तृष्णा मिट जाती है, अहंकार हावी नहीं होता, क्रोध अविवेकी नहीं बनाता, जीवन शांत तथा पवित्र बन जाता है। भक्त कबीर जी इस अवस्था को इस तरह बयान कर रहे हैं :

*अब मोहि नाचनो न आवै ॥*
*मेरा मनु मंदरीआ न बजावै ॥१॥ रहाउ ॥*
*कामु क्रोधु माइआ लै जारी त्रिसना गागरि फूटी ॥*
*काम चोलना भइआ है पुराना गइआ भरमु सभु छूटी ॥२॥*
*सरब भूत एकै करि जानिआ चूके बाद बिबादा ॥*
*कहि कबीर मै पूरा पाइआ भए राम परसादा ॥* (पन्ना ४८३)

मनुष्य जब तक नाम-रस का आस्वादन नहीं करता तब तक उसे अन्य रसों के स्वाद अच्छे लगते हैं। परमात्मा के नाम का आनंद अनुभव करने के बाद मन किसी अन्य स्वाद का रस नहीं लेता :

*-रारा रसु निरस करि जानिआ ॥*
*होइ निरस सु रसु पहिचानिआ ॥*
*इह रस छाडे उह रसु आवा ॥*
*उह रसु पीआ इह रसु नही भावा ॥* (पन्ना ३४२)

*-राम रसु पीआ रे ॥*
*जिह रस बिसरि गए रस अउर ॥* (पन्ना ३३७)

भक्त कबीर जी आत्मिक आनंद देने वाले रस को तैयार करने का ढंग बताते हुए कहते हैं कि नाम-रस को प्राप्त करने के लिए आत्मिक ज्ञान, ध्यान (प्रभु-चरणों में ध्यान लगाना), प्रभु का डर, माया के मोह को त्यागना तथा काम, क्रोध को जलाना आवश्यक है :

*गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि महूआ भउ भाठी मन धारा ॥*
*सुखमन नारी सहज समानी पीवै पीवनहारा ॥१॥*

*अउधू मेरा मनु मतवारा ॥*
*उनमद चढा मदन रसु चाखिआ त्रिभवन भइआ उजिआरा ॥१॥ रहाउ ॥*
*दुइ पुर जोरि रसाई भाठी पीउ महा रसु भारी ॥*
*कामु क्रोधु दुइ कीए जलेता छूटि गई संसारी ॥*
*(पन्ना ९६९)*

प्रभु-नाम-रस की तुलना में सारे रस फीके हैं :

*कहि कबीर सगले मद छूछे इहै महा रसु साचो रे ॥ (पन्ना ९६८)*

भक्त कबीर जी के अनुसार प्रभु-नाम-रस की प्राप्ति के मार्ग पर चलते हुए साकत का संग नहीं करना चाहिए। इससे मार्ग से भटकने का खतरा होता है, जबकि सतसंगत सहायक होती है। जैसे चंदन अपने समीप उगे हुए ढाक, पलाश जैसे वृक्षों को भी सुगंधित कर देता है वैसे ही जिन महापुरुषों में प्रभु-गुणों की सुगंध होती है वे साथ रहने वालों का भी उद्धार कर देते हैं :

*कबीर संगति करीऐे साध की अंति करै निरबाहु ॥*
*साकत संगु न कीजीऐ जा ते होइ बिनाहु ॥*
*(पन्ना १३६९)*

भक्त कबीर जी प्रभु-नाम जपने वाले के चित्त की अवस्था का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि हे प्रभु! तेरे नाम-अमृत की प्यास मिटती नहीं। तू जल का समुद्र है। मैं उस जल का मच्छ हूं। तू मेरा पिंजर है। मैं कमज़ोर-सा तोता हूं। तू मेरा गुरु है। मैं तेरा नया शिष्य हूं। यह मेरा मानव-जन्म तुझे मिलने का अंतिम अवसर है :

*माधउ जल की पिआस न जाइ ॥*
*जल महि अगनि उठी अधिकाइ ॥१॥ रहाउ ॥*
*तूं जलनिधि हउ जल का मीनु ॥*
*जल महि रहउ जलहि बिनु खीनु ॥१॥*
*तूं पिंजरु हउ सूअटा तोर ॥*
*जमु मंजारु कहा करै मोर ॥२॥*
*तूं तरवरु हउ पंखी आहि ॥*
*मंदभागी तेरो दरसनु नाहि ॥३॥*
*तूं सतिगुरु हउ नउतनु चेला ॥*
*कहि कबीर मिलु अंत की बेला ॥ (पन्ना ३२३)*

जब मनुष्य की पहचान प्रभु-मिलाप वाली अवस्था से हो जाती है तब उसके हृदय में कोमलता, संतोष तथा धैर्य पैदा हो जाता है; उसके अंदर परमात्मा की ज्योति का प्रकाश प्रकट हो जाता है। भक्त कबीर जी इस अवस्था का चित्रण कर रहे हैं :

*जानी जानी रे राजा राम की कहानी ॥*
*अंतरि जोति राम परगासा गुरमुखि बिरलै जानी ॥*
*(पन्ना ७००)*

जिसको प्रभु-नाम की प्राप्ति हो जाती है वह दुनिया की दृष्टि में गूंगा, बावरा तथा बहरा हो जाता है, पंगु हो जाता है। वह खुशामद के वचन नहीं बोलता, झूठ से परहेज़ करता है, किसी का मोहताज नहीं होता, कानों से निंदा नहीं सुनता, पैरों से गलत राह पर नहीं चलता, सांसारिक रस उसे आकर्षित नहीं करते, सांसारिक उन्नति की मंज़िलें उसे व्यर्थ लगती हैं। भक्त कबीर जी इस अवस्था को बयान कर रहे हैं :

*कबीर गूंगा हूआ बावरा बहरा हूआ कान ॥*
*पावहु ते पिंगुल भइआ मारिआ सतिगुर बान ॥*
*(पन्ना १३७४)*

संक्षेप में कहा जा सकता है कि सत्य के मार्ग पर चलने के लिए पुर्जा-पुर्जा कट कर मरने की प्रेरणा देने वाले भक्त कबीर जी की बाणी अज्ञानता की नींद में सोये हुए मानव-मन को जागृत करते हुए सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग की ओर अग्रसर करने में सक्षम है। भक्त कबीर जी ने सचेत

*(शेष पृष्ठ २२ पर)*

# सिक्ख-शहादत परंपरा के प्रसंग में बाबा बंदा सिंह बहादुर की शहादत

*-डॉ. गुलज़ार सिंह**

'शहादत' तथा 'शहीद' दोनों शब्द मूल रूप से अरबी भाषा के हैं तथा क्रमश: दोनों के कोश के अनुसार अर्थ 'गवाही' (साक्षी) तथा 'गवाही भरने वाला' हैं। आम तौर पर सच्चाई या धर्म के मार्ग पर चलते हुए अपना जीवन अर्पण करने वाले व्यक्ति को 'शहीद' कहा जाता है। शहीद अपनी कुर्बानी देकर शहादत (गवाही) को ऐतिहासिक परतों में प्रमाणिक रूप में सदैवकालीन कायम कर देता है। शहीद तथा शहादत दोनों शब्द पहली बार 'कुरान मजीद' में 'सूरत-अल-बकर' की आयत १३३ तथा 'सूरत-अल-निशा' की आयत ४२ में प्रयोग हुए हैं।

सिक्ख धर्म के प्रसंग में शहादत का रुतबा बहुत ही विलक्षण तथा उच्चतम पदवी के रूप में आया है। यहां यह शब्द उस अत्यंत सचिआर महापुरुष के लिए प्रयोग किया जाता है जो सच की खातिर सिर-धड़ की बाज़ी निर्भय होकर लगा दे एवं सच को दोनों जहानों में प्रत्यक्ष कर दे।[१] अपनी व्यापकता के कारण सिक्ख चिंतन में 'शहीद' शब्द सिक्ख के साथ इतना जुड़ गया है कि उसका विशेषण ही बन गया है। गुरु साहिबान ने सिक्ख को बदेह होकर जीवन जीने की शिक्षा दी है। इसी कारण सिक्ख का सिर उसका अपना सिर नहीं होता, बल्कि अपने गुरु को समर्पित होता है। सिक्ख जीता भी अकाल पुरख की रज़ा में है और मरता भी उसके हुक्म में है, इसलिए वह इसको मृत्यु नहीं कहता, 'अकाल चलाना' कहता है। सिक्खी में शहादत मानवीय हस्ती को प्रभु के समक्ष केंद्रित करने का नाम है, जिससे सिक्खी का रूहानी सफ़र अज़ीम साबित होता है।

श्री गुरु नानक देव जी ने अपने सिक्खों को पदार्थक तथा दुनियावी लोभ-लालच से निर्लेप होकर नाम-सिमरन की ईश्वरीय दात बख़्शी, जिसको सिक्ख अपने अमल में लाकर शरीर के बंधन से मुक्त हो जाता है। इससे सिक्ख पंथ में गुरु के प्रति समर्पित जीवन व रूहानी मर्दानगी आ गई। सिक्ख रूह में जाग कर बदेह हो गया। उसको यह रहस्य स्पष्ट हो गया कि जीवन न तो जन्म से आरंभ होता है और न ही मृत्यु से समाप्त होता है। यह तो अपनी निरंतरता में कायम रहता है तथा इस निरंतरता में शरीर एक वाहन है जो यहां से ही प्राप्त होना है और यहां ही रह जाना है। इसी कारण सिक्ख प्रभु-नाम अंत:करण में बसाकर प्रभु-हुक्म (भाणे) को प्रवान कर जीवन के खेड़े तथा हुल्लास का महा उत्सव तसव्वुर करता है। सिक्खी के इस रंग में रंगे व्यक्तित्व को बयान करते हुए सिक्ख चेतना के विद्वान प्रो. पूरन सिंह कहते हैं-- "सिक्ख की हस्ती बाणी से जुड़ी प्यार में रंगी, शक्तिशाली तथा नम्र, निर्भय, मृत्यु को मज़ाक करती, आलिंगन करती, मालिक के नाम पर से सदा नि:स्वार्थ जान कुर्बान कर देती, शमा के गिर्द परवाने की तरह जल उठती, नायकों की तरह जीती, चंद्र मंडल की तरह चमकती, मस्ती भरे हर समय में मिठास बांटती, जीवन के गमों से ऊपर उठी, सरबत्त का भला मांगती तथा निष्काम विचरण करती है, बिना उसके नाम

*ओसटी कालोनी (नज़दीक एम. पी कोठी), डाक: प्रताप नगर, नंगल डैम (रोपड़)-१४०१२५, फोन : ९८७२२-९१२९२

जपने के।"[२] सिक्ख ने शहादत का सबक श्री गुरु अरजन देव जी के जीवन के पावन सफ़र से सीखा है। गुरु साहिब ने शबद स्वरूप होकर इस ऐतिहासिक काल में विचरण किया। उनका जीवन शहादत से पहले भी धरातल बिलगाव में खड़े ज़मीनी रिश्ते का जीवन था तथा शहादत देकर उन्होंने यह पर्दा भी चाक कर दिया कि यह मिट्टी का पुतला नाश होकर सद-जीवित रूहानी जिस्म को स्वीकार करता है तथा यह कौतुक प्रभु-हुक्म में रहकर ही घटित हो सकता है। शहादत का यह नूरी जज़्बा सिदक, सब्र व शुक्र की रौशन परतें खोलता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने शहादत के इस पाठ की दुहराई कर फिर एक बार स्पष्ट कर दिया कि यह संसार *"जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥"* की तरह है। उनकी शहीदी इस बात की शहादत थी कि *"नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥"* यह शहीदी अपने हितों के लिए नहीं बल्कि दीनों की रक्षा हेतु थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों को खालसे का व्यक्तित्व देकर अविनाशी एहसास में जीने का ढंग सिखला दिया। इसी कारण खालसा मृत्यु से पार होकर बदेही जीवन जीता गुरु-हुक्म में मौत को मज़ाक करने लग पड़ा। नाम-बाणी से जरखेज़ हुए सिक्ख शहादत के नाम-प्याले गटागट पी जाते रहे। शहादत सिक्ख रूहानियत का अंग बन गई। गुरु साहिब के छोटी आयु के साहिबज़ादे रूहानियत के इस आनंद में मृत्यु की गर्माहट को भाणे की भावना से शीतल कर मृत्यु की परा तीव्रता को धैर्य के साथ जोड़ लेते हैं।

सिक्ख शहादत के इस प्रसंग में ही बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत को निहारा एवं विचारा जा सकता है। बदकिस्मती यह है कि सिक्ख इतिहासकारों ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर के साथ इंसाफ नहीं किया और उनके व्यक्तित्व को बिगाड़ कर पेश किया है। श्री सरूप दास भल्ला, भाई केसर सिंघ छिब्बर, भाई रतन सिंघ (भंगू), भाई संतोख सिंघ, ज्ञानी गिआन सिंघ तथा स. करम सिंघ हिस्टोरीअन आदि की रचनाओं में बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत को बयान करते हुए समकालीन स्रोतों की बजाए सुनी-सुनाई बातों को आधार बनाया गया है। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत को बयान करती अनेकों समकालीन गवाहियां हैं जो फारसी लिखितों में मिलती हैं, जैसे कि 'अख़बार-ए-दरबार-ए-मुअल्ला', मुहम्मद कासिम का 'इबरतनामा', मिर्ज़ा मुहम्मद हारिसी का 'इबरतनामा', हादी कामवर ख़ान का 'तज़किरात-उल-सलातीन चुगताईआं', खाफी खां की 'मुंतखाब-उल-लुबाब' तथा अन्य अनेकों। इन सभी स्रोतों का प्रयोग विलियम इरविन ने 'Later Mughles' में तथा डॉ. गंडा सिंघ ने पहले 'A Short Life Sketch of Banda Singh the Martyr' तथा फिर 'Life of Banda Singh Bahadur' में किया। तीसरी पुस्तक डॉ. जे. एस. (गरेवाल) तथा जनाब अरफ़ान हबीब की संपादित की 'Sikh History From Persian Sources' है। यहां इनको आधार बनाकर ही तो बाबा बंदा सिंघ बहादुर की बात कही गई है।

गुरदास नंगल के किले में ८ महीने निरंतर मुगल सेना का मुकाबला करते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादुर को ७ दिसंबर, १७१५ ई. को अन्य ७४० सिक्खों सहित गिरफ्तार कर लिया गया, जिनमें बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सुपत्नी व सुपुत्र बाबा अजै सिंघ भी थे। इस गिरफ्तारी का कारण यह नहीं था कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर मुगल सेना से मात खा गये थे बल्कि कारण तो कई दिनों से भूखे रहने के कारण बेहाल रहना था। मुगल सम्राट फर्रुख़्सियर अपने समय में बाबा बंदा सिंघ बहादुर का पकड़े जाना अपनी बड़ी प्राप्ति समझने का भ्रम पाल

रहा था। सबको कैद कर पहले लाहौर लाया गया जहां से अब्दुस्समद्द ख़ान ने लेकर दिल्ली पहुंचना था किंतु बादशाह के हुक्म के कारण कि पंजाब में गड़बड़ न हो जाए, इसलिए अब्दुस्समद्द ख़ान के पुत्र ज़करिया ख़ान तथा जरनैल अमीन ख़ान के पुत्र कमरूद्दीन को इनको दिल्ली लाने का आदेश हुआ। लाहौर से यह समूचा काफिला कड़ी मज़बूत मुगल सेना के घेरे में दिल्ली ले जाया गया। पहले सरहिंद में बेशुमार लोगों का इकट्ठ करके बताया गया कि यह वही बंदा सिंघ है, जिसने सरकार के बड़े-बड़े अहिलकारों को तबाह किया था। ये लोग चाहे बुरा बोल रहे थे किंतु सभी कैदी सिंघ अकाल पुरख के भाणे में बैठे बाणी का जाप कर रहे थे। २७ फरवरी, १७१६ ई को यह काफिला आगराबाद के बाहर वाले दरवाज़े पर पहुंचा।[३] यहां से अमीन ख़ान की अगुआई में बाबा बंदा सिंघ बहादुर के काफिले को आगे ले जाया गया।

सबसे आगे पिंजरे में बंद हाथी पर बाबा बंदा सिंघ बहादुर थे। पिंजरा हाथी के शरीर के साथ चारों तरफ से जंज़ीरों से बांधा हुआ था। पांवों में जंज़ीर के कड़े डालकर गर्दन के साथ बांधे हुए थे। दोनों हाथों में हथकड़ियां डालकर हाथ पिंजरे के साथ बांधे हुए थे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सुपत्नी दूसरे हाथी पर थी तथा उनका सुपुत्र बाबा अजै सिंघ उसकी गोद में था। इसके साथ दो अन्य स्त्रियां भी थीं। मुहम्मद अमीन ख़ान बाबा बंदा सिंघ बहादुर के हाथी से आगे था। इस हाथी के दोनों तरफ ज़करिया ख़ान तथा कमरूद्दीन अपने घोड़ों पर जा रहे थे। बाबा जी के मुख्य साथी (जत्थेदार) जो संख्या में २७ थे, पीछे ऊंटों पर अकेले-अकेले बिठाए हुए थे। उनका एक-एक हाथ उनकी अपनी गर्दन के साथ बांधा हुआ था। पांवों में बेड़ियां डालकर ऊंट के पेट के नीचे से घुमाकर दोनों पैरों को ऊंट के पेट के साथ बांधा हुआ था। दूसरे कैदी दो-दो करके इसी तरह एक-एक ऊंट पर बैठाए हुए थे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के अतिरिक्त सभी को भेड़ों की खाल पहनाई हुई थी। जुलूस के सबसे आगे एक नेजे पर मरी हुई बिल्ली टंगी हुई थी। यह इस बात का संकेत था कि गुरदास नंगल में सब कुछ खत्म कर दिया गया है। उसके पीछे नेजों पर सिंघों के सिर टंगे हुए थे। इस प्रकार २९ फरवरी, १७१६ ई को जुलूस की शक्ल में यह काफिला आगराबाद दरवाज़े से आगे भेजा गया। उस दिन सारे कार्यालयों में छुट्टी की गई तथा लोगों को हिदायत की गई थी कि सभी लोग इस जुलूस को देखें। मिर्ज़ा मुहम्मद हारिसी 'इबरतनामा' में लिखता है-- "मैं इस दिन तमाशा देखने के लिए नमक मंडी से लेकर किला मुबारक तक जुलूस के साथ गया था। शहर का शायद ही कोई आदमी होगा जो इन लानतियों (सिक्खों) का खातिमा देखने न आया हो। बाज़ारों, गलियों में ऐसी भीड़ पहले नहीं देखी गई थी। मुसलमान खुशी में फूले नहीं समा रहे थे। किंतु वे अभाग्यशाली सिक्ख, जो इस आखिरी दशा में पहुंचे, अपनी किस्मत पर राज़ी थे। उनके चेहरों पर उदासी व अधीनगी का कोई मामूली चिन्ह भी नज़र नहीं आ रहा था तथा सभी अपने गुरु की बाणी पढ़ रहे थे। अगर कोई तमाशबीन आदमी उनको ऊंची आवाज़ में बताता कि अब आपको कत्ल कर दिया जाएगा तो वे कहते-- कर दो कत्ल, हम मरने से नहीं डरते। अगर मरने से डरते होते तो आपके साथ हम लड़ाई क्यों करते? हम केवल भूख के कारण तंग आकर आपके हाथ आए हैं, नहीं तो हमारी बहादुरी के कारनामे आप देख ही चुके हो।"[४]

एक अन्य मुसलमान लिखारी सैयद मुहम्मद भी (जो उस समय हाज़िर था) अपनी लिखित 'तबसिरात-ए-नाज़िरीन' में लिखता है-- "मैंने

एक (सिक्ख) को इशारा करके पूछा कि आप कैदी होने के बावजूद भी घमंड दिखा रहे हो। उसने अपने एक हाथ से समझाने की कोशिश की जिसका भावार्थ यह था कि जो किस्मत में होता है वो होकर ही रहता है। मनुष्य को पूरी दिलेरी के साथ किस्मत के खेल को सहन करना चाहिए।"[५] मुहम्मद हादी कामवार ख़ान लिखता है-- "ये सारे कैदी बिना किसी उदासी या शर्मिंदगी के शांत-चित्त थे और हंस-हंसकर लोगों को जवाब दे रहे थे।"[६]

यह जुलूस लाल किले के मुख्य दरवाज़े के पास पहुंचा तो बादशाह ने किले के ऊपर खड़े होकर सभी कैदियों को देखा तथा हुक्म दिया कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर को उसके सामने पेश किया जाए तथा उसकी घरवाली व बच्चे को शाही हरम के इंचार्ज दरबार ख़ान की सुपुर्दगी में बादशाह की मां के पास भेज दिया जाए। अन्य सभी कैदियों को सरबराह ख़ान कोतवाल की सुपुर्दगी में कोतवाली में बंद कर दिया जाए। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को हाथी से उतारकर पिंजरे में बैठे को बादशाह के सामने पेश किया गया। बादशाह ने कहा, "मैं तुझे बहुत बहादुर सुना करता था। अब तू पकड़ा गया है। तू किस प्रकार के व्यवहार की उम्मीद करता है?" बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने उत्तर दिया, "जिस तरह का व्यवहार तू अपने साथ चाहता है।" इसके बाद बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा उसके २७ सरदारों को तिरपोलिया किले में मीर आतिश इब्राहीम-उद-दीन की सुपुर्दगी में बंद कर दिया गया।[७]

५ मार्च, १७१६ ई से ७४० कैदी सिंघ-सिंघनियों में से ६९४ कैदी सिंघों को शहीद करने का सिलसिला आरंभ हुआ। प्रतिदिन एक सौ सिंघों को शहीद किया जाता। शहीद करने वाले प्रत्येक सिक्ख को कहा जाता कि धर्म छोड़कर मुसलमान बन जाओ किंतु एक भी सिक्ख ने मुसलमान बनना स्वीकार नहीं किया। तिरपोलिया किले की तरफ कोतवाली के चबूतरे पर लकड़ी के पोरे पर सिक्ख को मुंह के बल लिटाया जाता और शहीद कर दिया जाता। मिर्ज़ा मुहम्मद हारिसी लिखता है-- "कत्ल शुरू करने के दूसरे दिन मैं यह तमाशा देखने गया था। जब मैं कोतवाली के चबूतरे पर पहुंचा, उस वक्त १०० सिक्खों को कत्ल करके काम खत्म कर लिया गया था। धड़ उस समय तक सूरज की गर्म धूप में खून तथा मिट्टी से सने हुए थे।"[८]

सिंघों की शहादत शुरू होने के पांचवें दिन अर्थात् १० मार्च को कोलकाता से ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी जोहन सरमन तथा एडवर्ड स्टीफनसन दिल्ली आए। इन्होंने सारी घटना आंखों देखी तथा फौरन एक चिट्ठी अपने उच्चाधिकारियों को कोलकाता भेजी, जिसकी फोटो कापी डॉ गंडा सिंघ ने अपनी पुस्तक की अंतिका में दी है। इसमें ज़िक्र है कि "१००-१०० सिक्ख हर रोज़ शहीद किए जाते थे। यह कोई कम चमत्कारी बात नहीं कि वे कितने सब्र-संतोष से यह दुख सहन करते थे। आज तक इनमें से एक भी सिक्ख ने अपना धर्म बदलकर इस्लाम धर्म कबूल नहीं किया।" मुंशी गुलाम हुसैन "सीअर-उल-मुताखरीन" में लिखता है-- "ये लोग कत्ल होने के वक्त दृढ़ता ही नहीं दिखाते थे बल्कि एक-दूसरे से पहले बारी लेने के लिए झगड़ पड़ते थे। जल्लाद को यह मुक्तिदाता कहते थे।"[९]

विलियम इरविन लिखता है-- "चाहे लेखक हिंदोस्तानी थे चाहे यूरोपीन, सभी हैरान कर देने वाले धैर्य तथा दृढ़ता की प्रशंसा करते थे।"[१०]

एक घटना का बयान बड़ा दिलचस्प है जो हाज़िर मुसलमान लेखक खाफी खां का है। वह 'मुंतख़ाब-उल-लुबाब' में लिखता है-- "जब सिक्ख कैदियों के कत्ल का सिलसिला चल रहा था तब एक दिन ऐसी घटना घटित हुई कि एक

नौजवान सिंघ की मां किसी न किसी तरह बादशाह से अपने पुत्र की रिहाई तथा जान-बख़्शी का हुक्म ले आई। जब वह हुक्म कोतवाल के पास पहुंचा तो उसने उस नौजवान को कहा-- "तू खुशकिस्मत है जो मृत्यु से बच गया। जा तुझे रिहा किया जाता है। सामने तेरी मां खड़ी है। वो तेरी रिहाई का हुक्म लाई है।" यह सुनकर नौजवान आग बबूला हो गया और कहने लगा-- "यह मेरी मां नहीं है। मैं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सिक्ख हूं। मेरे साथी गुरु-चरणों में जा बैठे हैं, मुझे भी जल्दी मारो ताकि मैं भी उनके साथ मिल जाऊं। मैं ज़िंदा नहीं रहना चाहता।"[११]

लगभग मार्च के अर्द्ध तक कैदी सिंघों को शहीद करने का काम समाप्त हो गया। फिर जेल अधिकारी बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा उनके मुख्य साथियों की ओर हुए। मार्च के अर्द्ध से जून के अर्द्ध तक इनको यातनाएं देते रहे। जब शरीर यातनाएं झेलने योग्य न रहे तो हकूमत ने इनको शहीद कर देने का फैसला कर लिया। ९ जून, १७१६ ई को बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा उनके सुपुत्र बाबा अजै सिंघ को सहित मुख्य साथियों को महरौली के जंगल में कुतुबुद्दीन बख़्तिआर काकी की मज़ार के पास लाया गया। अब बाबा बंदा सिंघ बहादुर पिंजरे में बंद नहीं थे, क्योंकि उनके हाथ-पांव बुरी तरह से तोड़-मरोड़ दिए गए थे। पहले मुख्य साथियों को एक-एक करके दरवाज़े के साथ उल्टा लटकाकर पीटा गया और फिर शहीद कर दिया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की गोदी में उनके सुपुत्र बाबा अजै सिंघ को बैठाया गया तथा हुक्म किया कि वे खुद ही उसको मार दें। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने कहा, अगर इसको मारना ही है तो तुम खुद मारो ताकि दुनिया को पता चल जाए कि इस्लाम बच्चों को भी कत्ल कर देता है। बच्चे को जल्लादों ने हलाल करके कत्ल कर दिया। उसका तड़पता हुआ दिल निकालकर बाबा बंदा सिंघ बहादुर के मुंह में ठूंसा गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर शांत-चित्त गुरु की बाणी का पाठ करते हुए सब कुछ सहन कर रहे थे। अंततः बादशाह ने खुद बाबा बंदा सिंघ बहादुर से पूछा कि "आखिर तुम क्या चाहते हो? इतना हठ क्यों कर रहे हो? क्या तुम्हें पता नहीं कि तुम्हें भी मार दिया जाना है?" बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने कहा-- "इस बात का मुझे उस समय ही पता था जब मैं अपने गुरु का हुक्म मानकर जुल्म के खिलाफ लड़ने हेतु चला था।"

मुहम्मद अमीन ख़ान, जो निरंतर बाबा बंदा सिंघ बहादुर के पास रहा था, ने पूछा-- "तेरी बातों से तो तू बहुत समझदार लगता है किंतु तू सब कुछ जानते हुए भी इस राह पर क्यों चला था?" बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने उत्तर दिया-- "जब जुल्म हद से बढ़ जाते हैं तो मेरे गुरु जैसा महापुरुष मुझ जैसे बंदे को भेजता है। मेरी बहादुरी को तू जानता ही है। मैं भूख के कारण पकड़ा गया हूं। अब मैं शहीद होकर आप पर विजय प्राप्त करूंगा।" अगर काजी बादशाह तथा अमीन ख़ान को न रोकता तो शायद और भी गंभीर बातें होतीं। काज़ी ने कहा, "इस काफिर से बहस करने का कोई फायदा नहीं, इसको मार दो।" बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने काज़ी को भी काफी कुछ बोला। इस पर काजी ने कहा, "इसकी जुबान काट दी जाए।" जो गुस्सा पहले शब्दों द्वारा निकलता था अब आंखों द्वारा निकलना शुरू हो गया। इस कारण बाबा बंदा सिंघ बहादुर की आंखें निकाल दी गईं। फिर हाथ-पांव काट दिए गए। शरीर का मांस जंबूरों द्वारा नोचा गया और अंत में बंद-बंद काटकर शहीद कर दिया गया।[१२]

इस प्रकार गुरु का यह बंदा गुरबाणी के महावाक्य अनुसार *"बंदी अंदरि सिफति कराए ता कउ कहीऐ बंदा ॥"* शहादत के जाम को पीता हुआ जाबर के जुल्म से सिक्खी सिदक को बड़ा रुतबा दे गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा उनका एक भी कैदी सिक्ख साथी धर्म से नहीं डोला, क्योंकि नाम-सिमरन में से उत्पन्न उनकी सिक्ख चेतना सब्र-शुक्र की रजायुक्त अलाही बरकत से मालामाल थी।

*संदर्भ-सूची :*


१) स. गुरतेज सिंघ , *शहादत इंटरनेशनल,* जून १९९८, पृष्ठ ४३.

२) Puran Singh (Prof.), *The Spirit Born People*, Language Deptt. Punjab, Patiala, Page 147

३) गंडा सिंघ (डॉ), *बंदा सिंघ बहादुर,* पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, २००८ पृष्ठ १३०.

४) J.S (Grewal), Irfan Habib (Eds.), *Sikh History From Persian Sources*, Tulika, New Delhi, 2001, Page 139-41.

५) हवाला, डॉ. गंडा सिंघ, *बंदा सिंघ बहादुर,* पृष्ठ १३२.

६) *उपरोक्त,* पृष्ठ १३२.

७) हादी कामवर ख़ान, *तज़किरात-सलातीन चुग्गताईआं,* हवाला डॉ. गंडा सिंघ, *बंदा सिंघ बहादुर,* पृष्ठ १३३.

८) हवाला, डॉ. गंडा सिंघ, *उपरोक्त,* पृष्ठ १३४.

९) उपरोक्त, पृष्ठ १३४.

१०) William Irvine, *Later Mlughlas*, हवाला, डॉ. गंडा सिंघ।

११) हवाला, डॉ. गंडा सिंघ, *बंदा सिंघ बहादुर,* पृष्ठ १३४.

१२) गुलाम हुसैन खान, *सीअरुल-मुताखिरीन,* हवाला, डॉ. गंडा सिंघ, *बंदा सिंघ बहादुर,* पृष्ठ १३६-३७.


## *जन-चेतना के संदर्भ में भक्त कबीर जी की बाणी*

*(पृष्ठ १६ का शेष)*

किया है कि जो जीव प्रभु को हृदय में नहीं बसाते, धन, स्त्री, हकूमत आदि के मद में सारा जीवन व्यर्थ गंवा देते हैं। वे नरक रूपी दुख भोगते हैं :

*-जागतु सोइआ जनमु गवाइआ ॥*
*मालु धनु जोरिआ भइआ पराइआ ॥*
*कहु कबीर तेई नर भूले ॥*
*खसमु बिसारि माटी संगि रूले ॥ (पन्ना ७९२)*
*-नरकि परहि ते मानई जो हरि नाम उदास ॥*
*(पन्ना १३६९)*

जो मनुष्य परमात्मा का सेवक बनकर रहता है, परमात्मा का हुक्म मानने में सुख अनुभव करता है, वह चाहे गृहस्थी है, चाहे विरक्त है, उत्तम भक्त है। उसी की आराधना कबूल होती है :

*हरि जनु ऊतमु भगतु सदावै आगिआ मनि सुखु पाई ॥*
*जो तिसु भावै सति करि मानै भाणा मंनि वसाई ॥ (पन्ना ४८०)*

परमात्मा की कृपा हो तभी मन में प्रभु-प्रेम पैदा होता है। तब सारे भ्रम दूर हो जाते हैं तथा मन नाम-सिमरन में लग जाता है :

*जां तिसु भावै ता लागै भाउ ॥*
*भरमु भुलावा विचहु जाइ ॥*
*उपजै सहजु गिआन मति जागै ॥*
*गुर प्रसादि अंतरि लिव लागै ॥ (पन्ना ९२)*

कोई विरला ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों से मुक्त होकर प्रभु-मिलाप वाली अवस्था को प्राप्त होता है :

*तेरा जनु एकु आधु कोई ॥*
*कामु क्रोधु लोभु मोहु बिबरजित हरि पदु चीन्है सोई ॥*

# कृषि राज-सत्ता के संस्थापक बाबा बंदा सिंघ बहादुर

*-डॉ. भगवंत सिंघ**

बाबा बंदा सिंघ बहादुर इन्कलाबी चेतना से भरपूर, महान जरनैल, सुयोग्य लीडर, जत्थेबंधक आगू, निपुण नीतिवान, परिपक्व कूटनीतिक, पंजाब के कृषि आंदोलन के प्रथम संचालक थे। बाबा जी ने पंजाब में मुगल सलतनत की धक्केशाही तथा ज़ब्र-ज़ुल्म के विरुद्ध मज़लूमों तथा बेसहारा एवं भयभीत हुई जनता को, हाकिमों की ऐयाशी की लूट-खसूट का सीधा शिकार हो चुके किसानों तथा श्रमिकों को लामबंद करके बहुत ही अल्प समय में दिल्ली और लाहौर के शक्तिशाली केंद्रों के बीच आज़ाद सत्ता स्थापित करके सिक्का चलाया। मुगल राज्य, मुगल सलतनत का उस वक्त काबुल से लेकर अहमदनगर (दक्षिण) तक, पूरब में बंगाल से लेकर पश्चिम में गुजरात, सिंध तक पूरे हिंदोस्तान पर दबदबा था तथा उसकी राजधानी दिल्ली थी। पंजाब में कृषि को जत्थेबंद कर अपनी राज-सत्ता कायम करना बाबा बंदा सिंघ बहादुर की प्रबंधकीय, फौजी, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक सूझ का स्पष्ट उदाहरण है। सूबा सरहिंद के तहत सुनाम, समाणा, सनौर, साढौरा तज़ारती व मालिए के बहुत बड़े केंद्र थे। समाज में समय की हकूमत की धक्केशाही व लूट-खसूट के विरुद्ध फैल रहे रोष एवं आक्रोश को बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने स्थापित निज़ाम को जड़ से उखाड़ने के विरुद्ध प्रयोग किया। यह वह समय था जब राज-सत्ता तक जनता की आवाज़ की कोई सुनवाई नहीं थी। सच्चाई को कोई नहीं सुनता था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के छोटे साहिबज़ादों को दीवार में चिनवा देना समय की हकूमत के ज़ुल्म व अत्याचार का शिख़र था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ऐसी अंधी-बहरी हकूमत को सुचेत करने हेतु श्रमिकों, किसानों तथा इन्साफपसंद व्यक्तियों को एकत्र करके, खालसा पंथ की साजना करके संघर्ष का आरंभ किया था। राज-सत्ता ने मासूम बच्चों को दीवार में चिनवाकर ज़ुल्म की इन्तहा दिखा दी थी। पंजाबियों का स्वभाव है कि वे ज़ुल्म ज्यादा देर तक सहन नहीं करते। लंबे समय से किए जा रहे ज़ब्र के बाद उनमें गुस्सा व विद्रोह मौजूद था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने इस गुस्से एवं विद्रोह को शक्ति के रूप में इस्तेमाल किया। यह गुस्सा व विद्रोह ही तो था जिसको बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सूबा सरहिंद को सोधने हेतु प्रयोग किया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर १७०८ ई में नांदेड़ से चले तथा मई, १७१० ई में चप्पड़चिड़ी के मैदान में सूबा सरहिंद वज़ीर खां को मार कर सरहिंद में दाख़िल हुए। सरहिंद में दोषियों को सज़ाएं देकर सिक्ख राज्य कायम करने का एलान कर दिया। सरहिंद के किले में जहां छोटे साहिबज़ादों को दीवार में चिना गया था, एक भारी दीवान सजाकर बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सिक्ख राज्य की स्थापना का एलान किया।[१] बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने युद्ध-नीति के पक्ष से मुखलिसगढ़ को लोहगढ़ का नाम देकर अपनी

**गांव-डाक : मंगवाल, तहसील-ज़िला : संगरूर (पंजाब)- १४८००१; फोन : ९८१४८५१५००*

राजधानी बनाया। उनको मालूम था कि सरहिंद मुख्य मार्ग पर होने के कारण सुरक्षित नहीं है, जबकि लोहगढ़ पहाड़ी क्षेत्र में है जहां पहुंचने वाले रास्ते में खड्डे तथा चट्टानें हैं। उन्होंने सिक्ख राज्य का झंडा, सिक्का व मुहरें बनवाईं।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के संकल्प को आगे बढ़ाया। उनके विरुद्ध निर्मूल व आधारहीन कहानियां, जो मुगलई हकूमत के पिट्ठू इतिहासकारों, उसके बाद अनजान लिखारियों ने फैलाई हैं, के दो मंतव्य हैं। एक तो सिक्खों की बढ़ रही शक्ति को खत्म करना था, दूसरा, लोग-उत्थान को रोककर स्थापित अन्यायकारी प्रबंध को और लंबा करना। इसके साथ ही इस प्रचार का मंतव्य सिक्ख संघर्ष में फूट डालना था, जिसमें मुगल सलतनत काफी हद तक कामयाब भी हुई, जिसके फलस्वरूप 'बंदई खालसा' तथा 'तत्त खालसा' के रूप में दो दल सामने आए। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हुक्मों के अनुसार कार्य किया। उनके द्वारा जारी किए गए सिक्के तथा मुहरों पर लिखी इबारत इसकी पुष्टि करती है। सिक्के पर एक तरफ लिखा था :

*सिक्का जद बर हर दो आलम तेगि नानक वाहिद असत।*
*फ़तहि गोबिंद सिंघ शाहि-शाहान फ़जलि सच्चा साहिब असत।*

इसके भावार्थ हैं : "मैंने दुनिया भर के लिए यह सिक्का जारी किया है। यह श्री गुरु नानक साहिब की बख़्शिश है। मुझे शाहों के शाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने विजय बख़्शी है। यह सच्चे साहिब की मेहर है।"

सिक्के के दूसरी तरफ की इबारत इस प्रकार थी :

*ज़रब ब-अमानु-दहिर, मुसव्वरत शहिर,*
*जीनतु-तखत, मुबारक बखत।*

इसके भावार्थ हैं : "जारी हुआ संसार के शांति स्थान, शहरों की मूरत, धन्यभागी राजधानी से।"

सरकारी कामों के लिए बनाई गई मुहर के फारसी शब्द इस तरह थे :

*देगो तेग़ो फतहि ओ नुसरति बे-दिरंग।*
*याफ़त अज़ नानक गुरू गोबिंद सिंघ।*

भावार्थ हैं : "मुझे देग, तेग, फ़तहि तथा सफलता एकदम श्री गुरु नानक साहिब तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से प्राप्त हुई है।"

ऐसी भावनाओं को रखने वाला इन्सान गुरु-आशय के विपरीत कैसे जा सकता है?

सरकारी तंत्र ने अपनी चालों द्वारा खालसा पंथ में फूट डालने की हर संभव कोशिश की। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को बदनाम करने हेतु हर यत्न किया गया।

बाबा बंदा सिंघ की बहादुरी तथा आचरण-उच्चता के प्रमाण उनके द्वारा लड़ी गई लड़ाइयों तथा शाही फौजों के घेरे में से निकलने की घटनाओं से उभरकर सामने आते हैं। लश्कर द्वारा लोहगढ़ की घेराबंदी में से बाबा बंदा सिंघ बहादुर बचकर निकल गए। इसके बारे में फौज को बहुत देर बाद पता चला। इस नाकामी से बादशाह अपने जरनैलों पर बहुत खफ़ा हुआ। इससे बाबा जी की बहादुरी की गाथाओं में और इजाफा होता है।

लोहगढ़ छोड़ने के पश्चात बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पहाड़ी क्षेत्रों में रहकर अपनी शक्ति एकत्र की। बाबा जी ने मंडी तथा चंबे के राजाओं से नज़राने लिए तथा चंबे में ही बाबा जी ने शादी करवाई। आपने कलानौर तथा बटाला पर हमले किए और अपने अधीन कर

लिए। इसी समय के दौरान बादशाह बहादुर शाह की फरवरी, १७१२ ई में मृत्यु हो गई। अगले बादशाह जहांदार शाह के समय बाबा जी ने और शक्ति एकत्र कर सरहिंद, साढौरा, लोहगढ़ पर दोबारा कब्ज़ा कर लिया किंतु यह कब्ज़ा कुछ समय तक ही रहा क्योंकि दिल्ली के तख़्त पर अब फरुख्सियर बैठ चुका था, जिसने बाबा जी पर सख़्ती करनी शुरू कर दी थी। शाही लश्कर के दबाव तले बाबा जी सरहिंद छोड़कर चले गए तथा कश्मीर के क्षेत्र में रहने लगे। इस तरह के कई वृत्तांत बाबा बंदा सिंघ बहादुर की युद्ध-नीति के पैंतरों को दर्शाते हैं।

गुरदास नंगल में बाबा बंदा सिंघ बहादुर को जब शाही फौज ने घेर लिया तो वे लंबा समय साधनों की कमी में ही शाही फौज का मुकाबला करते रहे। जब खाना-दाना खत्म हो गया तब भी शाही फौज के जरनैलों ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर को छल-कपट द्वारा ही गिरफ्तार किया। उस अवस्था में भी बाबा जी तथा उनके साथी सिंघों ने कोई कमज़ोरी नहीं दिखाई बल्कि बहुत ही सिदकदिली से जुल्म तथा तशद्दुद को सहन किया। बाबा जी को पिंजरे में बंद करके दिल्ली ले जाया गया, जहां उन्हें घोर यातनाएं दी गईं तथा इस्लाम कबूल करने के लिए दबाव डाला गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने बहुत ही दिलेरी एवं दृढ़ता से शहादत को स्वीकार किया।

९ जून, १७१६ ई को बाबा बंदा सिंघ बहादुर को शहीद करने के लिए किले से बाहर निकाला गया। आपको जंज़ीरों तथा बेड़ियों में जकड़कर पिंजरे में बंद किया हुआ था। कत्लगाह पर ले जाकर आपको पिंजरे से बाहर निकाला गया तथा आपके चार वर्षीय पुत्र भाई अजै सिंघ को आपकी गोद में लेकर जल्लाद ने टुकड़े-टुकड़े कर दिए। उसका दिल निकालकर बाबा जी के मुंह में ठूंसा गया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत एक मिसाल है। जल्लाद ने पहले उनकी बाईं आंख निकाली और फिर दाईं आंख निकाली। इसके पश्चात आप जी की बाईं टांग काट दी गई फिर दोनों बाजू काट दी गईं। दाईं टांग काटने के बाद गर्म जंबूरों से शरीर के मास को नोचा गया किंतु सिदकदिली की शिखर ही थी कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर बिल्कुल अडोल रहे। उनके नाक, कान भी काट दिए गए। उनके सिर को हथौड़े के साथ तोड़ा गया तथा बाकी शरीर के भी टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। ऐसी मार्मिक शहादत कम ही दृष्टिगोचर होती है। बाबा जी घोर यातनाएं झेलकर भी अपने धर्म तथा सिदक पर कायम रहे। इतना ही नहीं, उनका कोई भी साथी अपने अकीदे से नहीं डोला था।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की निजी आकर्षण-शक्ति बहुत थी। इस शक्ति ने उनके अनुयाइयों को उनके साथ पक्की तरह से जोड़ दिया था। इस तथ्य का पता इस बात से चलता है कि मुगल सरकार द्वारा पकड़े तथा कत्ल किए गए हज़ारों सिक्खों में से एक ने भी अपनी जान बचाने की खातिर अपना धर्म नहीं छोड़ा। **'बंदे'** (बाबा बंदा सिंघ बहादुर) की अपनी बेमिसाल पवित्रता तथा उच्च चरित्र उतना ही बड़ा कारण था जितना कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की प्रेरणा।[२]

पंजाब के किसानों को पहली बार भूमि की मालिकी सौंपकर बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने इन्कलाबी कार्य किया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सदियों से कायम ज़मींदारी प्रथा को खत्म कर हलवाहकों को ज़मीनों के मालिक बना दिया, जिससे किसानों की आर्थिक हालत में सुधार हुआ

तथा किसान बाबा जी के हिमायती बने। सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक परिवर्तन में यह एक बहुत बड़ा कदम था जो बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने उठाया। यह लोक-हितैषी राज्य को कायम करने की ओर जाता था। इस पर ही सिक्ख मिसलें कायम हुईं जो सिक्ख गणराज्य का नमूना था। इसके बाद महाराजा रणजीत सिंघ का शक्तिशाली राज्य कायम हुआ। पंजाब के किसानों (जट्ट) द्वारा शक्ति ग्रहण करने को प्रसिद्ध शायर वारिस शाह ने भी तसलीम किया है :

*जदों देश दे जट्ट सरदार होए,*
*घरो घरी जा नवीं बहार होई।*

पंजाब में किसानों को सरदारियां वास्तव में बाबा बंदा सिंघ बहादुर की बहादुरी की बदौलत ही प्राप्त हुई थीं। "मुगल शासन में बेनामी खेती करना आम था। खेती कोई और करता था तथा ज़मीन का मालिक कोई और होता था परंतु बाबा बंदा सिंघ बहादुर के राज्य में खेती करने वालों को ज़मीन के मालिक घोषित कर दिया गया। सिक्ख मत के सिद्धांत तथा मर्यादा के अनुसार बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने नीची समझी जाने वाली जाति के लोगों को भी ओहदे तथा सरदारियां दीं तथा उनको भी अपना समर्थक बना लिया। कुछ मुसलमान इतिहासकारों ने तुअस्सब के कारण बाबा बंदा सिंघ बहादुर को निर्दयी तथा अत्याचारी के रूप में पेश किया है परंतु वास्तव में उनका प्रशासन मनुष्य जाति का हितैषी था।"[३] यह बाबा बंदा सिंघ बहादुर की राजनीतिक, सभ्याचारक, आर्थिक तथा सामाजिक दूर-दृष्टि की साक्षी भरता है।

मुगल सलतनत के ध्वस्त होने पर पंजाब के कृषि राज-सत्ता की ओर बढ़ने के बारे में प्रसिद्ध सूफी फकीर साईं बुल्ले शाह की रची तथा लोक कहावत का रूप बन चुकी यह उक्ति मशहूर है :

*भूरिआं वाले राजे कीते।*
*मुगलां ज़हिर पिआले पीते।*

"पंजाब के किसान, जो सिक्ख संघर्ष में शामिल हुए थे, उस वक्त कंबल ओड़कर घोड़े पर सवार रहते थे।"

ऐसा लोक-हितैषी व्यक्ति निर्दयी नहीं हो सकता, जैसा कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर के बारे में प्रचार किया गया कि उन्होंने मुसलमानों की कब्रें तक खोदी थीं। उन्होंने तो सिर्फ बीबी अनूप कौर की मृत देह को मलेरकोटला में कब्र से निकलवाकर सिक्ख मर्यादा के अनुसार अंतिम संस्कार करवाया था, अन्य कब्रें तथा मकबरे नहीं तोड़े थे। इसका सबूत सरहिंद तथा उसके इर्द-गिर्द कायम सदियों पुरानी कब्रें, मकबरे, खानगाहें तथा दरगाहें हैं, जो आज भी मौजूद हैं।

उक्त मंथन से हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर एक सुयोग्य प्रबंधक तथा कृषि राज-सत्ता के प्रतीक थे, जो उन्होंने गुरु आशय के अनुसार कायम करने की कोशिश की। उनके चरित्र तथा जीवन के बारे में आधुनिक प्रसंग में और खोज करने की आवश्यकता है ताकि उनके बारे में फैलाई गई भ्रांतियों को दूर किया जा सके।

संदर्भ-सूची :

१) स. सुरजीत सिंघ पंछी, *बंदा सिंघ बहादुर*, पृष्ठ ५५
२) श्री गोकुल चंद नारंग, *सिक्ख मत्त दा परिवरतन*, पृष्ठ १२३
३) स. गुरदिआल सिंघ आरिफ, *जन साहित*, जून-नवंबर, पृष्ठ ३९



# बाबा बंदा सिंघ बहादुर के जीवन-सफर का ऐतिहासिक सर्वेक्षण

*-स. सिमरजीत सिंघ**

*यह आलेख बाबा बंदा सिंघ बहादुर से सम्बंधित स्थानों पर जाकर किए गए सर्वेक्षण तथा ऐतिहासिक स्रोतों के आधार पर है। इस आलेख में दी गयी घटनाएं स्थानीय परंपरा के अनुसार पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही हैं जो अभी और खोज की मांग करती हैं। --लेखक*

भारत के उत्तर में स्थित एक क्षेत्र का नाम किसी समय काशमीलो था, जिसको 'भारत की जन्नत' कहा जाता था और इसी लिए 'तुजक-ए-जहांगीरी' में जहांगीर ने वर्णन किया है :

*अगर फिरदोस बर रूए ज़मीन असत।*
*हमी असतो, हमी असतो, हमी असतो।*

अर्थात् अगर धरती पर स्वर्ग है तो यही है, यही है, यही है।

इसी जन्नतनुमा क्षेत्र में सन् १६७० ई में पश्चिमी कश्मीर के एक छोटे-से गांव में श्री रामदेव के घर एक पुत्र ने जन्म लिया जिसका नाम लछमण देव रखा गया। यह गांव भिंबर से आगे कमनगोथा की पहाड़ियों के पार एक नदी के किनारे आबाद है। यहां के प्राचीन निवासी डोगरे राजपूत थे जो कृषि-कार्य करते थे। राजपूताना पृष्ठभूमि होने के कारण लछमण देव ने ज्यादातर समय शिकार पर जाने और तीरंदाज़ी में गुज़ारा। एक बार एक हिरणी का शिकार करने के उपरांत हिरणी के पेट में से दो बच्चे निकले, जिन्होंने लछमण देव की आंखों के सामने तड़प-तड़पकर प्राण त्याग दिए। इस घटना ने उनके जीवन पर गहरा असर डाला। जानकी दास की संगत का असर कबूलते हुए लछमण देव ने युवा अवस्था में ही अपना घर-बार त्याग दिया और अपना नाम बदलकर माधोदास रख लिया।

सन् १६८६ ई में माधोदास अनंत की खोज में दर-दर भटकता हुआ पंचवटी (नासिक) के स्थान पर साधू औघड़ नाथ के संपर्क में आया। जहां उसने औघड़ नाथ की शागिर्दी तले हठ-योग सीखा। माधोदास रिद्धियों-सिद्धियों का धारक बना। एक विद्या से सम्बंधित उसने एक ग्रंथ भी औघड़ नाथ से प्राप्त किया। सन् १६९१ ई में औघड़ नाथ परलोक सिधार गया। उस वक्त माधोदास २१ वर्ष का था।

अब माधोदास ने नासिक छोड़कर नांदेड़ (गोदावरी के किनारे) को अपना ठिकाना बना लिया। १६-१७ वर्ष यहां ही रहा। दशम् पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जब १७०८ ई में दक्षिण के प्रसिद्ध शहर नांदेड़ में पहुंचे तो गुरु जी के अनेक श्रद्धालुओं ने गुरु जी का नांदेड़ पहुंचने पर स्वागत किया, जिसमें गांव सुर सिंघ ज़िला श्री अमृतसर का ढाडी भाई नत्थ मल भी शामिल था। ढाडी भाई नत्थ मल श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय अपने भ्राता भाई अब्दुल्ला के साथ मिलकर गुरु-दरबार में आई संगत को ढड्ड-सारंगी द्वारा वारें सुनाया करता था। भाई नत्थ मल तथा भाई अब्दुल्ला ने चार गुरु साहिबान के दर्शन किए थे। यहां नांदेड़ में ही गुरु जी का मिलाप माधोदास से हुआ। 'गुरू कीआं साखीआं, में वर्णन है कि :

**उप सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६; फोन: ९८१४८-९८२२३*

"संमत सतरां सै पैंसठ अशुव प्रविषटे तीज के दिहूं सूरज ग्रहिण के लगे मेले ते गुरु जी साथी सिक्खां समेत माधोदास बैरागी के डेरे गए। मेला गोदावरी दे कंढे लगा हूआ था।"

उस वक्त माधोदास की उम्र लगभग ३८ वर्ष हो चुकी थी। भाई नत्थ मल जी ने फारसी में १२६ शेयरों की रचना की और इन शेयरों के संग्रह का नाम उन्होंने 'अमरनामा' रखा। इन फारसी शेयरों का डॉ पंदोहल ने पंजाबी में अनुवाद किया है। भाई नत्थ मल जी लिखते हैं :

*गदा बूद आं जां यके तुंद खू। कि गूले बिआबां ब-तसखीरे ऊ।*

अर्थात् वहां एक बहुत कड़वा साधू रहता था, जिसके पास भूतों की टोली बैठती थी।

भाई केसर सिंघ छिब्बर अपनी पुस्तक 'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का' में लिखते हैं :

*साहिब पासों आदमी करि दिते दूर।*
*दोहां गल्लां कीतीआं आपस विचि बैठ के मशकूर।*
*आखिर साधू उठ के, आ चरनी ढट्ठिआ।*
*पाहुल गुरू की छक के, बणिआ सिंघ हठीआ ॥६२३॥*
*उन आखिआ साहिब नूं : "मैं बंदा तेरा।*
*तूं है पूरण सतिगुरू, राख रखदा मेरा ॥६२४॥"*

इसी घटना का ज़िक्र करते हुए भाई सरूप सिंघ कौशिश ने 'भट्ट वहीआं' से तैयार की पुस्तक 'गुरू कीआं साखीआं' में वर्णन करते हुए लिखा है कि :

". . . गुरू गोबिंद सिंघ जी मुसकराए ते बचन कीता, "माधोदास हम तुमें मिलने आए हां . . . बैरागी ने आंख उठाइ कर देखा। बचन बोला, महाराज! आप गुरू गोबिंद राइ (सिंघ) जी हो, जिनके पिता गुरू तेग बहादर जी ने दिल्ली में जाइ आपना सीस बलीदान दीआ था? सतिगुरां कहा–- हां माधोदास। . . . हां की आवाज़ सुन के आपना मसतक गुरू जी के पांव में रख खिमा की याचना की। . . . माधोदात त्रबक के बोला, मैं आज से दिलोजान से तेरा बंदा हां। . . . भाई दया सिंघ ने माधोदास नूं किहा, तिआर हो जावो तुसां नूं खंडे दी पाहुल देणी है। गुरू गोबिंद सिंघ साहिब ने आपणे मुबारक हत्थां नाल कंघा, करद (कृपाण) कड़ा ते कछा (कछहिरा) पहिनाए। सिर ते छोटी दसतार केसकी सजा बैरागी से सिंघ रूप मैं लै आंदा।"

माधोदास सदा के लिए गुरु जी की शरण में चला गया। गुरु जी ने माधोदास की काया कल्प की तथा उसको खंडे की पाहुल देकर बंदा सिंघ बनाया जो 'बंदा सिंघ बहादुर' के नाम से मशहूर हुआ।

गुरु साहिब ने अमृत छकाकर उसके भीतर मुगलों से टक्कर लेने के लिए शूरवीरों वाली शक्ति पैदा की तथा इसको पूर्ण रूप से तैयार कर के खालसे का जत्थेदार स्थापित किया। गुरु जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर को पांच तीर, एक निशान साहिब तथा एक नगाड़ा, पांच प्रमुख सिक्ख–- भाई काहन सिंघ, भाई बिनोद सिंघ, भाई बाज़ सिंघ, भाई दइआ सिंघ, भाई रण सिंघ तथा २० अन्य सिंघ देकर पंजाब की ओर रवाना किया और कहा कि विकट समय में ये पांच सिंघ बाबा बंदा सिंघ बहादुर को सिक्खी सिद्धांत समझाते रहेंगे। इसके पीछे गुरु साहिब का मूल उद्देश्य बाबा बंदा सिंघ बहादुर को सिक्ख फलसफे एवं गुरमति विचारधारा में व्यक्तिवाद से बचाकर रखना तथा संगठन एवं जत्थेबंदी की शक्ति को प्रमुखता देते रहने का था। 'गुरू कीआं साखीआं' में ज़िक्र किया गया है :

"संमत सत्रा सै पैंसठ कारतक मासे सुदी तिथ तीज के दिहूं बंदा सिंघ को पंथ का जत्थेदार

थाप बांगेसरी के टांडे में मदर देस जाने का बचन किया। . . . बचन होआ-- बंदा सिंघ! जहां भीड़ बने पांच से अरदास कराना, गुरु अंग-संग होएगा . . . सतिगुरां इसे गात्रे की श्री साहिब, एक मोहर, पांच तीर ते निशान साहिब दे के पंजाब की तरफ विदा कीआ।"

गुरु जी के दक्षिण की तरफ आ जाने के कारण मालवा, दुआबा तथा माझा क्षेत्र में सिंघ बिखरे पड़े थे। ये किसी संगठित रूप में नहीं थे। पंजाब में पहुंचते ही बाबा बंदा सिंघ बहादुर का सबसे पहला काम इन सिंघों को अपनी कमान तले इकट्ठा करना था और उनका विश्वास हासिल करना था। अंग्रेज़ इतिहासकार मैकालिफ लिखता है कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर को रास्ते तथा कुमक मिलने तथा रुकने के स्थान के बारे में सारी योजना गुरु साहिब ने बनाकर दी थी किंतु फिर भी उनके सामने कई तरह की कठिनाइयां थीं। पैसे व सिंघों की बहुत कमी थी। रास्ते में भरतपुर के एक धनाढ्य द्वारा दसवंध की रकम देकर उसके महान मिशन के आरंभ के समय मदद की।

रास्ते में उनको लुबाणा (एक बरादरी) सिक्खों का एक काफिला मिला जो बैलगाड़ियों पर अपना सामान लेकर जा रहे थे। पहले तो वे दूर से ही घोड़े आते देखकर डर गए कि शायद कोई लुटेरे न हों, किंतु जब वे पास आए तो उन्होंने गुरु जी के सिंघों को पहचान लिया। लुबाणा सिक्खों के मुखी ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर को दसवंध की ५०० मुहरें दीं ताकि वे अपने मिशन में कामयाब हो सकें। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने एक महान जरनैल की तरह अपने सिपाहियों की ज़रूरतों को मुख्य रखते हुए वे मुहरें सभी सिंघों को एक समान बांट दीं जिससे बाबा बंदा सिंघ बहादुर के प्रति सिंघों का प्रेम-भाव और बढ़ गया।

चलते-चलते बाबा बंदा सिंघ बहादुर का जत्था बांगर के क्षेत्र में परगना खरखोदा* में पहुंच गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने खरखोदा से १३ किलोमीटर दूर गांव सिहरी तथा खंडा के मध्य एकांत स्थान पर अपना पड़ाव किया। यहां से बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पंजाब में अलग-अलग क्षेत्रों के मुखिया सिक्खों को संदेश भेजकर गुरु साहिब का आदेश दिया तथा हथियारबंद होकर बांगर देश में पहुंचने का न्यौता दिया। लोग उमड़कर उनके पास पहुंचना आरंभ हो गए। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने उन लोगों को बताया कि वे उनको मुगल सलतनत के दुखों से छुटकारा पाने का मार्ग बता सकते हैं। इसके लिए उनको ज़ालिमों के जुल्म का विरोध करना होगा तथा तेग के धनी बनना पड़ेगा। बाबा बंदा सिंघ बहादुर उनको मानसिक रूप से तैयार कर ही रहे थे कि उसी समय लोगों में शोर मच गया कि हमलावर आ रहे हैं। यह सुनकर सभी भाग गए। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने उनको बहुत समझाने की कोशिश की कि हम सभी मिलकर उनका मुकाबला करेंगे। गांव के पंच ने कहा कि "ये हमलावर काफी संख्या में आते हैं। जो भी इनके आगे ठहरता है उसको ये पार बुला देते हैं। बाबा जी! आपके सिंघों की संख्या बहुत कम है। मौका है, किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाओ।"

हमलावर डाकुओं की एक टोली ने हमला

**खरखोदा, सांपला तहसील में है। सोनीपत तथा दिल्ली के मध्य सांपला दिल्ली के उत्तर-पश्चिम में स्थित दिल्ली से लगभग ४० कि.मी. तथा रोहतक से ३३ कि.मी. दूर है। उस समय यह क्षेत्र उजाड़ बीयाबान एवं जंगल होने के कारण काफी सुरक्षित माना जाता था।*

कर दिया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने यहां जंगी-नुक्ता-निगाह से एक और पैंतरा इस्तेमाल किया। डाकुओं को गांव लूट लेने दिया। जब वे लूटमार कर खुशियां मनाते हुए गांव से बाहर आए तो सिंघों ने उनको घेर लिया। सिंघों ने उनका डटकर मुकाबला किया और लूट का सारा सामान छीन लिया। लुटेरों ने भाग कर अपनी जान बचाई। हमलावरों के मुखिया, जिससे डरते हुए लोग बोलते नहीं थे, को सिंघ रस्सियों से बांधकर गांव ले आए। वह बाबा बंदा सिंघ बहादुर के आगे गर्दन झुकाए खड़ा था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने लूट का सारा माल लाकर चौंक में रख दिया और गांव वासियों को अपना-अपना सामान पहचान कर ले जाने के लिए कहा। इस घटना ने गांव वासियों में नया जोश भर दिया। गांव के नौजवान खालसा फौज में भर्ती होकर व अमृत छककर सिंघ सज गए और सभी ने अपने घरों में से दबी हुई एवं जंग लगी हुई तेगें निकाल लीं। म्यान से निकालकर उनमें धार लगानी शुरू कर दी। हमलावर अपने मुखी को छुड़ाने के लिए बार-बार आते रहे। गांव वासी उनसे डरने की बजाए उन पर झपट पड़ते, कुछ को पकड़ लेते और कुछेक को भगाने में कामयाब हो जाते।

यहां कुछ ही दिनों में पांच सौ के लगभग सिंघ उनके पास पहुंच गए। भाई रूपा के भाई धरम सिंघ तथा भाई करम सिंघ, भाई बहिलो, भाई भगतू का भाई फ़तहि सिंघ, चौधरी राम सिंघ तथा भाई तिलोक सिंघ की पांच सौ की फौज, सलौदी वाले भाई आली सिंघ व भाई माली सिंघ तथा मालवा क्षेत्र के बहुत सारे सिक्ख परिवारों के बहुत सारे जवान अपने घोड़ों तथा हथियारों से लैस होकर बाबा बंदा सिंघ बहादुर के कैंप में पहुंच गए। कुछेक सप्ताह में यह गिनती चार हज़ार तक पहुंच गई। यहां बैठकर बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने अपनी अगली मुहिमों के लिए नीति तैयार की।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने गांवों में ढिंढोरा पिटवा दिया कि कोई भी सरकारी मामला न दे। हमें सिर्फ दूध, दहीं और आवश्यक वस्तुएं दो। हम आपकी हर तरह की लूट-खसूट से रक्षा करेंगे। इस तरह लुटेरों और सरकारी हाकिमों से तंग आए लोग बाबा बंदा सिंघ बहादुर की कमांड तले खालसई निशान तले इकट्ठा होना शुरू हो गए।

मुसलमान लिखारी खाफी ख़ान तथा मुहम्मद कासिम के अनुसार, "जब बंदा सिंघ पंजाब की तरफ बढ़ा तो जल्दी ही उसकी फौज में ४००० घुड़सवार तथा ७८०० पैदल सिपाही आ मिले।"

इतिहासकार श्री गोकुल चंद नारंग के अनुसार, "सैनिकों की संख्या ८९०० से बढ़कर ४०००० तक पहुंच गयी। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सेना में तीन तरह के सिपाही थे। पहले वे सुहृद तथा जांबाज़ सिक्ख थे जिन्होंने अपने जीवन में गुरु जी का चरण स्पर्श प्राप्त किया हुआ था और ज़ालिमों के अत्याचारी राज्य को नष्ट करने हेतु बाबा बंदा सिंघ बहादुर के साथ आ मिले थे। दूसरी तरह के सिपाही वे थे जो तनख्वाहदार सरदारों तथा ज़मींदारों ने भर्ती करके भेजे थे। वे शाही अधिकारियों और सिक्खों दोनों के साथ ही सांझ बनाकर रखना चाहते थे। वे खुलेआम नहीं बल्कि चोरी-छिपे बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सहायता कर रहे थे। तीसरी तरह के वे सिपाही थे जो दुश्मन हाकिमों द्वारा साज़िश तहत खालसई फौज को कमज़ोर तथा बदनाम करने के उद्देश्य से आ मिले थे, जो किसी के सगे नहीं थे और जिनका कोई आदर्श नहीं था। वे केवल लूट-मार के

इरादे से आए थे। इस तृतीय वर्ग का मुख्य काम इस (सिक्ख) लहर को बदनाम एवं असफल करना था।"

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने अपनी फौज के लिए खास किस्म की रहित तैयार की ताकि सज़ा सिर्फ दोषियों को ही दी जा सके, किसी बेकसूर को जहां तक हो सके कोई नुकसान न पहुंचाया जाए। भाई रतन सिंघ (भंगू) लिखते हैं कि "वह (बाबा बंदा सिंघ बहादुर) हर रोज़ ढिंढोरा पिटवाता कि स्त्री के तन के गहनों को कोई सिक्ख सैनिक हाथ न लगाए तथा किसी पुरुष की पोशाक व दसतार पर भी कोई हाथ न डाला जाए।"

दिल्ली पार करते ही उन्होंने सोनीपत तथा कैथल पर कब्ज़ा किया। सोनीपत शहर का फौजदार बहुत डर गया। लड़ाई में खालसा फौज ने दुश्मन फौज के छक्के छुड़ा दिए तथा सोनीपत शहर पर विजय प्राप्त की। सोनीपत से बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने समाणा की ओर रुख किया। रास्ते में उनको पता चला कि कुछ सिपाही सरकारी मामले की रकम इकट्ठी करके गांव भूना में ठहरे हुए हैं। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को इस समय पैसे की बहुत ज़रूरत थी। उन्होंने इसको प्रभु-सहायता समझते हुए सारी रकम को अपने कब्ज़े में ले लिया। इसकी ख़बर सुनते ही कैथल का आमिल फौज लेकर बाबा बंदा सिंघ बहादुर का सामना करने के लिए आ गया। उसकी बुरी तरह पराजय हुई तथा उसने अपने सारे घोड़े बाबा बंदा सिंघ बहादुर को भेंट कर अपनी जान छुड़ाई।

पंजाब में पहुंचते ही सिक्ख दूर एवं पास-से बाबा बंदा सिंघ बहादुर की कमान तले इकट्ठा होने शुरू हो गए। थोड़े समय में ही पंजाब की सारी सिक्ख तथा किसान आबादी ने ज़ालिमों से बदला लेने हेतु बगावत कर दी।

ऐतिहासिक नगर समाणा अपने आगोश में कई तरह के पहलू छिपाए बैठा था। यह पटियाला ज़िले का एक पुराना ऐतिहासिक कसबा है जो पटियाला से ३० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसका पहला नाम इमामगढ़ था किंतु बाद में फ़ारस तथा समानी खानदान के कुछ लोगों के यहां आकर बस जाने पर इस जगह का नाम समाणा पड़ गया। राजपूत काल के दौरान यहां पर राजा जैपाल का राज्य रहा तथा यह जगह कुछ समय के लिए मुहम्मद गौरी के कब्ज़े में भी रही।

समाणा ने १२ से १५वीं शताब्दी तक भरपूर यौवन का आनंद लिया। दिल्ली के तख़्त पर जब पठान सुलतान सिक्का चला रहे थे, उस समय समाणा एक बड़े परगने की राजधानी था। उस समय पठान दल पेशावर से मुलतान और मुलतान से दिल्ली जाते समय बड़ा पड़ाव समाणा में ही किया करते थे। एक समय था कि समाणा इस्लामी तालीम तरबीअत का बड़ा केंद्र बन गया तथा दिल्ली के राजकुमार यहां से तालीम हासिल करते रहे। कहा जाता है कि शेरशाह सूरी तथा हुमायूं ने समाणा में रहकर पुस्तकीय, घुड़सवारी तथा जंगी शिक्षा हासिल की थी। हीर-रांझा अदली राजा के समक्ष यहां ही पेश हुए बताए जाते हैं।

फ़ारसी का सबसे बड़ा विद्वान तथा कवि अमीर खुसरो दिहलवी बलबन बादशाह के राज्य काल के समय पांच वर्ष यहां पर रहा। वह गवर्नर बुगरां ख़ान (पुत्र बादशाह बलबन) का वज़ीर-ए-अव्वल (मुख्य सचिव) बनकर आया। जब शेरशाह सूरी ने जरनैली सड़क पेशावर से दिल्ली तक लाहौर तथा सरहिंद के रास्ते बना दी तो समाणा एक तरफ रह गया और इस नगर की प्रसिद्धि कम हो गई।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब धर्म की रक्षा हेतु बलिदान देने के लिए दिल्ली जाते समय समाणा में रुके थे। उस स्थान पर गुरु जी की याद में गुरुद्वारा थड़ा साहिब सुशोभित है। मुगल सेना उनका पीछा करती हुई आ रही थी। वहां का एक दरवेश मुसलमान मुहम्मद बख़्श उर्फ़ भीखन ख़ान गुरु जी को सुरक्षा प्रदान करने हेतु तीन किलोमीटर दूर गांव गढ़ नज़ीर में अपने घर ले गया था। यह भी ऐतिहासिक सच है कि दिल्ली के चांदनी चौंक में श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद करने वाला जल्लाद जलालुद्दीन भी इसी शहर का था। अली हुसैन जिसने श्री अनंदपुर साहिब में कुरान की कसमें खाकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ झूठे वादे करके श्री अनंदगढ़ का किला खाली करवाया था, वह भी समाणा का ही रहने वाला था। सरहिंद शहर में छोटे साहिबज़ादों को शहीद करने वाले जल्लाद साशल बेग और बाशल बेग भी इसी शहर के रहने वाले थे। विद्वानों का शहर के नाम से जाना जाता समाणा शहर समय की मार से जल्लादों का शहर के नाम से जाना जाने लगा। इसी कारण खालसे ने सिक्ख जरनैल बाबा बंदा सिंघ बहादुर की कमान तले १७०९ ई में इस शहर पर हमला बोल दिया। यहां के २२ ज़ालिम घराने हमेशा के लिए ख़त्म हो गए। सिंघों ने समाणा की ईंट से ईंट बजाकर इसको खंडहर के रूप में बदल दिया। पुराने नगर के खंडहर अब तक अपनी हुई तबाही की गवाही भरते हैं। समाणा के पास ही गांव दमला उन पठानों का गांव था जो पाउंटा साहिब में पीर बुद्धू शाह को झूठ बोलकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की फौज में भर्ती हो गए थे। ये पठान भंगाणी के युद्ध के समय गुरु जी को धोखा देकर दुश्मन सेना के साथ जा मिले थे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने दमला गांव पर हमला कर इन ज़ालिमों को सोधा।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर घुड़ाम, ठसका, शाहबाद, मुस्तफाबाद तथा कपूरी पहुंचा। कपूरी का फौजदार कादम-उद-दीन बड़ा अत्याचारी तथा व्यभिचारी व्यक्ति था। कादम-उद-दीन का पिता कपूरी का चौधरी सैयद अमानुल्ल गुजरात में उच्चाधिकारी था। हिंदुओं को कत्ल करने तथा उनका धर्म परिवर्तित करने में मशहूर था। ये दोनों पिता-पुत्र प्रत्येक नयी ब्याही हिंदू स्त्री को चार-पांच दिन अपने घर ज़रूर रखते थे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने कपूरी पर हमला कर फौजदार को मृत्यु के घाट उतारा तथा कपूरी को फ़तहि किया।

कपूरी से बाबा बंदा सिंघ बहादुर साढौरा पहुंचे। साढौरा के हाकिम उसमान ख़ान को सोधा। (हरियाणा प्रांत का एक पुरातन कसबा है साढौरा। इस कसबे में सैयद शाह बदरुद्दीन का निवास था, जिसको लोग प्यार से पीर बुद्धू शाह भी कहते थे। पीर बुद्धू शाह जी की श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रति अथाह श्रद्धा थी। भंगाणी के युद्ध के समय पीर जी की सिफारिश पर रखे पांच सौ पठान गुरु जी को धोखा देकर भाग गए थे। जब पीर बुद्धू शाह जी को इस बात का पता चला तो वे अपने सात सौ मुरीदों तथा चार सुपुत्रों सहित गुरु जी की मदद हेतु पहुंच गए। पीर बुद्धू शाह के दो सुपुत्र तथा कई मुरीद जंग में शहीदी प्राप्त कर गए। बाद में साढौरा के हाकिम उसमान ख़ान ने पीर बुद्धू शाह पर गुरु जी की मदद करने का दोष लगाकर उन्हें कत्ल करवा दिया था।) हाकिम उसमान ख़ान ने क्षेत्र के हिंदुओं को बहुत तंग किया हुआ था, यहां तक कि उनको मुर्दे भी जलाने नहीं देता था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर

के वहां पहुंचते ही बहुत-से लोग उनके साथ आ मिले। परिणामस्वरूप फौजदार उसमान ख़ान को करारी पराजय मिली। बहुत-से मुसलमानों ने पीर बुद्धू शाह की हवेली में पनाह ले ली। इसके बारे में मुहम्मद कासिम 'इबरतनामा' में लिखता है, "साढौरा में पीर बुद्धू शाह की हवेली के अंदर शरण लेने हेतु नगर के अमीरों तथा चौधरियों, जो हर किस्म के पाप में लिप्त रहते थे, ने अपने परिवारों की सुरक्षा हेतु, गरीब लोगों को अंदर प्रवेश नहीं करने दिया।" वहां भी बहुत सारा नुकसान हुआ। जिस जगह पर उस समय कत्लेआम हुआ था, वह जगह कतलगढ़ी के नाम से प्रसिद्ध है। उसमान ख़ान जैसे ज़ालिमों को बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने फांसी पर लटकाकर उन्हें उनके किए की सज़ा दी। सिंघ साढौरा पर विजय प्राप्त करने के बाद ललकारते हुए बनूड़ की ओर बढ़े।

बनूड़ को फ़तहि करने के बाद १७१० ई में बाबा बंदा सिंघ बहादुर की तीक्ष्ण नज़र अपने मुख्य लक्ष्य सरहिंद पर थी। सरहिंद के सूबेदार वज़ीर ख़ान ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के छोटे साहिबज़ादों को दीवार में चिनवाकर शहीद किया था। इस घटना का सिक्खों में भारी रोष था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने माझा, मालवा और दुआबा के सिंघों को चिट्ठियां लिखकर धर्म-युद्ध में भाग लेने हेतु प्रेरित किया। जिस किसी ने भी बाबा बंदा सिंघ बहादुर का खत पढ़ा या सुना वो घर का कामकाज भूलकर घरेलू हथियार लेकर बाबा बंदा सिंघ बहादुर से जा मिला।

जंग के मैदान में बाबा बंदा सिंघ बहादुर अपने उपनाम के सही एवं सच्चे अर्थों में बहादुर थे और कई बार बहादुरी में बेपरवाही की हद तल चले जाते थे। उनकी सबसे बड़ी खास बात यह थी कि उन्होंने किसी पर कोई ज्यादती नहीं की। कई मुसलमान लेखकों ने उनको गलत ढंग से पेश किया है। थौरनटन कहता है, "ऐसे मामले में किसी मुसलमान लिखारी पर पूर्ण भरोसा नहीं किया जा सकता।" वह पहले कभी छेड़खानी नहीं करता था और न ही किसी पर सख़्ती करता था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के कथनानुसार बाबा जी उस समय तेग पकड़ना जायज़ समझते थे जब कोई अन्य हल शेष न रह जाए। जब हम हालात की ओर दृष्टि डालते हैं कि किस प्रकार बाबा बंदा सिंघ बहादुर को तेग पकड़ने के लिए मज़बूर होना पड़ा तो हमें प्रत्यक्ष मालूम होता है कि वे बिना किसी कारण कोई सख़्ती नहीं करते थे बल्कि वे तो बिना कारण जुल्म करने वालों के भी विरुद्ध थे, जिनको परमात्मा द्वारा दंड मिलने में देरी हो गई लगती थी। वे केवल देश-सेवा की भावना से जंग में जूझे थे, जिसकी भावना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उनके मन में जगाई थी। जब एक बार जंग छिड़ गई तो फिर वे पीछे हटने वाले नहीं थे, बल्कि शत्रु के हल्ले से पहले चोट मारने में अपना बचाव समझते थे। उनका जंगी नज़रिया बेहद यथार्थवादी था। वे सारे उतराव-चढ़ाव देखे बिना लड़ाई में नहीं कूदते थे। जैसा मौका होता वे जंग में डट जाते या पीछे हट जाते थे। वे कम से कम नुकसान में ज्यादा से ज्यादा सफलता प्राप्त करने का प्रयत्न करते थे। चाहे सिंघों के पास जंग का सामान बहुत कम होता था तथा मुगल हकूमत के मुकाबले में आटे में नमक के समान भी नहीं था, फिर भी जो सफलता उनको प्राप्त हुई उसका कारण बाबा बंदा सिंघ बहादुर की बहादुरी तथा फुर्ती ही थी, जिसको सिंघों की अजित स्प्रिट तथा अडोल बहादुरी से सहायता

मिलती थी। इनके पीछे वह ताकत तथा दृढ़ता काम कर रही थी जो केवल धर्म, नीयत की पवित्रता तथा निष्काम देश-सेवा के जज़्बे से ही प्राप्त होती तथा टिकी रह सकती है। जब कभी बड़ी मुसीबत तथा विपत्ति भी आ गई, उनको दुख तथा निराशा ने बलहीन नहीं किया बल्कि वे हर हाल में चढ़दी कला में रहे।

सरहिंद पर हमला करने से पहले बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने जंगी नुक्ता-निगाह से कीरतपुर साहिब की तरफ से विजय प्राप्त करते आ रहे सिक्ख जत्थे का इंतज़ार करना उचित समझा। सिंघों का एक अन्य जत्था खरड़-बनूड़ के मध्य बाबा बंदा दिंघ बहादुर के जत्थे में शामिल हो गया था। इससे सिंघों की ताकत और बढ़ गयी थी। सिंघों ने सरहिंद से १२ कोस की दूरी पर चप्पड़चिड़ी के मैदान के पास डेरे डाल लिए। चप्पड़चिड़ी शब्द 'छपड़ झिड़ी' से बदलकर बना है। यह गांव खरड़ से बनूड़ को जाते हुए रास्ते में पड़ता है। इस गांव के एक मैदान के पश्चिम की ओर बड़े-बड़े टीले थे तथा पूरब की तरफ एक बड़ा तालाब और दक्षिण की तरफ वृक्षों के झुंड की झिड़ी थी। यह यात्रियों के आराम करने हेतु बहुत अच्छी जगह थी। यहां यात्रियों के आराम करने के लिए छांव तथा पानी, पशुओं के लिए चारा आदि सब कुछ था।

दूसरी तरफ वज़ीर ख़ान ने पूरे ज़ोर-शोर से जंगी तैयारी आरंभ की हुई थी। वज़ीर ख़ान ने चालाकी से सुच्चा नंद के भतीजे गंडा मल्ल को बाबा बंदा सिंघ बहादुर की फौज में मिल जाने के लिए भेज दिया ताकि जब समय आए तो वो भाग जाए, जिससे सिंघों के हौसले पस्त हो जाएंगे। उसने पड़ोसी रियासतों से मदद हेतु सेना बुला ली थी और मुसलमानों में जेहाद का नारा लगाकर सिंघों के विरुद्ध डट जाने का आदेश दे दिया। जंग के मैदान में जाकर एक तरफ वज़ीर ख़ान ने मुहारत-प्राप्त तोपखाने की सेना दीवार की तरह खड़ी कर दी। दूसरी तरफ कतारों में हाथी खड़े कर दिए। तीसरी ओर नवाब तथा वज़ीरों की फौज रहिकले, जंबूरे आदि तैनात कर पूरे जंगी नुक्ता-निगाह से तैयार-बर-तैयार खड़ी कर दी। वज़ीर ख़ान खुद ऊंचे हाथी पर चढ़कर फौज को दिशा-निर्देश दे रहा था।

दूसरी तरफ बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने चुनिंदा सिक्ख योद्धाओं को जंगी नुक्ता-निगाह समझाकर सिक्खों के अलग-अलग जत्थे तैयार कर दिए। पहले जत्थे में मालवा क्षेत्र के सिंघ थे, जिनकी जत्थेदारी भाई फ़तहि सिंघ, भाई करम सिंघ, भाई धरम सिंघ तथा भाई आली सिंघ कर रहे थे। दूसरा जत्था मझैल सिंघों का था जिसकी अगुआई भाई बिनोद सिंघ, भाई बाज़ सिंघ, भाई राम सिंघ, भाई शाम सिंघ कर रहे थे। कुछ व्यक्ति, जो लूटमार करने की मंशा से सिक्खों की फौज में मिले थे, बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने उनकी निशानदेही कर उनको मालवा तथा माझा क्षेत्र के सिंघों के जत्थे में बांट दिया ताकि वे किसी प्रकार की चालाकी न कर सकें।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने ऊंची जगह पर मोर्चा बनाकर दुश्मन की फौज की जंगी तैयारी का अंदाज़ा लगाया। सिंघों ने शाही फौज के तोपचियों को बारूद भरने से पहले ही जा दबोचा। तोपचियों को तीरों का शिकार बनाकर खत्म कर दिया तथा शेष को तेग की भेंट चढ़ा दिया। इसके आगे हाथियों की दीवार थी। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ज्यादा समय जंगलों में विचरण करते रहे थे, इसलिए पशु-पक्षियों के स्वभाव से अच्छी तरह से वाकिफ़ थे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के दिशा-निर्देशों के अनुसार सिंघों ने

हाथियों की सूंड़ पर ज़ोरदार आक्रमण किया जिससे हाथी घबराकर पीछे की ओर भाग खड़े हुए और अपनी ही सेना का नुकसान करने लगे। इस मौके पर सुच्चा नंद का भतीजा गंडा मल्ल अपने साथियों सहित मैदान में से भाग निकला तथा शोर मचा दिया कि भाग जाओ! इसके साथ लूटमार की मंशा से आए नौजवान भी भाग निकले। इससे वज़ीर ख़ान का पलड़ा भारी हो गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर अपने सिंघों को हौसला देने हेतु झट से मोर्चे में से निकल आए तथा सिंघों की पहली कतार में आकर वज़ीर ख़ान को ललकारने लग पड़े। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के मैदान में आ जाने के कारण सिंघों के हौसले और भी बुलंद हो गए तथा वे दुश्मन फौज पर बिजली की तरह टूट पड़े। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने गुरु जी द्वारा बख़्शे एक तीर को चिल्ले पर चढ़ाकर छोड़ा तो सिंघों ने 'सति श्री अकाल' के जैकारों से आसमान गुंजा दिया। सिंघों के जबरदस्त आक्रमण के आगे शाही सेना के पांव उखड़ गए। मलेटकोटला के शेर मुहम्मद ख़ान तथा ख्वाज़ा ख़ान दोनों ही सिंघों के हाथों कत्ल हो गए। उनके धरती पर गिरते ही शाही सेना भाग खड़ी हुई। मलेरकोटलियों का सारा मोर्चा सिंघों के हाथ आ गया। दूसरी तरफ गाजियों का भी यही हाल था। सिंघ अब पूरे जोश से वज़ीर ख़ान के मोर्चे की ओर बढ़े। एक तरफ से भाई बाज़ सिंघ तथा दूसरी तरफ से भाई फ़तहि सिंघ ने हल्ला बोला। इस लड़ाई में वज़ीर ख़ान मारा गया।

सिंघ विजित होकर सरहिंद में दाख़िल हुए। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सरहिंद पर खालसा राज्य का परचम फहरा दिया। भाई बाज़ सिंघ को सरहिंद का सूबेदार तथा भाई आली सिंघ सलौदी को नायब सूबेदार स्थापित कर सारा प्रबंध उनके हवाले कर आप अगली मुहिम पर चल पड़े।

सरहिंद की जंग के सम्बंध में बहुत सारी पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही बातें उस समय के सिंघों के जोश की गाथाएं बयान करती हैं। इसी के तहत प्रचलित है कि सरहिंद की जंग से एक दिन पहले भाई राज सिंघ का विवाह सुंदरगढ़ के नंबरदार स. गोपाल सिंघ की सुपुत्री सवदेश कौर के साथ हुआ था। लगभग आधी रात को अचानक उनके घर के सामने वाले चौक में नगाड़ा बजने की आवाज़ सुनाई दी। भाई राज सिंघ भी गांव के अन्य आदमियों के साथ चौक में आ गया। नगाड़े वाला ऊंचे स्वर में कह रहा कि दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा भेजे गए जत्थेदार बाबा बंदा सिंघ बहादुर द्वारा सारी जनता को सूचित किया जाता है कि सरहिंद का अत्याचारी सूबेदार वज़ीर ख़ान अपने हज़ारों सैनिकों सहित हमला करने के लिए इलाके की ओर तेजी से आ रहा है। बाबा बंदा सिंघ बहादुर का आदेश है कि अपनी मातृ-भूमि तथा अपने धर्म की रक्षा हेतु सारे नौजवान अस्त्र-शस्त्र लेकर कल सूरज चढ़ने तक चप्पड़चिड़ी के मैदान में पहुंच जाएं। मुनादि सुनते ही सभी नौजवानों के चेहरे तमतमाने लगे तथा उनमें से ज्यादातर नौजवान युद्ध-क्षेत्र में जाने की तैयारी करने लगे। भाई राज सिंघ ने भी मुनादि सुनी और तेग उठाकर उसकी धार को पत्थर पर घिसकर तीखा करने लगा। उसकी मां ने यह सब कुछ देखकर उसे रोकने की कोशिश की और कहा, "पुत्र! अभी कल ही तो तेरा विवाह किया है। अभी तो हमारे दिल के चाव भी पूरे नहीं हुए और तू यह क्या करने जा रहा है?" मां के शब्द सुनकर भाई राज सिंघ एकदम बहक गया और अपनी मां को बीस वर्ष पहले घटित हुई घटना से अवगत करवाने

लगा जब उसका पिता भी इसी तरह अपने फर्ज़ों की पालना के लिए युद्ध-क्षेत्र में रवाना हुआ था और फिर कभी वापिस नहीं आया था। मां ने अपनी आंखों से आंसू पोंछे और पुत्र को आशीर्वाद दिया कि "अपने धर्म एवं अपनी मातृ-भूमि की रक्षा हेतु अगर प्राण भी न्यौछावर करने पड़े तो पीछे मत हटना। आज मैं खुद को भाग्यशाली समझती हूं कि मुझे तेरे जैसा पुत्र मिला है। जा बेटा, जा! दस गुरु साहिबान का आशीर्वाद तेरे साथ है।" इतना कहकर मां अपने कमरे में चली गयी। भाई राज सिंघ ने अपनी पत्नी सवदेश कौर को अपने युद्ध में जाने की बात बताई। सवदेश कौर ने अपने पति की भावनाओं को समझते हुए उसको धर्म-युद्ध में जाने की आज्ञा दे दी तथा उसके अंतर में भी दुश्मनों का नाश करने वाली चंडी जाग उठी। उसने अपने पति से कहा कि "मैं बहुत भाग्यशाली हूं जिसको आप जैसा बहादुर पति मिला है।" तेग उठाकर माथे पर लगाते हुए अपने पति को पकड़ा दी।

अगले दिन चप्पड़चिड़ी के मैदान में बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा सूबा सरहिंद वज़ीर ख़ान की फौज में घमासान युद्ध हो रहा था। युद्ध में भाई राज सिंघ अपनी बहादुरी के जौहर दिखा रहा था। उसके साथ ही एक सत्रह-अठारह वर्षीय नौजवान सैनिक परछाई की तरह उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर दुश्मनों का नाश कर रहा था। उसने तीन बार भाई राज सिंघ की ओर आ रहे नेज़ों तथा तीरों को अपनी ढाल से रोककर उसकी जान बचाई। कुछ समय बाद दुश्मनों के पांव पूरी तरह से उखड़ गए। शाही सेना पीछे हटती हुई सिक्ख सैनिकों पर नेजे तथा तीरों के वार करती जा रही थी। एक तीर बड़ी तेजी से भाई राज सिंघ की ओर आया जिसको उस नौजवान ने रोकने की कोशिश की पर वह तीर भाई राज सिंघ के लगने की बजाए उस नौजवान की छाती बींध गया। बुरी तरह से ज़ख़्मी नौजवान जैसे ही धरती पर गिरा तो उसके मुंह और सिर पर बंधा कपड़ा उतर गया और उसने भाई राज सिंघ को संबोधित होकर कहा, "स्वामी, अब मुझे विदा करो। गुरु महाराज आपकी रक्षा करें, वह नौजवान अन्य कोई नहीं बल्कि सवदेश कौर थी। यह कहते हुए उस बहादुर सिंघणी ने सदा के लिए आंखें मूंद लीं।

इस गाथा से हमें यह ज्ञात होता है कि देश की बहादुर औरतों ने भी ज़ालिम राज्य को खत्म करने हेतु बाबा बंदा सिंघ बहादुर का साथ दिया। यह अद्वितीय मिसाल है।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सरहिंद विजय के पश्चात ज़ालिमों को चुन-चुनकर मारा। हकूमत की छत्र-छाया तले सुच्चा नंद इस तरह के जुल्म कर रहा था कि उसने सिक्खों के हाथों मारे जाने को किए का फल बताया। मुहम्मद कासिम 'इबरतनामा' में लिखता है, "मैंने आस-पास के भरोसेयोग्य लोगों से सुना है कि शहीद (वज़ीर ख़ान) की हकूमत के दिनों में कौन-सा जुल्म ऐसा था जो इस अन्यायी (सुच्चा नंद) ने गरीबों पर न किया हो तथा फसाद का कौन-सा बीज था जो इसने अपने लिए न बोया हो जिसका फल इसको प्राप्त हुआ है।"

इतनी भयानक जंग करने के बाद बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने किसी मस्जिद को नुकसान नहीं पहुंचाया। वे धर्म-विरोधी नहीं थे। वे तो सिर्फ जुल्म तथा ज़ालिमों के विरोधी थे, क्योंकि सिक्ख जुल्म तथा अत्याचार को खत्म करना धार्मिक साधना का विलक्षण अंग समझते हैं।

*क्रमश: . . .*

# लासानी शहीद बाबा बंदा सिंघ बहादुर

*-स. सुरजीत सिंघ**

बाबा बंदा सिंघ बहादुर का जन्म १६ अक्तूबर, सन् १६७० में कश्मीर रियासत के ज़िला पुंछ के राजौरी नामक स्थान पर हुआ था। आपके पिता का नाम श्री रामदेव भारद्वाज था जो एक राजपूत किसान परिवार से सम्बंधित थे। बाबा जी के बाल्यकाल का नाम लछमण दास था। आपकी आयु अभी १५ वर्ष की थी कि एक दिन शिकार खेलते समय एक गर्भवती हिरणी का शिकार हो जाने पर हिरणी ने पेट में पल रहे (अजन्मे) बच्चों सहित आपके सामने तड़प-तड़पकर प्राण त्याग दिए, जिससे आपके हृदय को गहरा आघात पहुंचा। विचलित और दुखी लछमण दास का मानो जीवन ही परिवर्तित हो गया और उसने घर-परिवार छोड़कर एकांतवास में रहते हुए वैराग्य धारण कर लिया। लछमण दास वैरागी साधु जानकी प्रसाद को अपना गुरु धारण कर वैरागियों के टोले में जा मिला। अब उसका नाम बदलकर माधोदास हो गया। विभिन्न स्थानों का भ्रमण करते-करते माधोदास ने महाराष्ट्र के नांदेड़ नामक स्थान पर गोदावरी नदी के किनारे शांत व एकांत, सुंदर स्थान पर अपना आश्रम स्थापित कर लिया।

दक्षिण दिशा की यात्रा के समय नांदेड़ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की माधोदास के साथ उसके आश्रम पर मुलाकात हुई। माधोदास गुरु जी की दिव्यता, तेजस्व, शक्ति, आध्यात्मिकता से इतना अधिक अभिभूत हुआ कि सब कुछ भूलकर गुरु जी की शरण में नत्मस्तक हुआ और निवेदन करने लगा, "हे प्रभु! मैं आपका ही बंदा हूं, जो पूर्णतया सेवा में समर्पित हो चुका हूं, इसलिए कृप्या मुझे अपना सिक्ख बना लीजिए।" गुरु जी ने ३८ वर्षीय माधोदास को अमृत-पान कराकर, सिंघ सजा उसका नाम 'बंदा सिंघ' रख दिया और 'बहादुर' की उपाधि से सम्मानित किया। मुगल हकूमत से टक्कर लेने के लिए हर पक्ष से सक्षम हो जाने पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उन्हें खालसा फौज का जत्थेदार बनाकर पंजाब के लिए रवाना किया।

"पंथ प्रकाश" के अनुसार बाबा बंदा सिंघ बहादुर को एक केसरी ध्वज, एक नगाड़ा, पांच तीर गुरु जी ने बख्शिश स्वरूप प्रदान कर सलाहकारों के रूप में पांच सिंघ-- भाई विनोद सिंघ, भाई काहन सिंघ, भाई बाज़ सिंघ, भाई दया सिंघ एवं भाई रण सिंघ के अतिरिक्त कुछ अन्य सिक्ख शूरवीरों को साथ कर दिया। गुरु जी ने अपने प्रमुख सिक्खों के नाम बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सहायता करने के आदेशस्वरूप लिखे "हुकमनामे" प्रदान कर आशीर्वाद देते हुए बाबा जी को पंजाब की ओर रवाना कर दिया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर अभी रास्ते में ही थे कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ज्योति-जोत समा गए। दिल्ली पहुंचकर बाबा जी ने गुरु जी द्वारा सहायतार्थ लिखे हुकमनामे प्रमुख सिक्खों को भेज दिए। हुकमनामे प्राप्त होते ही बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में केसरी ध्वज तले हर तरफ से सिक्ख जत्थे पहुंचने लगे, जिनकी संख्या कुछ

*५७-बी, न्यू कालोनी, गुमानपुरा, कोटा-३२४००७ (राज.); फोन : ९४१३६-५१९१७

समय में ही ४००० घुड़सवार और ८००० पैदल तक पहुंच गई।

दिल्ली से कूच करते ही बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सोनीपत और कैथल पर विजय प्राप्त कर खालसाई निशान झुला दिए। बाबा जी के साथ खालसा फौज की संख्या लगातार बढ़ती हुई ४०००० तक जा पहुंची, जिसमें कुछ संख्या हिंदू एवं मुसलमान सैनिकों की भी थी। इसके बाद खालसा फौज ने समाणा पर आक्रमण कर दिया। भयानक युद्ध में बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने समाणा का इलाका मुगलों से जीत लिया। इसी प्रकार घुड़ाम, ठसका, मुस्तफाबाद, कपूरी इत्यादि पर विजय प्राप्त करते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादुर साढौरा की ओर बढ़ गए। साढौरा पर जीत दर्ज कर खालसा फौज छत बनूड़ की ओर अग्रसर हुई। अब तक मालवा और माझा क्षेत्र से अनेक सिक्ख जत्थे बाबा जी के साथ आ मिले थे। छत बनूड़ पर जीत प्राप्त करने के उपरांत बाबा बंदा सिंघ बहादुर अपने मुख्य उद्देश्य सरहिंद के बहुत निकट पहुंच गए थे।

स्मरणीय है कि सरहिंद वह स्थान है जहां पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के छोटे साहिबज़ादे-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी और बाबा फ़तहि सिंघ जी को मुगल सूबेदार वज़ीर ख़ान ने दीवार में ज़िंदा चिनवाकर शहीद कर दिया था।

शहादत की दीवानी खालसा फौज ने सरहिंद से १० मील दूर चप्पड़चिड़ी नामक स्थान पर मोर्चा संभाल लिया। खालसा फौज और वज़ीर ख़ान की अगुआई में मुगल सेना के बीच घमासान युद्ध छिड़ गया। वज़ीर ख़ान मारा गया और मुगल सेना अपना जानी-माली नुकसान करवाकर भाग खड़ी हुई। खालसा फौज ने सरहिंद में प्रवेश कर उसे पूरी तरह से अपने अधीन कर लिया। वज़ीर ख़ान का मंत्री सुच्चा नंद, जिसकी छोटे साहिबज़ादों को शहीद करवाने में विशेष भूमिका रही थी, की पूरी हवेली को मलबे के ढेर में परिवर्तित कर दिया गया।

जनसाधारण की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादुर जीते हुए इलाकों में राज्य प्रबंध की व्यवस्था भी करते चले जा रहे थे, जिसका उद्देश्य स्वतंत्र सिक्ख राज्य की स्थापना था। सिक्ख राज्य की स्थापना हेतु बाबा जी ने साढौरा और नाहन के बीच स्थित मुखलिसगढ़ को 'लोहगढ़' का नाम दे राजधानी बनाया। यहां से बाबा जी ने श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर सिक्ख राज्य की मुहरें एवं सिक्के जारी किए।

विजय का क्रम निरंतर जारी रखते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सहारनपुर, ननोता आदि शहरों पर कब्ज़ा जमा लिया। मलेरकोटला पर आक्रमण के समय शहर को किसी प्रकार की कोई क्षति नहीं पहुंचे इसका विशेष ध्यान रखा गया था क्योंकि मलेरकोटला के नवाब शेर मोहम्मद ख़ान ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के छोटे साहिबज़ादों की शहादत का प्रतीकात्मक कड़ा विरोध किया था। अब बाबा बंदा सिंघ बहादुर पश्चिम की ओर बढ़ते हुए जलालाबाद, जलंधर, रियाड़की आदि शहरों को जीतते हुए लाहौर के समीप आ पहुंचे। इस प्रकार लगभग संपूर्ण पूर्वी पंजाब में अब सिक्ख राज्य की स्थापना हो चुकी थी। लोहगढ़ के किले को पूरी तरह से फौजी कार्यवाही हेतु तैयार कर दिया गया, जहां बाबा बंदा सिंघ बहादुर दरबार लगाकर गुरु-आज्ञानुसार जनता के दुख-दर्द सुन उनका शीघ्र निराकरण करने का प्रबंध किया करते थे। जागीरदारी-प्रथा का उन्मूलन करते

हुए भूमि जोतने वाले किसानों को ही भूमि का मालिकाना अधिकार दिलाना बाबा जी की पंजाब को प्रमुख देन थी जिस कारण पंजाब की अर्थ व्यवस्था में अपेक्षाकृत अधिक सुधार आया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने कलानौर और बटाला पर भी जीत दर्ज कर कब्ज़ा जमा लिया।

निरंतर विजय हासिल करने वाले बाबा जी एवं उनके सिक्ख शूरवीर सैनिक गुरदास नंगल की कच्ची गढ़ी में मुगल सेना के घेरे में आ गए। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सिक्ख सैनिक मुगल सेना का डटकर मुकाबला करते रहे। मुगल सेना द्वारा गढ़ी की लंबे समय तक सख़्त घेराबंदी की गई, जिससे बाबा बंदा सिंघ बहादुर के पास राशन एवं गोला-बारूद धीरे-धीरे समाप्त होता चला गया। सिंघों द्वारा कई दिनों तक भूखे-प्यासे ही मुकाबला किया गया। शाही मुगल सेना ने गुरदास नंगल की गढ़ी पर कब्ज़ा जमा लिया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के साथ ७०० से अधिक सिक्ख शूरवीरों को बंदी बना कर लाहौर लाया गया। लाहौर से अति दयनीय एवं दिल दहला देने वाली स्थिति में जुलूस के रूप में मुगल सेने के घेरे में दिल्ली लाया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को लोहे की जंज़ीरों से जकड़े हुए लोहे के पिंजरे में बंद कर हाथी पर सवार कर रखा हुआ था।

मुगल हकूमत द्वारा भूखे-प्यासे सिक्ख शूरवीर बंदियों को शहीद किए जाने का काम प्रारंभ किया गया, जिसके अनुसार प्रतिदिन १०० सिक्ख शूरवीर बंदी क्रूरता स्वरूप शहीद किए जाने लगे। यह शहीदी सिलसिला कई दिनों तक जारी रहा।

सबके आखिर में बाबा बंदा सिंघ बहादुर एवं उनके ४ वर्षीय पुत्र बाबा अजै सिंघ को शहीदी स्थल पर लाया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर पर मुगल हकूमत द्वारा दबाव बनाया गया कि वे या तो इस्लाम धर्म कबूल कर लें अन्यथा लोमहर्षक शहीदी के लिए तैयार हो जाएं। बाबा जी के सिक्खी के प्रति अडिग विश्वास एवं दृढ़ निश्चय को किसी भी प्रकार का भय एवं लालच डिगा न सका और उन्होंने शहीदी का मार्ग स्वीकार किया। क्रूर यातनाओं की श्रृंखला में पहले उनके सुपुत्र बाबा अजै सिंघ को उनकी आंखों के सामने शहीद कर उसका धड़कता हुआ कलेजा जबरन बाबा बंदा सिंघ बहादुर में मुंह में ठूंसा गया। बाबा जी फिर भी विचलित न हुए। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की लासानी शहादत के असहनीय दृश्य के बारे में प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. गंडा सिंघ ने अपनी पुस्तक "बंदा सिंघ बहादुर" (पृष्ठ २३३-३४) में लिखा है-- "पहले जल्लादों ने छुरे की नोंक से उनकी दाईं आंख निकाली, फिर बाईं आंख निकाली। इसके पश्चात् उनका बायां पांव काट दोनों हाथ शरीर से अलग कर दिए गए। सुलगती लाल सुर्ख गर्म सलाखों से बाबा जी का अंग-अंग नोचकर बोटी-बोटी शरीर से अलग किया गया। अंत में शीश काटकर उनका शरीर टुकड़े-टुकड़े कर शहीद कर दिया गया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की अद्वितीय हृदय विदारक शहादत को मुस्लिम इतिहासकार खाफी ख़ान ने स्वयं अपनी आंखों से देखा। वो अपनी पुस्तक 'मुताबिक-उल-लबान' में लिखता है-- "बहुत कुछ ऐसा खौफ़नाक घटित हुआ जिस पर चश्मदीद गवाह के अतिरिक्त कोई और शायद विश्वास न कर सके। इस वास्तविकता से कोई भी इतिहासकार इन्कारी नहीं हो सकता कि असहनीय व अकहनीय कष्ट देने के अतिरिक्त सुलगते हुए लाल गर्म जंबूरों से बाबा बंदा सिंघ बहादुर के शरीर से मांस नोचा गया।"

*(शेष पृष्ठ ४२ पर)*

# हर मैदान फ़तहि करने वाले बाबा बंदा सिंघ बहादुर

*-डॉ. कुलदीप कौर**

विश्व के इतिहास में ऐसी शख़्सियतें बहुत ही कम दिखाई देती हैं जिन्होंने अपने कारनामों से इतिहास का रुख ही मोड़ दिया हो। सिक्ख इतिहास या पंजाब के इतिहास में अठारहवीं सदी सिक्खों के लिए संघर्ष की सदी थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपना सरवंश न्यौछावर करके ज़ब्र एवं जुल्म का निर्भयता से सामना किया। सिक्खी को केशों-श्वासों संग निभाते हुए कोई भी गुरसिक्ख अपने धर्म-कर्म से न डगमगाया। देश एवं धर्म के लिए मर-मिटने का शौक, सहर्ष शहीदी प्राप्त करना तथा वक्त की हकूमत से हक-सच की खातिर लोहा लेना सिक्खों की महान विरासत है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ज्योति-जोत समाने के बाद लगभग आठ वर्ष (१७०८-१७१६ ई.) का समय बाबा बंदा सिंघ बहादुर का समय था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर सिक्ख इतिहास की वो शमां है जो खालसा राज्य स्थापित करने की अद्भुत गौरव-गाथा को कयामत तक रोशनी प्रदान करती रहेगी। वैसे यह कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के खंडे-बाटे के अमृत का है जिसने एक त्यागी, वैरागी व्यक्ति को बेखौफ़ एवं जांबाज़ शूरवीर में परिवर्तित करने का आश्चर्यजनक काम कर दिखाया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने थोड़े ही (लगभग डेढ़ वर्ष) समय में चढ़ते पंजाब में से मुगल राज्य का सफाया कर दिया और देश में स्वतंत्रता का खालसाई परचम लहरा दिया। मुगल साम्राज्य के अत्याचारों का जलजला बाबा बंदा सिंघ बहादुर के धैर्य, दृढ़ता एवं साहस के सामने शांत हो गया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर जहां भी गए तूफान की तरह गए। जिस शहर को भी उन्होंने घेरा, देखते ही देखते वो खंडहर के रूप में बदल गया। मुगल राज्य का सदियों से स्थापित सरहिंद नगर बाबा बंदा सिंघ बहादुर के आक्रमण से दहल उठा। गिरफ्तार हो जाने के बाद जब उनकी शहादत हुई तो शहादत भी ऐसी कि सब ने दांतों तले उंगली दबा ली। न खुद की परवाह, न परिवार की और न ही मासूम पुत्र की। यदि परवाह थी तो केवल गुरु के नाम की और अपने सिक्खी सिदक की।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर के जीवन का सही मूल्यांकन करने के लिए आवश्यक है कि हम उन्हें केवल गुरु का सिक्ख मानकर चलें। सिक्ख रहित में आने से पूर्व वे क्या थे, इसके साथ सिक्ख इतिहास का कोई सम्बंध नहीं। किसी व्यक्ति के सिक्ख बनने पर, उसके खालसा सजने पर (अमृत छकने के पश्चात) उसका पहले का जीवन समाप्त होकर नया जीवन शुरू होता है। इस बात को कुल-नाश, धर्म-नाश, कर्म-नाश कहा जा सकता है। अमृत छकने के बाद अमृतधारी इंसान के नाम के साथ 'सिंघ' या 'कौर' शब्द लगाकर उसे नया रूप प्रदान किया जाता है। खालसा पंथ की सृजना के समय अमृत छकने के बाद पांच प्यारों का पहला जीवन खत्म होकर नया जीवन शुरू हुआ था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर भी अमृत छकने के बाद केवल गुरु का

**एसोसिएट प्रोफेसर, माता साहिब कौर गर्ल्स कॉलेज, तलवंडी साबो (बठिंडा)-१५१३०२*

खालसा थे। उनका 'बंदा' नाम भी इस बात का सूचक था कि वे केवल 'गुरु के बंदे' थे।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर जिस प्रकार तूफान की भांति पंजाब में आए थे और जिस प्रकार उन्होंने पंजाब की मुगल हकूमत को देखते ही देखते मलियामेट कर दिया था, उस तरह का काम कोई अति प्रशिक्षित जंगी जरनैल ही कर सकता है। उनको युद्ध-नीति, देश की राजनीति तथा उत्तरी भारत की भूगौलिक स्थिति का गहरा अध्ययन था। उनके द्वारा लिए गए राजनीतिक निर्णय दर्शाते हैं कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ भी थे।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सीधे दिल्ली या सरहिंद पर हमला नहीं किया और न ही लाहौर पर। बाबा जी ने सर्वप्रथम सरहिंद के बाहुबल-- समाणा, घड़ाम, साढौरा, बनूड़ आदि को फ़तहि किया। बाबा जी के सामने केवल अपने गुरु का ही मिशन था। जिस जगह के भी हाकिम ने गुरु-घर के साथ ज्यादती की, बाबा जी ने उसे सलामत नहीं रहने दिया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर सुयोग्य एवं कुशल राज्य-प्रबंधक थे। उनका उद्देश्य खुद राज्य-प्रबंध संभालना नहीं था बल्कि निपुण सिक्खों को इसकी बागडोर प्रदान करना था। इसमें कोई संदेह नहीं कि उनके अधीन सिक्ख राज्य बहुत कम समय के लिए रहा मगर इसकी महत्ता बहुत ज्यादा थी।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर का एक बड़ा एवं प्रशंसनीय कार्य जमींदारी-प्रथा को खत्म करना था। यह भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में भी पहली बार हुआ जब बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने जमींदारी-प्रथा के अवगुणों को खत्म करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने ज़मीन जोतने वाले को ही ज़मीन का असली हकदार स्वीकार किया। जागीर एवं जागीरदारों को खत्म करने का प्रारंभिक काम बाबा जी ने ही किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के इस महावाक *"इन गरीब सिक्खन को देऊं पातशाही"* को व्यवहारिक रूप में प्रसारित करने का सेहरा बाबा जी को ही जाता है। डॉ. गंडा सिंघ के अनुसार, "यह बाबा बंदा सिंघ की जीत के कारण ही था कि पंजाबियों ने पहली बार सदियों बाद आज़ादी का स्वाद चखा। बेशक (बाबा जी के) चालीस वर्ष बाद सिक्खों ने लाहौर पर कब्ज़ा किया और सुलतान-उल-कौम स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को शहंशाह स्थापित किया, मगर इस राज्य की बुनियाद बाबा बंदा सिंघ रख गए थे।"

बाबा बंदा सिंघ बहादुर जब पंजाब में आए तो सभी सिंघों ने बाबा जी का भरपूर स्वागत किया। वे तन, मन, धन से बाबा बंदा सिंघ बहादुर के जत्थे में शामिल हुए और उनकी कमान तले युद्ध-भूमि में आकर वैरियों का संहार किया। यह गुरु जी का आशीर्वाद था, बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शक्ति थी, सिंघों का संगठन था कि अत्याचारी मुगलों का गढ़ माने जाते नगरों को खालसा फौज ने मिट्टी के ढेर बना दिया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर का चयन करने में दशमेश पिता की दूर दृष्टि का पता चलता है। वास्तव में गुरु साहिब भविष्य को भली-भांति जानते थे, जिन्होंने पंजाब से दूर दक्षिण (नांदेड़) में बैठे वैरागी एवं त्यागी व्यक्ति को सिक्ख संघर्ष का नेतृत्व करने के लिए चुना। गुरु जी के ज्योति-जोत समा जाने के मात्र दो वर्ष के भीतर सरहिंद पर खालसाई निशान (झंडा) फहरा देना और आठ सौ वर्ष पुरानी मुगल हकूमत को मलियामेट करके देशवासियों को आज़ादी की फिज़ा में सांस लेने योग्य बना देना गुरु जी के आशीर्वाद एवं बख़्शिश के बिना संभव नहीं था।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सिक्ख राज्य की सफलता के लिए प्रशासकीय मैदान तैयार

कर दिया था। बाबा जी ने सिक्खों में ऐसा साहस पैदा कर दिया कि सिक्ख अपना अलग राज्य दोबारा स्थापित करने में सफल रहे।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर सचमुच ऐसे अद्वितीय इंकलाब थे जो चाहे थोड़े समय के लिए ही आया मगर इसके दूरगामी प्रभाव आज भी देखे जा सकते हैं। शिरोमणि साहित्यकार डॉ. आतम हमराही की निम्नलिखित पंक्तियों में बाबा बंदा सिंघ बहादुर के युद्ध लड़ने के विलक्षण ढंग का प्रकटावा मिलता है :

*शहादतां दे इतिहास दा प्रभाती तारा*
*शकती दा अमोड़ झक्खड़*
*तूफ़ान, वरोला, लाट, भांबड़, बिजली, गरज, भूचाल*
*चप्पड़चिड़ी विचली सिक्ख सैनिक जुगतकारी दा मोढी*
*सुलतानी गवाह दी ज़लालत बणन नालों*
*शहादत नूं बिहतर समझिआ*
*सिक्खां नूं पहिली वार देश, राजधानी, झंडा,*
*फौज, सिक्का, मोहर ते बादशाहत बखशी*
*अंबाले 'च पंपूवाले थेह दे लागे लोहगढ़*
*सिक्खां दी पहिली राजधानी सी।*



## *लासानी शहीद बाबा बंदा सिंघ बहादुर*

*(पृष्ठ ३९ का शेष)*

स्वामी बी. सरस्वती ने अपनी पुस्तक 'बंदा सिंघ बहादुर' (पृष्ठ १६) में लिखा है कि "बाबा बंदा सिंघ बहादुर एक देश-भक्त था, एक अच्छा सिक्ख सैनिक व भारत की मुक्ति का जोशीला इच्छुक था। प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार मैकलेगर के अनुसार, "बाबा बंदा सिंघ बहादुर जरनैलों व योद्धाओं में सर्वश्रेष्ठ स्थान रखता था। उसका नाम ही पंजाब व पंजाब से बाहर मुगलों में दहशत फैलाने के लिए काफी था।"

इतिहासकार स. करम सिंघ ने अपनी पुस्तक 'बंदा सिंघ बहादुर' (पृष्ठ १९३) में लिखा है-- "बंदा सिंघ बहादुर इतना ज़ोरावर और फुर्तीला था कि तीर और खंजर के बिना अन्य कोई हथियार उसके मन को अच्छा नहीं लगता था। शक्तिशाली घुड़सवार तथा शरीर का हृष्ट-पुष्ट था और लगातार कई दिनों की मंजिलें भी उस पर असर नहीं डालती थीं।" इसी क्रम में मुस्लिम इतिहासकार मोहम्मद शफी अपनी पुस्तक 'मिरात-उल-वारदात' में लिखता है कि "शख़्सियत के धनी बाबा बंदा सिंघ बहादुर की चमकती हुई आंखें एवं तीव्र दृष्टि उसके दुश्मनों पर विशेष असर छोड़े बिना नहीं रहती थी।"



कविता

## गुरु-कृपा मिले

*हमें गुरु-कृपा मिले।*
*हमारी जीवन-ज्योति जले।*
*गुरु-शबद की छांव घनी,*
*जीवन बिगसे इसी तले।*
*कर्म प्राप्त हो जाए*
*गुरु-मर्यादा सफल फले।*
*मन अडोल किरत करे,*
*गुरमति वाली राह चले।*
*न रोग, न ही शोक,*
*निहचल जीवन-ज्योति जले।*

*-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, फोन : ९४१७१-७५८४६*

# स्वाभिमानी शूरवीर योद्धा भाई बाज़ सिंघ

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सिक्खों के गौरवशाली इतिहास में असंख्य सिक्ख शूरवीरों, बहादुर योद्धाओं, अमर शहीदों का वर्णन पढ़ने-सुनने को मिलता है। उनमें एक नाम अमर शहीद एवं स्वाभिमानी शूरवीर भाई बाज़ सिंघ का भी शामिल है।

भाई बाज़ सिंघ का जन्म मीरपुर पट्टी नामक स्थान पर हुआ था। उन्होंने दशम् पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से अमृत की दात प्राप्त की थी। गुरु जी ने नांदेड़ से जब बाबा बंदा सिंघ बहादुर को पंजाब में भेजा था, तब उनकी सहायता हेतु जिन पांच सिंघों को पांच प्यारों के रूप में उनके साथ भेजा था, उनमें भाई बाज़ सिंघ भी एक थे। शेष चार सिंघों के नाम थे-- भाई बिनोद सिंघ, भाई काहन् सिंघ, भाई दया सिंघ और भाई रण सिंघ।

सरहिंद पर विजय प्राप्त करने हेतु चप्पड़चिड़ी के युद्ध के दौरान बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सिंघों के दल की कमान भाई फ़तहि सिंघ, भाई करम सिंघ, भाई धरम सिंघ, भाई आली सिंघ तथा भाई शाम सिंघ को सौंपी हुई थी। एक ऊंचे टीले पर खड़े होकर भाई बाज़ सिंघ ने पूरे युद्ध के दौरान विरोधी सेना पर बाज़ जैसी पैनी दृष्टि जमाए रखी थी।

छोटे साहिबज़ादों को शहीद करवाने में मुख्य भूमिका निभाने वाले दुष्ट पापी सुच्चा नंद के भतीजे ने धोखे से सिंघों के दल में घुसकर भगदड़-सी मचा दी। यह देख भाई बाज़ सिंघ बाबा बंदा सिंघ बहादुर से आज्ञा ले तुरंत युद्ध के मैदान में आ डटे। सिंघों के हौसले और अधिक बढ़ गए। उन्होंने दुश्मनों को उनके हाथियों सहित पीछे धकेल दिया। घायल हाथी भाग खड़े हुए। इसी दौरान हाथों-हाथ यानि आमने-सामने हो रही लड़ाई के बीच वज़ीर खान ने रूबरू होकर भाई बाज़ सिंघ पर नेजे (भाले) द्वारा हमला करना चाहा। भाई बाज़ सिंघ ने फुर्ती से उसके हाथ से भाला छीन लिया और उसके घोड़े के माथे में घुसेड़ दिया। फिर वज़ीर ख़ान का एक तीर भाई बाज़ सिंघ की बाजू पर आ लगा तथा वह अपनी तलवार ले भाई बाज़ सिंघ को मारने हेतु आगे बढ़ा। उसी समय भाई फ़तहि सिंघ ने आगे आकर वज़ीर ख़ान को मौत के घाट उतार दिया। इस तरह सिंघों ने सरहिंद पर विजय (फ़तहि) प्राप्त की।

सरहिंद को नेस्तनाबूद करने के पश्चात् जब बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने अपने जीते हुए इलाकों की ओर ध्यान देना शुरू किया, तब उन्होंने भाई बाज़ सिंघ को सरहिंद का हाकिम नियुक्त किया और भाई आली सिंघ को उनका नायब बनाया। इसी प्रकार भाई बाज़ सिंघ के भ्राता भाई राम सिंघ को थानेसर (कुरुक्षेत्र) का हाकिम और भाई बिनोद सिंघ को उनका सहायक नियुक्त किया।

स्वाभिमानी शूरवीर भाई बाज़ सिंघ ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर के साथ मिलकर अनेक युद्धों में हिस्सा लिया और एक स्वतंत्र सिक्ख राज्य स्थापित करने में अपना योगदान दिया। उन्होंने मुगलों एवं पठानों से अपनी शूरवीरता

*(शेष पृष्ठ ५२ पर)*

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : +९१९८७२२-५४९९०*

# शेरे-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ का लासानी व्यक्तित्व

*-डॉ. जगजीत कौर**

दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खंडे बाटे की पाहुल दे मौत से जूझने वाले बेख़ौफ़ खालसा पंथ को जन्म दिया और उसे जन्म घुट्टी के रूप में 'राज करेगा खालसा' का संकल्प दे कुर्बानियों के राह पर चलना सिखाया। यह जांबाज़ कौम विजय पताका हाथ में पकड़े लगभग सौ साल संघर्ष करती, सिरों का दान करती, अनेकों यातनाओं को सहती मंज़िल की ओर बढ़ती गई और एक दिन शेरे-पंजाब, महाराजा रणजीत सिंघ के रूप में यह सपना साकार हुआ। पंजाब, गुरुओं की धरती पर सिक्ख राज्य की स्थापना हुई।

इतिहास साक्षी है कि सिक्खों के सिरों के मूल्य लगते रहे, उनकी खालें उतारी जाती रहीं, खौलते पानी की देगों में उबाला गया, समूह के समूह आबाल वृद्ध, स्त्री, पुरुषों समेत घल्लूघारों में उनका नरसंहार होता रहा परंतु खालसा चुप नहीं बैठा। समय, अवसर मिलते ही वह अपनी बिखरी शक्ति संगठित कर ज़ालिम सत्ता को मुंह तोड़ जवाब देता। महाराजा रणजीत सिंघ के जन्म के समय (१७८० ई) तक पंजाब में १२ शक्तिशाली मिसलें कायम हो चुकी थीं। इसमें शुकरचक्किया शक्तिशाली सिंघ सरदारों की मिसल थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज के समय अमृतपान कर सिंघ सजे सरदार बुड्ढा सिंघ इसी मिसल के थे। उनके पुत्र सरदार नौध सिंघ और पोते सरदार चढ़त सिंघ थे। महाराजा रणजीत सिंघ सरदार चढ़त सिंघ के पोते और शुकरचक्किया मिसल के जत्थेदार सरदार महां सिंघ के सुपुत्र थे। माता सरदारनी राज कौर थीं। सरदार महां सिंघ के घर सरदारनी राज कौर की कोख से महाराजा रणजीत सिंघ का जन्म १७८० ई में हुआ था। छोटी अवस्था में ही उन्होंने शस्त्र-संचालन में दक्षता हासिल कर ली थी और पिता सरदार महां सिंघ के साथ युद्धों में जाया करते थे। मात्र ग्यारह वर्ष की अवस्था में उनके पिता के अकाल चलाना कर जाने पर उन्हें १७९१ ई में अपनी मिसल का जत्थेदार घोषित कर दिया गया। ऐसे समय में, जबकि पंजाब की राजनैतिक व्यवस्था भी अव्यवस्थित थी, पंजाब का समूचा इलाका १२ मिसलों के अधीन था। लाहौर पंजाब की राजधानी थी, जो तीन सरदारों-- स. लहिणा सिंघ, स. गुज्जर सिंघ और स. सूबा सिंघ की भंगी मिसल के अधीन थी। सभी मिसलें और सरदार अपने-अपने इलाकों और हित, स्वार्थ की बात सोचते थे। शक्ति केंद्रित नहीं थी। इधर अफगानी हमले बराबर होते रहते थे। मरहट्टे भी पंजाब की ओर शक्ति अज़माइश करते रहते और अंग्रेजी ताकत की भी निगाह पंजाब पर लगी थी। सन् १७९५ ई में शाह जमान दुरानी ने पंजाब पर हमला बोल दिया था। सभी सिक्ख मोर्चे मैदानों से परे जंगली मोर्चों पर जा डटे थे। हलचल मची हुई थी। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में महाराजा ने बिखरी शक्ति को संगठित किया। अपनी बुद्धि, वैभव, सूझबूझ और अदम्य उत्साह एवं शौर्य-शक्ति से उन्होंने अपने लोगों में वह उत्साह और जोश भरा कि जाति-भेद, वर्ग-भेद को छोड़ क्या हिंदू और क्या मुसलमान, सभी संगठित होकर उनके नेतृत्व में विरोधियों के साथ लड़ने को तैयार हो गए। उन्होंने अनेक युद्ध किए और जीत पर जीत हासिल करते हुए एक विशाल अखंड पंजाब राज्य की स्थापना की। महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य की सीमाएं तिब्बत से सिंध और खैबर दर्रे से

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी.)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६*

सतलुज दरिया पार तक फैली थीं। लाहौर पर कब्ज़ा कर लेने से उसने अफगानी हमलावरों का मुंह हमेशा के लिए मोड़ दिया। इसके बाद खैबर दर्रा पार करने का और पंजाब की ओर आने का साहस उन्होंने कभी नहीं किया। ५ मई, १८३० ई को महाराजा रणजीत सिंघ ने मेजर लारेंस को जो कांगड़ा का प्रबंध सौंपा था और अपने विदेश मंत्री फकीर अजीजुद्दीन द्वारा उसे लिखित आदेश दिया था उसके अनुसार उनका राज्य चीन और अफगानिस्तान की हदों तक फैला हुआ था। (Adventure of an Officer in Punjab by Major Lawrence, London, 1846, P. 64) इतिहासकार जार्ज मार्शमैन का कथन है कि यदि बरतानवी राज्य-शक्ति ने उनका मार्ग न रोका होता तो उन्होंने नि:संदेह पूरे हिंदोस्तान में एक नई और शानदार शहंशाही कायम कर लेनी थी। *(हिस्ट्री ऑफ इंडिया, लंडन, १८५७, पृ ३९)*

विचारणीय तथ्य यह है कि विजय के सारे कारनामे महाराजा रणजीत सिंघ ने बहुत कम समय में मानव शक्ति का सदुपयोग करके पूरे किए। उनका सैन्य-संगठन और सैन्य-प्रशिक्षण, युद्ध-कौशल और लड़ाई करने का ढंग ऐसा होता था कि उसमें बहुत कम रक्त बहाया जाता, बहुत कम सेना का संहार होता। शत्रु पक्ष के पांव उखड़ जाते और वे मैदान छोड़ भागते नज़र आते। वे अत्यंत सूझबूझ वाले एवं युद्ध-कला में प्रवीण सेनानायक थे। इसीलिए बैरन चार्ल्स ह्यूगल (Baron Charles Hugel) कहता है, निश्चय ही यह जानकर अत्यंत आश्चर्य होता है कि एक अकेला व्यक्ति इतने बड़े साम्राज्य की स्थापना कैसे कर सका। जिन लोगों को वह साथ लेकर चल रहा था वे अशिक्षित और साधारण जाट बूट थे।" *(Travels in Punjab & Kashmir, 1970, P. 282)* ऐसा ही आश्चर्य कैप्टन मर्रे ने प्रकट किया था, जिसका ज़िक्र 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में स. रतन सिंघ भंगू ने किया था-- "छेलीअन मारे शेर किम् बटेरन मारे बाज। जट्टन मारे शाह किम् एह करमातहि काज।" *(हिस्ट्री ऑफ पंजाब, कैप्टन मर्रे, पृ १७५)* यहां पर महाराजा रणजीत सिंघ का कट्टर आलोचक हेनरी टी प्रिंसेप भी तारीफ किए बिना नहीं रहता कि महाराजा रणजीत सिंघ का शासन रक्तपात से हीन कम नरसंहार का था। "Stained by no bloody execution and by fewer crimes" *(Origin Of The Sikh Power In Punjab, P. 148)*

हालांकि महाराजा रणजीत सिंघ की फौजी ताकत बहुत मज़बूत थी। १८३८ ई के आंकड़ों के अनुसार उनकी सेना में ३८२४२ सैनिक थे। इनमें २९६१७ पैदल, ४०९० घुड़सवार, ४५३५ तोपची थे। इन पर प्रति माह ३७४१०१ रुपए खर्च होते थे। इन्हें नकद तनख्वाह दी जाती थी। महाराजा अपनी सेना की औलाद की तरह प्यार से देखभाल करते थे। प्रत्येक के दुख-सुख का ध्यान रखा जाता और सेना भी हर पल जान न्योछावर करने को मुस्तैद रहती। सेना को इस प्रकार से संगठन किया गया था कि पठान, तिब्बती, चीनी और बरतानवी सभी सिक्ख सेना से भयभीत रहते थे। उनके काबिल जरनैल स. हरी सिंघ नलवा, मोहकम चंद, दीवान चंद, राम दयाल आदि से शत्रु भयभीत रहते। उनकी सेना में हिंदू, मुसलमान, सिक्खों के अलावा यूरोपियन अफसर भी थे जिनकी संख्या लगभग ४०-४२ बताई जाती है। इनमें प्रसिद्ध अफसर वेंतुरा और ऐलर्ड थे।

ये सभी महाराजा रणजीत सिंघ के लिए प्रति पल इसलिए तत्पर रहते क्योंकि महाराजा की शासन नीति धर्म निरपेक्ष थी। यद्यपि महाराजा का जन्म, पालन-पोषण पूर्ण गुरमति वातावरण में हुआ था और वे तन-मन से गुरु को समर्पित धार्मिक विचारों के थे फिर भी वे अन्य धर्मों, मतों का सम्मान करते थे। उनके दरबार में स. धिआन सिंघ डोगरा प्रधानमंत्री था। विदेश मंत्रालय मुसलमान फकीर अजीजुद्दीन के पास था। दीवान सावण मल मुलतान का गवर्नर, मोती राम कश्मीर का था। डोगरा गुलाब सिंघ तथा स. चेत सिंघ ऊंचे पदों पर थे। सुल्तान मुहम्मद तोपखाने की देख-रेख करते थे। राजा दीना नाथ,

भवानी दास, मिसर बेली, दीवान गंगा राम कोषागार के इंचार्ज थे। धर्म निरपेक्ष योजनाबद्ध आर्थिक विकास नीति से सारी प्रजा प्रसन्न व खुशहाल थी। महाराजा रणजीत सिंघ अत्यंत दयालु और विनम्र स्वभाव के थे। वे किसी के साथ कठोर व्यवहार नहीं करते थे। चालीस साल के शासन में किसी एक को भी फांसी नहीं दी गई। कई बार कठोर जुर्म करने पर भी वे गलती का एहसास करा क्षमा कर दिया करते थे। वे स्वभाव से धार्मिक, विनम्र होने के कारण सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते थे।

सन् १८०१ ई में वैसाखी के दिन लाहौर किले में दीवान-ए-आम किया गया। शहर के सभी गुरुद्वारों में अखंड पाठ साहिब रखे गए। समूचे पंजाब से बड़े हाकिम पहुंचे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष अरदासा सोध ज्ञानी गुरमुख सिंघ और बाबा साहिब सिंघ ने महाराजा रणजीत सिंघ को महाराजगी के खिताब से निवाज़ा। "शेरे-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ" खिताब बख़्शिश किया गया। पुष्प-वर्षा हुई। महाराजा ने सबको खिल्लतें दीं। दान-पुण्य किया गया। इसी दिन महाराजा ने सिक्का चलाने का प्रबंध किया परंतु सिक्का उन्होंने अपने नाम से नहीं श्री गुरु नानक देव जी के नाम पर 'नानकशाही रुपिआ', 'नानकशाही पैसा' चलाया। इन सिक्कों के एक ओर श्री गुरु नानक देव जी, भाई मरदाना जी रबाब बजाते, कीर्तन करते अंकित थे, दूसरी ओर "गुरु नानक देव जी सहाए" लिखा था। कुछ सिक्कों पर था-- "देगो तेगो फ़तह ओ नुसरति बे-दिरंग। याफ्त अज नानक गुरू गोबिंद सिंघ।" सोने-चांदी के सिक्के शुद्ध सोने-चांदी के थे। शाही फरमान व चिट्ठी-पत्रों पर जो शाही मुहर लगाई जाती उस पर "ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ देगो तेगो फतह ओ नुसरति बे-दिरंग। याफ्त अज़ नानक गुरू गोबिंद सिंघ। श्री अकाल पुरख जी सहाए ॥" लिखा था छोटी मुहर पर "श्री अकाल सहाए रणजीत सिंघ" लिखा रहता। सोने की मोहरें भी चलाई गईं जो शुद्ध सोने की थीं। इनके एक ओर रुपया और दूसरी ओर तीन बार 'वाहिगुरु' 'वाहिगुरु' 'वाहिगुरु' लिखा रहता। पहले दिन जितने नानकशाही पैसे-रुपए टकसाल से निकले सभी धार्मिक स्थानों को दान दिए गए।

महाराजा रणजीत सिंघ अत्यंत धार्मिक वृत्ति के थे। श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर में उनके प्राण बसते थे। मंदिरों-मस्जिदों की उन्नति के लिए भी वे दिल खोलकर आर्थिक सहायता दिया करते थे। श्री हरिमंदर साहिब के प्रति वे इतने समर्पित थे कि जो बेशकीमती नायाब तोहफा देखते उसे तुरंत श्री हरिमंदर साहिब भेज देते। निज़ाम राज्य की ओर से उन्हें हीरे-मोती जड़ी सोने के काम वाली बेहद खूबसूरत चांदनी (शामियाना) दरबार के लिए भेंट की गई। उसकी शान देखते सार उन्होंने कहा कि यह चांदनी श्री हरिमंदर साहिब भेज दी जाए। यह श्री गुरु रामदास जी के दरबार की शोभा बढ़ाएगी। उनका फुर्सत का अधिकांश समय श्री हरिमंदर साहिब कथा-कीर्तन, सतसंग में गुज़रता था। श्री अमृतसर में एक बड़ा बाग उन्होंने श्री गुरु रामदास जी के नाम पर (राम बाग) लगवाया। एक किले का निर्माण करवाया और उसका नाम श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर 'गोबिंदगढ़' रखा। वे अपने नाम को नहीं गुरुदेव जी के नाम को प्रचारित करना चाहते थे। जब श्री हरिमंदर साहिब के गुंबदों पर सोना चढ़ाया गया तो सेवादारों ने दर्शनी दरवाज़ों पर "सेवा महाराजा रणजीत सिंघ ने करवाई" लिख दिया। महाराजा ने उसे हटवा दिया यह कहकर कि मैं कौन होता हूं सेवा करने वाला। लिखो, सतिगुरु जी ने मेहर करके अपने सेवक महाराजा रणजीत सिंघ से सेवा कराई। अब ऐसा ही लिखा है 'मूल मंत्र' के साथ कि यह सेवा महाराजा सिंघ साहिब रणजीत सिंघ जी पर दया करके कराई। घंटा घर के दोनों दरवाज़ों पर भी ऐसा ही लिखा हुआ है। महाराजा सदैव पंथ और सतिगुरु जी का बोलबाला चाहते थे। इतिहासकार गार्डन लिखता है कि जब भी वे जंग जीतकर आते तो कहते, "सतिगुरु जी ने फ़तहि बख़्शी है।" वे हमेशा कहते-- "अकाल

सहाए। रणजीत सिंघ के सिर पर सतिगुरु जी का अपना हाथ है।" वे नित्तनेमी, गुरबाणी कीर्तन सुनने वाले थे। उन्होंने जहां श्री अमृतसर और अन्य गुरुद्वारों की सेवा-संभाल की, गुरु-स्थानों के नाम जागीरें लगवाईं, वहां अन्य धर्मों के धार्मिक स्थानों की भी सार-संभाल के लिए उनके नाम जागीरें लगवा दीं। विनम्रता इतनी कि एक बार भूल हो जाने पर अकाली फूला सिंघ जत्थेदार ने जब उन्हें दंड सुनाया तो वे पीठ खोलकर कोड़े खाने को तैयार हो गए। 'तनखाहीआ' करार होने पर उन्होंने लंगर के बर्तन, झाड़ू, सफाई आदि की सेवा की। वे गुरु-घर से बेमुख नहीं होते थे।

महाराजा रणजीत सिंघ का व्यक्तित्व एक अद्वितीय तेजस्वी व्यक्तित्व था। यद्यपि बचपन में चेचक निकलने से उनकी एक आंख कुछ दब गई थी और रंग-रूप पर भी असर पड़ा था परंतु फिर भी उनका मुख-मंडल इतना तेजस्वी था कि दुरानी जैसे ज़ालिम उनके सामने खड़े नहीं हो सकते थे। ब्रिटिश सरकार के बड़े-बड़े अफसर उनसे आंख मिलाकर बात नहीं कर सकते थे। वे बेखौफ़ योद्धा थे। अटक जैसे दरिया के बाढ़ भरे उफान में वे घोड़े को एड़ी लगा मिनटों में पार हो गए थे। वे कहते थे अटक (दरिया) उनका रास्ता नहीं रोकता है। वो तो स्वयं अटक जाता है। महाराजा रणजीत सिंघ का रास्ता रोकने की बात किसी में नहीं थी। वे वक्त के पाबंद और वचन के पक्के थे। वे विद्वानों का आदर करते थे। वे विद्या-प्रेमी थे। उनके राज्य में चार हज़ार स्कूल थे। उच्च विद्या का प्रबंध था। विदेशी विद्वानों की देखरेख में योग्य विद्यार्थियों को चिकित्सा, इंजीनियरिंग एवं अन्य पेशेवर शिक्षाएं दी जाती थीं। वे कुशल शासक थे, अपनी प्रजा को प्यार करते थे। प्रजा को सख़्त सज़ा नहीं दी जाती थी। फांसी तो उनके राज्य में किसी एक को भी नहीं दी गई।

कहा जा सकता है कि महाराजा रणजीत सिंघ की खुलदिली, नम्र स्वभाव उनके अंतिम दिनों में उनके लिए उल्टा परेशानी साबित हुए। वे डोगरों पर ज़रूरत से ज्यादा विश्वास करते थे। सिंघ सरदार उन्हें समझाने का प्रयत्न भी करते किंतु डोगरे राजा धिआन सिंघ, गुलाब सिंघ आदि उनके इतने विश्वासपात्र बन गए कि वे महाराजा के प्यार, उनकी उदारता का नाज़ायज लाभ उठा राज्य के विध्वंशक तत्व साबित हुए। अंतिम दिनों में महाराजा रोगग्रस्त हो गए। इलाज चलता रहा पर रोग बढ़ता गया। महाराजा ने अंतिम दरबार लाहौर किले में लगाया। वहीं पर महाराजा ने सभी दरबारियों से अंतिम विदाई ली। युवराज खड़क सिंघ का हाथ राजा धिआन सिंघ डोगरा को पकड़ाकर कहा, "यह राज्य का उत्तराधिकारी है। पूरी ईमानदारी से इसका साथ निभाना।" फिर २७ जून, १८३९ ई को महाराजा परम धाम को विदा हुए। इस समय वे ५९ वर्ष के थे।

बेईमान डोगरों ने ईमानदारी क्या निभानी थी, एक-एक करके युवराज खड़ग सिंघ, कुंवर नौनिहाल सिंघ, शेर सिंघ, कशमीरा सिंघ, तारा सिंघ उत्तराधिकारियों को मरवा दिया। अंग्रेजों के साथ सांठ-गांठ कर ली। कश्मीर का राजा धिआन सिंघ डोगरा बन गया। महाराजा के सबसे छोटे सुपुत्र कुंवर दिलीप सिंघ को कुछ दिन राजा बनाकर उसे ईसाई धर्म में दीक्षित करवाया गया। राज्य अंग्रेजों ने संभाल लिया। कुंवर दिलीप सिंघ को इंग्लैंड भेज दिया गया। कुंवर दिलीप सिंघ की माता रानी ज़िंदां बड़ी दलेर एवं बहादुर थीं, जिससे डलहौज़ी भी कांपता था। वो कहता था कि रानी ज़िंदां औरत नहीं मर्द है। उसे भी नज़रबंद कर दिया गया। वह भेस बदलकर नेपाल चली गई। सिंघ शूरवीरों ने सुदृढ़ सिक्ख राज्य को बचाने की बहुत कोशिश की। कई जंग अंग्रेजों से किए परंतु जैसा कहा है "शाह मुहम्मदा इक सरकार बाझों फौजां जित्त के अंत नूं हारीआं ने।" इस प्रकार महाराजा रणजीत सिंघ का ४५ वर्ष का शक्तिशाली सिक्ख राज्य उनके बाद जल्दी ही समाप्त हो गया।



# जिसु कारणि तनु धारिआ . . .

*–डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

परमात्मा द्वारा रचित सृष्टि इतनी बहुआयामी और कौतूहलपूर्ण है कि दृष्टि भ्रमित हो जाती है। संसार का भेद पाना कठिन है। संकल्प और एकाग्रता के बिना संसार और संसार में अपनी भूमिका को जाना नहीं जा सकता। ज्ञानवान ही जीवन को सफल करता है सृष्टि और स्वयं के बारे में जानकर। ज्ञान है एक ईश्वर को पहचानना और उससे जुड़ने के लिए मन को एक करना। उसने एक ही राह बनायी है सच की। भ्रमित सोच इस राह को देख नहीं पाती, इसीलिए अपनी अलग राह तैयार करने लगती है। किसी ने धन की, किसी ने सत्ता की, किसी ने शोहरत की, किसी ने विलासिता की राह बना ली है। जो जिस राह पर चलता है उसे लगता है सभी इस राह पर चल रहे हैं। अज्ञानतावश पता नहीं चलता कि यह सब तो माया का छलावा है। इस अज्ञानता में एक जन्म तो क्या अनेकानेक जन्म व्यर्थ चले जाते हैं :

*दुबिधा दुरमति अधुली कार ॥*
*मनमुखि भरमै मझि गुबार ॥१॥*
*मनु अंधुला अंधुली मति लागै ॥*
*गुर करणी बिनु भरमु न भागै ॥१॥ रहाउ ॥*
*मनमुखि अंधुले गुरमति न भाई ॥*
*पसू भए अभिमानु न जाई ॥२॥*
*लख चउरासीह जंत उपाए ॥*
*मेरे ठाकुर भाणे सिरजि समाए ॥३॥(पन्ना ११९०)*

अज्ञानी, जिसे संसार और स्वयं के सच का नहीं पता, दृष्टिहीन की तरह है, जो प्रकाश होते हुए भी अंधेरे में भटक रहा है। दृष्टिहीन का सारा जीवन अंधेरे में भटकते हुए बीत जाता है। इसी तरह अज्ञानी अपनी अज्ञानता के कारण धन, सम्पदा, शक्ति, ऐश्वर्य को ही जीवन का सच मानकर उसके पीछे भागता रहता है और अंततः निराश ही होता है। अज्ञानी ऐसे ही जन्म लेता और मरता रहता है। एक व्यक्ति ने जीवन के कई-कई लक्ष्य बना रखे हैं। उसे धन भी चाहिए, शोहरत और ताकत भी चाहिए, परिवार और सभ्यता भी चाहिए। इससे एकाग्रता जाती रहती है। एकाग्रता के अभाव में संकल्प न पूरे होने से कुछ भी हाथ नहीं आता। सब कुछ तो मिथ्या है :

*मिथिआ तनु धनु कुटंबु सबाइआ ॥*
*मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥*
*मिथिआ राज जोबन धन माल ॥*
*मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥*
*मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥*
*मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता ॥*
*(पन्ना २६८)*

जिन सांसारिक उपलब्धियों की खातिर मनुष्य अपना पूरा जीवन दांव पर लगा देता है उन्हें गुरमति ने निरर्थक, निराधार कहा है, जो अस्थिर हैं। गुरु-विचार ने निर्णय ही कर दिया कि *"बिरथी साकत की आरजा"* अर्थात् माया-विकारों की राह पर चलने वाले का जीवन व्यर्थ है। जीवन का तो उद्देश्य ही कुछ और है। माया में रमने के लिए नहीं, माया से विरत रहकर उसे पाना है जो जीवन को सफल कर दे :

*सिमरहु एकु निरंजन सोऊ ॥*
*जा ते बिरथा जात न कोऊ ॥*

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोनः +९१९४१५९-६०५३३*

*मात गरभ महि जिनि प्रतिपारिआ ॥*
*जीउ पिंडु दे साजि सवारिआ ॥*
*सोई बिधाता खिनु खिनु जपीऐ ॥*
*जिसु सिमरत अवगुण सभि ढकीऐ ॥*
*चरण कमल उर अंतरि धारहु ॥*
*बिखिआ बन ते जीउ उधारहु ॥ (पन्ना १००४)*

गुरमति ने दो तरह की जीवन-शैलियां सामने रखीं। एक अज्ञानियों की जो माया के जाल में फंसकर जीवन व्यर्थ कर देते हैं, दूसरी उनकी जो सृजक, प्रतिपालक, लाज रखने वाले के चरण-कंवलों को मन में बसा उस एक निरंजन का ध्यान धारण करते हुए जीवन को सफल करना चाहते हैं, जिसके साथ जुड़कर एक-एक पल सिद्ध हो जाता है। जीवन के पल बहुत ही कम हैं, जिन्हें गंवा देने पर पश्चाताप ही हाथ लगता है :

*घड़ी मुहत का पाहुणा काज सवारणहारु ॥*
*माइआ कामि विआपिआ समझै नाही गावारु ॥*
*उठि चलिआ पछुताइआ परिआ वसि जंदार ॥*
*(पन्ना ४३)*

माया का आकर्षण ऐसा घना है कि मनुष्य को हाथों से फिसलते वक्त का पता ही नहीं चलता। उसे होश तब आता है जब काल अपनी दस्तक दे देता है और समय बीत जाता है। कुछ भी अपने हाथ नहीं रहता है। जो कुछ जीवन भर संचित किया, वो कुछ भी काम नहीं आता। जो काम आना है उस राह पर तो चला ही नहीं। जिससे शोभा बननी थी, ऐसा कुछ तो किया ही नहीं। बिना जल के खेती कैसी और बिना दूध के गाय कैसी ?

*किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥*
*चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥*
*धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥*
*जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥*
*हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥*
*जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥*
*स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ॥*
*प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥ (पन्ना १३३)*

माया से विरत होकर परमात्मा की राह पर चलने वाले को यह समझ आ जाती है कि जिस तरह दूध के बिना गाय, जल के बिना फसल का कोई मोल नहीं उसी तरह परमात्मा को पाये बिना जीवन में सुख नहीं। माया के सारे सुख और तन के लिए जुटाये गये सारे सुख-साधन भी व्यर्थ हैं एक उजाड़ नगर की तरह। एक सुहागिन स्त्री के पास यदि उसका पति नहीं है तो वह अन्य लोगों का क्या करे? प्रभु ही सुख-दाता है, उसके मिलाप में ही विश्राम है। यह समझ मनुष्य के जीवन की दिशा और दशा बदल देती है। गुरमुख का तो जीवन ही परमात्मा का ध्यान करने के लिए है :

*करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा ॥*
*कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले संजोगा ॥१॥*
*प्रभ बाणी सबदु सुभाखिआ ॥*
*गावहु सुणहु पड़हु नित भाई गुर पूरै तू राखिआ ॥ रहाउ ॥*
*साचा साहिबु अमिति वडाई भगति वछल दइआला ॥*
*संता की पैज रखदा आइआ आदि बिरदु प्रतिपाला ॥२॥*
*(पन्ना ६११)*

प्रभु के सिमरन से मन विकार रहित हो जाता है और तन भी मन के अनुकूल हो जाता है। परमात्मा और मनुष्य के बीच की सारी दूरियां तथा बाधाएं दूर हो जाती हैं और एकाकार होने का अवसर बनता है। परमात्मा की सद् इच्छा समझ में आने लगती है और वह परम सहायक बन जाता है। उसकी महानता और दया अनंत है। वह शरणागत पर कृपा करने वाला है। जीवन बदलता है और परमात्मा

मिलता है परमात्मा के भाव को समझने से, तन-मन को उसके अनुकूल करने से। यही तो जीवन का लक्ष्य है। यह जीवन मिलता है एकनिष्ठ होकर परमात्मा के मार्ग पर चलने के लिए। परमात्मा का भी नाम जप लें और पाप कर्म भी कर लें, ऐसा संभव नहीं है। परमात्मा जो सर्वव्यापक और सर्वशक्तिशाली है उससे कुछ भी छिपा नहीं है :

*दिनु राति कमाइअड़ो सो आइओ माथै ॥*
*जिसु पासि लुकाइदड़ो सो वेखी साथै ॥*
*संगि देखै करणहारा काइ पापु कमाईऐ ॥*
*सुक्रितु कीजै नामु लीजै नरकि मूलि न जाईऐ ॥*
*आठ पहर हरि नामु सिमरहु चलै तेरै साथे ॥*
*भजु साधसंगति सदा नानक मिटहि दोख कमाते ॥१॥*
*(पन्ना ४६१)*

मन में पाप हो और सिर परमात्मा के चरणों में हो, ऐसा नमस्कार परमात्मा स्वीकार नहीं करता। परमात्मा के मार्ग पर चलना है तो सदा उसकी दृष्टि में रहना है और सदैव उसको अपनी चेतना में रखकर शुभ कर्म करना है। मन पर जन्मों-जन्मों की मैल लगी हुई है। उसे यत्न करके उतार लें तो सारे संताप मिट जायेंगे :

*उदमु करि हरि जापणा वडभागी धनु खाटि ॥*
*संतसंगि हरि सिमरणा मलु जनम जनम की काटि ॥१॥*
*मन मेरे राम नामु जपि जापु ॥*
*मन इछे फल भुंचि तू सभु चूकै सोगु संतापु ॥रहाउ॥*
*जिसु कारणि तनु धारिआ सो प्रभु डिठा नालि ॥*
*जलि थलि महीअलि पूरिआ प्रभु आपणी नदरि निहालि ॥* *(पन्ना ४८)*

गुरमति में इस अवधारणा को स्पष्ट और दृढ़ रूप से स्थापित किया गया है कि जीव को मनुष्य देह मिली ही इसलिए है कि जीव अपने संचित पापों को धो सके और परमात्मा की कृपा पाकर उससे सारी दूरियों को मिटा सके। इसके अतिरिक्त जीवन का कोई और लक्ष्य है ही नहीं। चौरासी लाख प्रकार के जीवों की रचना में से मनुष्य योनि एक है। मनुष्य सब जीवों से श्रेष्ठ है जिसकी शारीरिक रचना अतुलनीय है। यही एक ऐसी योनि है जिसमें आकर जीव श्रेष्ठ स्तर पर विचार ग्रहण कर सकता है और उनके अनुसार कार्य भी कर सकता है, इसलिए इसे दुर्लभ जीवन कहा गया है:

*माणस जनमु दुलंभु गुरमुखि पाइआ ॥*
*मनु तनु होइ चुलंभु जे सतिगुर भाइआ ॥१॥*
*चलै जनमु सवारि वखरु सचु लै ॥*
*पति पाए दरबारि सतिगुर सबदि भै ॥१॥ रहाउ ॥*
*मनि तनि सचु सलाहि साचे मनि भाइआ ॥*
*लालि रता मनु मानिआ गुरु पूरा पाइआ ॥*
*(पन्ना ७५१)*

मनुष्य जीवन दुर्लभ है। इसे कोई गुरमुख ही जानता है, इसीलिए वो तन-मन से स्वयं को परमात्मा के अनुकूल कर लेता है, जिससे वह उमंग से भर उठता है। अपने विचार, अपने व्यवहार को परमात्मा की महानता के अनुसार बनाने से उसका जीवन संवर जाता है। वह ईश्वर के भय में रहता है। उसके मन में सदैव परमात्मा की महानता का भाव रहता है, कोई संशय नहीं रहता। अपने पूर्ण समर्पण से वह परमात्मा को पूर्ण रूप से पा लेता है अर्थात् प्रभुमय हो जाता है। उसके रंग में सराबोर हो जाता है। उसके समक्ष जीवन के सारे रहस्य उजागर हो जाते हैं :

*मरन जीवन की संका नासी ॥*
*आपन रंगि सहज परगासी ॥१॥*
*प्रगटी जोति मिटिआ अंधिआरा ॥*
*राम रतनु पाइआ करत बीचारा ॥१॥ रहाउ ॥*
*जह अनंदु दुखु दूरि पइआना ॥*
*मनु मानकु लिव ततु लुकाना ॥२॥*
*(पन्ना १३४९)*

सारी शंकाएं दूर होने के बाद ही लक्ष्य

स्पष्ट होता है और सच्ची राह दिखती है। इससे जीवन में सहजता आ जाती है। मन के एकाग्र होने से आत्मिक आनंद उत्पन्न होता है, दुख दूर हो जाते हैं। पता न हो कि राह क्या है, तो भटकना और दुख सहना ही हाथ लगेगा।

श्री गुरु नानक साहिब को (दिव्य दृष्टि से) राह पता थी, इसीलिए उन्होंने सूत का बना जनेऊ नहीं पहना, सच्चा सौदा किया और तेरा-तेरा करके सारा मोदीखाना तौल दिया। श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी और श्री गुरु रामदास जी ने भी इस राह की पहचान कर सेवा को ही अपना सौभाग्य समझा। श्री गुरु अरजन देव जी ने भी *"आपन रंगि सहज परगासी"* के चलते ही सुलही ख़ान के आने की ख़बर पर भी स्वयं को शांत और सहज रखा। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक यह विचार लोगों के लिए इतना प्रेरणादायी बन गया कि भरे दीवान में एक के बाद एक पांच सिक्ख श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की मांग पर बिना किसी संदेह के *"मरन जीवन की संका नासी"* को चरितार्थ करते हुए अपना शीश देने को तैयार हो गये। उन पांच सिक्खों को न तो धर्म-सम्पदा, पद-प्रतिष्ठा या कुछ और मिल रहा था, न ही उन्हें गुरु साहिब की मांग का कारण पता था। उन्होंने स्वयं को सतिगुरु और परमात्मा के अनुसार तन और मन भेंट कर रखा था, इसलिए उन्होंने पल भर भी देर न लगाई। वे अपना जीवन संवार कर अमर हो गये, जिनका स्मरण नित्यप्रति लाखों सिक्ख अरदास में पांच प्यारों के नाम से करते हैं।

एक गुरसिक्ख जब अरदास करता है तो सिक्खी दान, केस दान, भरोसे का दान, विवेक और बुद्धि का दान, परमात्मा के नाम का दान मांगता है; सभी के भले की प्रार्थना करता है। क्या इसके बाद मांगने को कुछ रह जाता है? फिर बहुत कुछ (दुनियावी) मांग लिया जाता है, जो पहली मांगों से मेल नहीं खाता। अपनी जोड़ी हुई मांग की सूची का अर्थ है कि हमें विश्वास नहीं है, अभी शंकाएं हैं; *"प्रगटी जोति मिटिआ अंधिआरा"* वाली स्थिति नहीं है; अभी तो *"मनु अंधुला अंधुली मति लागै"* वाली अवस्था ही है। परमात्मा की महानता से अनजान होने के कारण ही ऐसी अवस्था बनती है। गुरसिक्ख प्रभु के गुणों को जान लेता है और उस पर भरोसा करता है, तभी वह जीवन को संवार पाता है :

*तू दाना तू अबिचलु तूही तू जाति मेरी पाती ॥*
*तू अडोलु कदे डोलहि नाही ता हम कैसी ताती ॥१॥*
*एकै एकै एक तूही ॥*
*एकै एकै तू राइआ ॥* *(पन्ना ८८४)*

एक परमात्मा ही है जो अडोल है, कभी विचलित नहीं होता। परमात्मा की शरण में, जाने से श्रेष्ठता प्राप्त हो जाती है और दुख दूर हो जाते हैं। उस जैसा कोई और है ही नहीं तो शंका करना व्यर्थ है। वही दूर कर सकता है सारे दुख, इसीलिए तो उस पर विश्वास करके नाम-दान की याचना की जाती है।

*मुकते सेवे मुकता होवै ॥* *(पन्ना ११६)*

परमात्मा स्वयं मुक्त है हर प्रकार के बंधनों से, यहां तक कि काल से भी परे है। जो उसकी शरण में है वह भी मुक्त हो जायेगा। समूची गुरबाणी में बार-बार परमात्मा के गुणों के गायन की प्रेरणा दी गई है ताकि मनुष्य उसके गुणों को, उसकी श्रेष्ठता को मन में भली प्रकार से बसा ले और उस पर विश्वास की नींव को मज़बूत करता चले :

*हरि सिमरत तेरी जाइ बलाइ ॥*
*सरब कलिआण वसै मनि आइ ॥१॥*
*भजु मन मेरे एको नाम ॥*
*जीअ तेरे कै आवै काम ॥१॥ रहाउ ॥*
*रैणि दिनसु गुण गाउ अनंता ॥*
*गुर पूरे का निरमल मंता ॥२॥*
*छोडि उपाव एक टेक राखु ॥*

*महा पदारथु अंम्रित रसु चाखु ॥ (पन्ना १९३)*

प्रभु के नाम का सिमरन करते-करते ही दुख दूर हो जाते हैं और गुरसिक्ख का हित होता है। परमात्मा के अनंत गुणों का गायन दिन-रात अर्थात् सदैव करते रहना चाहिए और परमात्मा की ही कृपा की आकांक्षा करनी चाहिए जिससे जीवन सफल होता है।

गुरमति ने मनुष्य जीवन को परमात्मा से मिलन का अवसर बताया तो इसमें कोई पलायनवाद नहीं था। संसार में रहकर, परिवार के बीच परमात्मा से जुड़ने की अनूठी राह दिखाई गुरु साहिबान ने। परमात्मा के अनुकूल अपने विचारों और व्यवहार को ढालकर परमात्मा के भय में रहकर जीवन व्यतीत करने के लिए न तो परिवार को त्यागने की आवश्यकता थी, न सांसारिकता से अलग होने की। आवश्यकता थी तो अपनी राह, अपने जीवन के मंतव्य को समझने की। इसे साक्षात करके दिखाया गुरु साहिबान ने जो परमात्मा-स्वरूप थे, किंतु उनके व्यवहारिक मानदंड नितांत मानवीय थे। उन्होंने सिखाया कि कैसे सदैव अपनी चेतना में परमात्मा को रखकर दिन-रात उसके साथ जुड़े रहा जा सकता है और उसके गुणों को अपनाकर, परमात्मा में लीन हुआ जा सकता है। ❁

## *स्वाभिमानी शूरवीर योद्धा भाई बाज़ सिंघ*

*(पृष्ठ ४३ का शेष)*

का लोहा मनवाया। जब बाबा बंदा सिंघ बहादुर को बंदी बना लिया गया था, उस समय उनके साथ भाई बाज़ सिंघ सहित अनेक सिंघों को भी कैद कर लिया गया था। इतिहास साक्षी है कि कैद किए गए सिक्खों का कत्लेआम शुरू हो गया। यातनाएं दे-देकर सिंघों को शहीद किया जाने लगा। बादशाह फरुख्सियर ने हथकड़ियों व बेड़ियों में जकड़े सिंघों को अपने पास बुलवाया तथा कहा, "मुझे पता चला है कि तुम लोगों के बीच (भाई) बाज़ सिंघ नामक एक सिक्ख है, जो बहुत बहादुर है और जिस पर उसके गुरु की खास मेहर है।"

यह सुनते ही भाई बाज़ सिंघ ने तुरंत कहा, "मेरा नाम बाज़ सिंघ है। मैं अपने गुरु जी का एक अदना-सा सेवक हूं।"

बादशाह ने व्यंग्यपूर्वक कहा, "तुम खुद को बहुत बहादुर समझते हो, मगर अब तुमसे कुछ नहीं हो सकता।"

भाई बाज़ सिंघ ने ऊंची आवाज़ में बादशाह को ललकारते हुए कहा, "अगर तुम मेरी बेड़ियां खुलवा दो तो मैं बहुत कुछ कर सकता हूं।"

हकूमत के नशे में अंधे व चूर हो चुके बादशाह ने भाई बाज़ सिंघ की बेड़ियां खोलने का हुक्म दे दिया। जैसे ही उनकी कुछ बेड़ियां खोली गईं उसी समय भाई बाज़ सिंघ ने अपनी हथकड़ियों के वार से अपने नज़दीक खड़े दो-तीन मुगल सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। फिर एक सैनिक की तलवार छीनकर एक उच्चाधिकारी पर हमला कर उसे मारने की कोशिश की। यह देख बहुत-से मुगल सैनिकों ने एक साथ भाई बाज़ सिंघ पर हमला कर दिया और उन्हें शहीद कर दिया।

महान सिक्ख योद्धा भाई बाज़ सिंघ के तीन भाइयों-- भाई राम सिंघ, भाई शाम सिंघ तथा भाई सुक्खा सिंघ ने भी धर्म, सत्य, न्याय एवं मानवता के कल्याण हेतु कुर्बानियां दीं।

९ जून, सन् १७१६ ई को स्वाभिमानी शूरवीर सिक्ख योद्धा भाई बाज़ सिंघ को बाबा बंदा सिंघ बहादुर व उनके सुपुत्र बाबा अजै सिंघ तथा चुनिंदा सिक्ख जरनैलों के साथ दिल्ली स्थित कुतुबमीनार के पास ख्वाज़ा कुतुबुद्दीन काकी के रोज़े के निकट शहीद किया गया था। ❁

*गुरबाणी चिंतनधारा : १०१*

# आसा की वार : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

*सलोक मः १ ॥*
*घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कंन्ह गोपाल ॥*
*गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार ॥*
*सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ॥*
*नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जमकालु ॥१॥*
*(पन्ना ४६५)*

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित सलोक में गुरु पातशाह ने समझाया है कि सारी धरती जीवन रूपी रंग मंच है जिस पर समय एवं पात्रतानुसार सभी जीव एवं प्रकृति के तत्व अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं। इस रंग मंच पर स्थायी कुछ भी नहीं है लेकिन संसारी लोग वास्तविकता को न पहचानते हुए अपना-अपना राग अलाप रहे हैं। समय रूपी काल उन्हें खा जाता है और दैवीय मंच निरंतर चलता रहता है।

इस सलोक की विचार व्याख्या से पूर्व यह स्पष्ट कर लें कि घड़ी और पहर से क्या तात्पर्य हैं। 'घड़ी' अर्थात् २४ मिनट के बराबर का समय तथा पहर लगभग ३ घंटे का समय। इस प्रकार दिन-रात में ८ पहर होते हैं अर्थात् २४ घंटे। गुरबाणी में आठ पहर अर्थात् दिन-रात प्रभु की बंदगी के लिए जीव को प्रेरित किया गया है।

इस सलोक में गुरु पातशाह ने जीवन की हकीकत से रूबरू करवाया है कि प्रकृति की स्टेज (रंग मंच) पर समय के नाटकीय पात्रों द्वारा लीला हो रही है। गुरु पातशाह श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि समस्त घड़ियां मानों गोपियां हैं। दिन के सारे पहर मानों कृष्ण (गोपाल) हैं। हवा, पानी तथा आग आभूषण (गहनें) हैं। सूर्य तथा चंद्रमा मानों दो अवतार हैं, जिनके स्वांग किए जाते हैं। सम्पूर्ण धरती नृत्य-स्थली है तथा सारे संसार के धंधे (सांसारिक प्रपंच) दुनियावी व्यवहार हैं। सारा जगत ज्ञान के बिना व्यर्थ के आडंबरों (फोकट कर्मों) में लग कर ठगा जा रहा है अर्थात् छला जा रहा है। नाम-सिमरन के बिना भटके हुए लोग आखिर यम (काल) का ग्रास बन रहे हैं अर्थात् काल ग्रस्त हो रहे हैं।

उपरोक्त सलोक में मिथ्या संसार के मिथ्या नाटक-चेटकों में उलझे हुए जीवों को समझाया गया है कि सारी धरती एक मंच (रंग-भूमि) की तरह है। लीला करने वाले सभी पात्रों ने वायु, जल, अग्नि जैसे तत्वों से बने गहने पहन रखे हैं। इन सुंदर-सुंदर पदार्थों रूपी आभूषणों को देख कर सारा संसार छला जा रहा है, जिसके फलस्वरूप उन्हें अपने जीवन मनोरथ की सूझ नहीं रह जाती और इन्हीं प्रपंचों में लगे लोग आखिर काल ग्रस्त हो जाते हैं। झूठी मस्ती के आलम में अपने जीवन के प्रमुख उद्देश्य से भटके जीवों के पास पश्चाताप ही शेष रह जाता है।

गुरबाणी में अनेक स्थानों पर संसार की नश्वरता का ज़िक्र आया है और जीव को उसके जीवन-मनोरथ के लिए समझाया गया है। भक्त कबीर जी के अनुसार :

*दिन ते पहर पहर ते घरीआं आव घटै तनु छीजै ॥*
*कालु अहेरी फिरै बधिक जिउ कहहु कवन बिधि*

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

*कीजै ॥१॥ . .*
*कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा ॥*
*केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरनां ॥*
*(पन्ना ६९२)*

झूठे रंग-तमाशों में मोहित होकर ईश्वर को विस्मृत करने वाले जीवों को ज्ञानहीन मानते हुए गुरु जी ने उन्हें झूठे प्रपंचों से सुचेत रहने और सदा स्थिर परमेश्वर की बंदगी करने के लिए प्रेरित किया है।

*मः १ ॥*
*वाइनि चेले नचनि गुर ॥*
*पैर हलाइनि फेरन्हि सिर ॥*
*उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥*
*वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥*
*रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥*
*आपु पछाड़हि धरती नालि ॥*
*गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥*
*गावनि सीता राजे राम ॥*
*निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥*
*जा का कीआ सगल जहानु ॥*
*सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥*
*भिंनी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥*
*सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥*
*नदरी करमि लघाए पारि ॥*
*कोलू चरखा चकी चकु ॥*
*थल वारोले बहुतु अनंतु ॥*
*लाटू माधाणीआ अनगाह ॥*
*पंखी भउदीआ लैनि न साह ॥*
*सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ॥*
*नानक भउदिआ गणत न अंत ॥*
*बंधन बंधि भवाए सोइ ॥*
*पइऐ किरति नचै सभु कोइ ॥*
*नचि नचि हसहि चलहि से रोइ ॥*
*उडि न जाही सिध न होहि ॥*
*नचणु कुदणु मन का चाउ ॥*
*नानक जिन्हा मनि भउ तिन्हा मनि भाउ ॥२॥*
*(पन्ना ४६५)*

पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित इस सलोक में भी यह बताया गया है कि बाहर के क्रिया-कलापों से ईश्वर प्रसन्न होने वाला नहीं है। इस तथ्य को अनेक उदाहरणों द्वारा समझाया गया है और अंत में यह उजागर किया गया है कि भय के बिना भक्ति नहीं हो सकती। प्रेमाभक्ति की दृढ़ता के लिए भय और अदब लाज़मी हैं क्योंकि भय एवं अदब के बिना प्रेम पैदा नहीं हो सकता और प्रेम के बिना प्रभु-प्राप्ति नामुमकिन है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि इस लीला में होता यह है कि चेले साज (वाद्य-यंत्र) बजाते हैं तथा उनके (कथित) गुरु नृत्य करते हैं, पैर हिलाते हैं, सिर घुमाते हैं। इस प्रक्रिया के दौरान उनके पैरों से धूल उड़-उड़कर उनके सिर में पड़ती है। दर्शक (लीला देखने वाले लोग) उन्हें यह सब करते हुए देखते हैं और हंसते हैं। पर वे (इस प्रकार की क्रियाएं करने वाले) रोज़ी की खातिर नाचते हैं और स्वयं को भूमि पर पटकते हैं। गोपियों, श्री कृष्ण, सीता, श्री रामचंद्र और अन्य राजाओं के स्वांग बनाकर गाते हैं। जिस परमेश्वर ने सारा संसार बनाया है अर्थात् सारे जगत की जिस प्रभु ने रचना की हुई है, जो निर्भय स्वरूप है, आकार रहित है तथा जिसका नाम सत्य स्वरूप एवं अटल रहने वाला है, ऐसे परमेश्वर को केवल वही सेवक सिमरते हैं जिनके अंदर अकाल पुरख की रहमत से चढ़दी कला है अर्थात् जिनका आत्मिक जीवन श्रेष्ठ है। जिनके हृदय में नाम-सिमरन करने का चाव है, ऐसे गुणों वाले इंसान की ज़िंदगी रूपी रात्रि आनंद एवं सुकून भरपूर व्यतीत होती है। रहमतों के सागर दयालु प्रभु ऐसे जीवों को अपनी रहमत

द्वारा संसार रूपी भवसागर से पार लगा देते हैं। गुरु साहिब कलयुगी जीवों का मार्गदर्शन करते हैं कि सांसारिक प्रपंचों द्वारा जीव का उद्धार नहीं हो सकता। बेअंत पदार्थ एवं जीव सदा ही भ्रमणशील रहते हैं अर्थात् घूमते रहते हैं, (जैसे) कोल्हू, चरखा, चक्की, कुम्हार का चक्का मरूस्थलों के भारी बवंडर, अन्य उपकरण, लट्टू, मथनियां (दही बिलोने का उपकरण), पक्षी, जो उड़ते हुए सांस तक नहीं लेते, लोहे की सलाखों पर चढ़ाकर घुमाए जाने वाले अनेक उपकरण (जिनके घूमने की प्रक्रिया चलती ही रहती है)। गुरु पातशाह के चिंतनानुसार इन वस्तुओं की कोई गिनती नहीं हो सकती अर्थात् इनका अंत नहीं पाया जा सकता। इसी प्रकार माया के बंधनों में बांधकर परमेश्वर अनेक जीवों को घुमाता है तथा प्रत्येक जीव अपने किए कर्मों के अनुसार अर्थात् कर्मों के संस्कारों के फलस्वरूप नाच रहा है। (लेकिन) जो जीव माया के नाच में नाच-नाचकर हंसते हैं वे अंत में यहां से रोते हुए चले जाते हैं। (क्योंकि) नाचने-कूदने से जीव ऊंची आत्मिक अवस्था को प्राप्त नहीं हो सकते और न ही इस तरह आत्मिक तौर पर बलशाली अथवा योगी बन सकते हैं। वास्तविक तथ्य यह है कि नाचना-कूदना केवल मन बहलाने का साधन-मात्र है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि प्रभु का सच्चा प्रेम केवल उनके मन में है जिनके मन में प्रभु का भय तथा प्रेम है।

गुरबाणी में सर्वत्र बाहरी आडंबरों, कर्मकांडों का पूर्णतया निषेध किया गया है। इन दिखावे के प्रपंचों से जीव का तनिक भी सुधार अथवा उद्धार नहीं होने वाला और न ही बाहरी क्रिया-कलापों एवं श्रद्धाविहीन कर्मों से प्रभु प्रसन्न होने वाला है। गुरबाणी में समझाया गया है कि प्रभु सहज स्वभाव भोले भाव से ही मिलता है। भक्त कबीर जी की बाणी में फरमान है :

*किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥*
*जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥१॥*
*रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥*
*चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ . .*
*कहु कबीर भगति करि पाइआ ॥*
*भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥* *(पन्ना ३२४)*

'आसा की वार' बाणी के उपरोक्त सलोक में एक तथ्य और भी उजागर किया गया है जैसा कि गुरु साहिब उच्चारण करते हैं-- *"सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥ नदरी करमि लघाए पारि ॥"* अर्थात् आत्म-रस की शिक्षा जिन्हें सतिगुरु के चिंतन द्वारा प्राप्त हुई है, उसके फलस्वरूप वाहिगुरु की कृपा-दृष्टि एवं रहमत से भवसागर से पार उतरा जा सकता है। जो आत्म-रस गुरु-कृपा से प्राप्त हुआ उससे तो निश्चित तौर पर जीव भावसागर से पार उतर जायेगा, लेकिन विचारणीय तथ्य यह है कि बिना आत्मिक रस एवं ज्ञान के समस्त कलाएं निर्जीव हैं जैसे कि भाव रहित मशीन का निरंतर चलना। आज वैज्ञानिक प्रगति के फलस्वरूप बेशक इस मशीनी युग से हर कार्य मुमकिन होता जा रहा है लेकिन सच्ची खुशी, आत्मिक शांति एवं सुकून के लिए भावों का, आत्म-रस का होना उतना ही ज़रूरी है, जितना कि शरीर में प्राणों का होना, नेत्रों में ज्योति का होना।

*पउड़ी ॥*
*नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥*
*जीउ पिंडु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥*
*जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ ॥*
*जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥*
*को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥५॥* *(पन्ना ४६५)*

उपरोक्त पउड़ी में गुरु नानक पातशाह ने जीवन के पांच रहस्यों को समझाया है। अगर जीव इस पर गहराई से विचार करे तो मौत

एवं परमेश्वर को याद रखता हुआ वह अपने जीवन-मकसद में सफल होकर परमेश्वर में अभेद हो जाए।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर निराकार है अर्थात् उसका कोई आकार नहीं है। परमेश्वर का नाम जपने से नरक में नहीं जाना पड़ता। यह जीवन (प्राण एवं शरीर) सब कुछ प्रभु का बख़्शा हुआ है। परमेश्वर जीवों को खाने हेतु भोजन-सामग्री देता है। कितना देता है, इसका अंदाज़ा लगाना व्यर्थ प्रयत्न करने सदृश्य है। आगे गुरु पातशाह जीव को यह समझा रहे हैं कि हे जीव! अगर तू अपना भला चाहता है तो नेक कर्म करके भी स्वयं को तुच्छ ही जान। (क्योंकि नेक कर्म करने की समझ और सामर्थ्य तुझे प्रभु ने ही बख़्शी है, अत: तू अपने द्वारा किए गए नेक कर्मों का मान मत कर।) स्वयं को निम्न ही समझ और कहलवा। अगर कोई जीव बुढ़ापे को दूर करना चाहे तो यह कोशिश भी बेकार है, क्योंकि वह (बुढ़ापा) प्रकट हो ही जाता है। जब श्वासों की पूंजी खत्म हो जाती है तो कोई जीव यहां रह नहीं सकता अर्थात् तब मौत निश्चित है। परमेश्वर निराकार है। इस भाव के दर्शन बाणी में बहुतायता से होते है। पंचम पातशाह सुखमनी साहिब में भी यही भाव दृढ़ करवाते हैं :

*रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥*
*(पन्ना २८३)*

जापु साहिब बाणी की प्रारंभता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसी भाव को लक्षित करके की है :

*चक्क्र चिहन अरु बरन जाति अरु पाति नहिन जिह ॥*
*रूप रंग अरु रेख भेख कोऊ कहि न सकत किह ॥*

गुरबाणी में निराकार प्रभु का सिमरन करने हेतु जीव को प्रेरित किया गया है। 'आसा की वार' बाणी के सलोक में दर्ज यह पावन पंक्ति-- *"जीउ पिंडु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥"* में गूढ़ अर्थ को विविध विद्वानों ने अपने चिंतनानुसार अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। विशेष तौर पर *"दे खाजै आखि गवाईऐ ॥"* का अर्थ प्रो साहिब सिंघ ने इस प्रकार किया है-- "प्रभु जीव को जो खाद्य पदार्थ देता है, कितना देता है इसका अंदाज़ा लगाना व्यर्थ यत्न है।" डॉ जोध सिंघ श्री गुरु ग्रंथ साहिब (मूल पाठ एवं हिंदी अनुवाद) में इस पंक्ति का अर्थ इस प्रकार करते हैं-- "जो भी पास में है उसे बांट कर खाना चाहिए तथा किसी को देते समय कुछ कहना भी नहीं चाहिए, क्योंकि देकर जताने से दिए हुए का प्रभाव गंवा लिया जाता है।" महंत तीरथ सिंघ 'सेवा पंथी' 'आसा की वार सटीक' में लिखते हैं-- "सब कुछ वाहिगुरु का समझ कर, मिल-बांट कर खाना चाहिए। दान देना और फिर देकर अहंकार करना कि मैंने दिया है, तो दान किया निष्फल हो जाता है।"

गुरबाणी में इस संदर्भ में अनेकों फरमान उपलब्ध हैं। भक्त रविदास जी के अनुसार :

*तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥* *(पन्ना ६९४)*

भक्त कबीर जी की बाणी में भी इसी भाव के दर्शन होते हैं :

*कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा ॥*
*तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा ॥*
*(पन्ना १३७५)*

जो अपना अहंकार दरकिनार करके परमेश्वर की शरण का आसरा लेकर जीवन-निर्वाह करते हैं और अपनी प्रत्येक प्राप्ति एवं गुण को प्रभु की बख़्शिश मान कर प्रभु का शुक्राना करते हैं, उन्हीं का जीवन सफल समझो। ❁

## ख़बरनामा

### गुरबाणी में आए मिथिहासिक हवाले : अर्थ एवं प्रासंगिकता विषय पर चंडीगढ़ में लेक्चर सम्मेलन हुआ

श्री अमृतसर : २८ अप्रैल : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा संचालित 'सिक्ख स्रोत, ऐतिहासिक ग्रंथ संपादना प्रोजेक्ट' द्वारा चौंतीसवां लेक्चर सम्मेलन 'गुरबाणी में आए मिथिहासिक हवाले : अर्थ एवं प्रासंगिकता' विषय पर चंडीगढ़ के कलगीधर निवास के मीटिंग हाल में करवाया गया। लेक्चर की आरंभता से पूर्व श्री गुरु ग्रंथ साहिब विद्या केंद्र के विद्यार्थियों ने शबद-कीर्तन किया।

सम्मेलन में अध्यक्ष के रूप में लेक्चर देते हुए गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर के भूतपूर्व उप-कुलपति डॉ. एस. पी. सिंघ ने कहा कि गुरबाणी में आई मिथों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सोच के केंद्रीय धुरे के अनुसार व्याख्यायित करके समझा एवं प्रयोग किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि मिथिहास को समझने के लिए इतिहास से अलग ढंग अपनाना चाहिए और किसी भी मिथ को उसके प्रसंग से बाहर करके नहीं देखा जा सकता। उन्होंने कहा कि मिथों की पुनः व्याख्या करने की आवश्यकता है ताकि वर्तमान मनुष्य की चेतना को प्रभावित किया जा सके।

मुख्य वक्ता डॉ. कुलवंत सिंघ, भूतपूर्व प्रोफेसर, खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर ने कहा कि शायद धर्म मिथों में से पैदा हुआ है और धर्मों में मिथें प्रतीक एवं बिंब के रूप में इस्तेमाल की गयी हैं। इनको खारिज़ नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि मिथों के सही अर्थ एवं उचित व्याख्या करनी पड़ेगी तभी अच्छे परिणाम पर पहुंचा जा सकेगा।

संपादना प्रोजेक्ट के डायरेक्टर डॉ. किरपाल सिंघ का लिखित स्वागती भाषण स. शाम सिंघ ने पढ़कर सुनाया, जिसमें उन्होंने कहा कि गुरमति के गूढ़ रहस्यों को समझाने के लिए गुरबाणी में मिथों की उदाहरणें दी गई हैं।

इस अवसर पर स. मनजीत सिंघ सचिव, डॉ. एस. पी. सिंघ तथा अन्य विद्वान मेहमानों ने पुस्तक 'जीवन बिरतांत श्री गुरु हरिराय साहिब भाग-दो' को रिलीज़ किया। इस अवसर पर डॉ. किरपाल सिंघ द्वारा सिक्ख इतिहास में दिए गए योगदान तथा उनके जीवन पर आधारित धर्म प्रचार कमेटी द्वारा तैयार की गई डाक्यूमेंटरी फिल्म भी दिखाई गई ताकि सम्मेलन में आए श्रोतागण उनके जीवन से प्रेरणा ले सकें।

इस सम्मेलन में भाई अशोक सिंघ बागड़िया, डॉ. गुरवीर सिंघ, प्रिं. सतनाम सिंघ, प्रिं. प्रभजोत कौर तथा प्रिं. गुरदीप सिंघ ने भी विचार रखे। श्रोतागण द्वारा पूछे गए प्रश्नों के तसल्लीबख़्श उत्तर दिए गए। डॉ. चमकौर सिंघ ने मंच-संचालन किया तथा स. सुखमिंदर सिंघ गज्जणवाला ने आए हुए मेहमानों एवं श्रोताओं का धन्यवाद किया।

### स. भगत सिंघ को आतंकवादी कहने वाली पुस्तक का लेखक व प्रकाशक देशवासियों से माफी मांगे : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : २९ अप्रैल : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक

कमेटी ने दिल्ली यूनीवर्सिटी की पुस्तक 'भारत का स्वतंत्रता संघर्ष' में स. भगत सिंघ को आतंकवादी बताये जाने की कड़े शब्दों में निंदा की। उन्होंने कहा कि दिल्ली यूनीवर्सिटी द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक के अध्याय २० में स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों को जगह-जगह पर आतंकवादी लिखा जाना बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण घटना है।

उन्होंने कहा कि स. भगत सिंघ तथा उनके साथी देश की स्वतंत्रता हेतु फांसी के फंदे पर झूलकर अपनी जान कुर्बान कर गए, किंतु अफसोस कि १९९० ई से प्रकाशित हो रही इस पुस्तक को पढ़ने वाले विद्यार्थियों को गलत पाठ पढ़ा कर गुमराह किया जा रहा है तथा देश पर से जानें कुर्बान करने वाले महान स्वतंत्रता सेनानियों को आतंकवादी कहकर उनका घोर अपमान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक के लेखक तथा प्रकाशक को देशवासियों से माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्रीमती स्मृति इरानी को अपील करते हुए कहा कि वे इस पूरे मामले की जांच करवाकर आवश्यक कानूनी कार्यवाही करें।

उन्होंने कहा कि ऐसी पुस्तकें, जो पाठकों को गुमराह करती हैं, उन पर सरकार फौरन अंकुश लगाए। उन्होंने कहा कि ऐसी पुस्तकें फौरन ज़ब्त कर इनके लेखकों तथा प्रकाशकों के विरुद्ध सख़्त कार्यवाही करनी चाहिए।

## जत्थेदार अवतार सिंघ ने दिल्ली सरकार द्वारा पंजाबी भाषा को बंद करने के फैसले का सख़्त नोटिस लिया

श्री अमृतसर : ७ मई : दिल्ली सरकार द्वारा पंजाबी, उर्दू तथा संस्कृत भाषा को बंद किए जाने वाले फैसले का सख़्त नोटिस लेते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इसे निंदनीय करार दिया है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल द्वारा पंजाबी भाषा को खत्म करने का फैसला अल्पसंख्यकों की भावनाओं पर हमला है, जो कदाचित बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार पंजाबी को दूसरी भाषा का दर्जा देने वाले उस कानून को वापिस नहीं ले सकती जो देश की संसद में पास हुआ हो। उन्होंने कहा कि कनाडा में पंजाबी भाषा को तीसरी भाषा का दर्जा दिया गया है जबकि अपने देश की राजधानी में पंजाबी भाषा के साथ सौतेली मां वाला व्यवहार किया जा रहा है, जो कि अति निंदनीय है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि दिल्ली सकार को चाहिए कि दिल्ली के जिन स्कूलों में पंजाबी भाषा पढ़ाने वाले अध्यापक नहीं हैं वहां पर अध्यापकों की नियुक्ति की जाए। उन्होंने श्री अरविंद केजरीवाल को अपने इस फैसले को तुरंत वापिस लेने की मांग की है ताकि राजधानी दिल्ली में पंजाबी भाषा का मान-सम्मान बरक़रार रह सके। 

*प्रिंटर व पब्लिशर स. दिलजीत सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : **01-06-2016***